# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-ग्रंथों के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं उनकी नामावलि।

## पद्यात्मक रचनाएं –

१ कान्हडदे प्रबन्ध कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ।
२ गोराबादल-पदमिणी चउपई कर्ता कवि हेमरतन।
३ वसन्तविलास–फागु काव्य।
४ कूर्मवंशयशप्रकाश अपर नाम लावारासा कर्ता चारण कवि गोपालदान
५ क्यामखां रासा – कर्ता मुस्लिम कवि जान।

## गद्यात्मक रचनाएं –

६ बांकीदासरी ख्यात।
७ मुंहता नैणसीरी ख्यात।
८ राठोड़ वंसरी [illegible]।
९ खींची गंगेव नींबावतरो दोपहरो, राजान राउतरी वात वणाव आदि।
१० हाडाला एकलगिडरी वात।

## छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर।
पुरातन राजस्थानी पद्य संग्रह।
[illegible] कवि केसवदास कृत।
रणमल्लछन्द कवि श्रीधरव्यास कृत।
जलाल बूबनारी वात।
कुतबदी साहजादेरी वात।
[illegible] पवाडेरी माला
वैताल पचीसीरी वात। इत्यादि इत्यादि।

चारण कविया गोपालदान विरचित

# कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

# लावा रासा

विस्तृत भूमिका एवं टिप्पणीआदिसे समलंकृत

संपादन कर्ता

## महताब चन्द्रजी खारेड

प्रकाशन कर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

## संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर, (राजस्थान)

[ प्रथमावृत्ति प्रति सं० ७५ ]

विक्रमाब्द २०१० ] मूल्य ३.७५ [ ख्रिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—जी एच यमन, एसोसिएटेड ए एण्ड प्रि लि., ५ ५ आर्थर रोड बम्बई ७

# लावारासा - अनुक्रमणिका



**
*

# किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'में प्राचीन राजस्थानी एवं हिन्दीके जिन कतिपय ग्रन्थोंके प्रकाशन करनेका निश्चय पिछले वर्षके प्रारंभमें किया गया था उनमेंका प्रस्तुत ग्रन्थ चारण कविया गोपालदान विरचित कूर्मवंशयशप्रकाश अपरनाम लावारासा भी एक है जो अब इस प्रकार सुसंपादित और संमुद्रित होकर, प्रथम बार प्रकाशमें आ रहा है और विद्वानोंके कर कमलमें उपस्थित हो रहा है।

जिस समय प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनकर्ता श्री महताबचन्द्रजी खारैडसे इस कृतिके विषयमें कुछ परिचय मिला और इनकी की हुई प्रतिलिपि देखनेमें आई, उस समय यह ज्ञात नहीं हुआ था कि इस ग्रन्थकी और भी प्रतियां कहींसे उपलब्ध हो सकती हैं। खारैडजीने जिस मूल प्रति परसे अपनी प्रतिलिपि की थी वह प्रति भी मुझे प्रत्यक्ष देखनेको नहीं मिली। अत जैसी प्रतिलिपि खारैडजीकी थी उसीको छपनेके लिये प्रेसमें भेज दी गई। प्रेसने ग्रन्थका आधेसे अधिक भाग एकसाथ कंपोज करके भेज दिया और उसका संशोधन वगैरह होकर उतना भाग छप गया तब फिर प्रेसने बाकीका भाग भी एकसाथ कंपोज करके करेक्शनके लिये भेजा। उस समय अकस्मात् भगतपुरा (बूंदी) के निवासी उत्साही राजपूत युवक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत द्वारा ज्ञात हुआ कि इस ग्रन्थकी दो-एक प्रतियां तो उनके निजके पासमें हैं और कुछ अन्य प्रतियां अन्य सज्जनोंके पास भी उनने देखी हैं इत्यादि। प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकी हमारी अपनी शैली है कि प्रकाशनके लिये जो ग्रन्थ तैयार किया जाय उसकी जितनी भी प्राचीन प्रतियां ज्ञात या उपलब्ध हो सकती हों उन्हें प्राप्त करना देखना एवं उनका परस्पर मिलान करना और फिर उनके आधार पर उसका यथायथ शुद्ध पाठ तैयार करके उसे प्रेसमें छपनेके लिये भेजना। लेकिन प्रस्तुत कृतिके विषयमें हम अपनी इस शास्त्रीय संपादन शैलीका प्रयोग नहीं कर सके। क्यों कि जिन अन्य प्रतियोंके अस्तित्वका जब हमें परिचय मिला तब तो इसके पाठका मुद्रण कार्य प्राय समाप्त होने पर था। इसलिये इस ग्रन्थका प्रस्तुत प्रकाशन केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर किया जा रहा है और इससे इसमें शब्द, वाक्य पंक्ति आदिकी दृष्टिसे कई प्रकारकी अशुद्धियोंका होना अनिवार्य है। यदि भविष्यमें इसके पुनर्मुद्रणका प्रसंग उपस्थित हुआ तो उपलब्ध अन्यान्य प्रतियोंका मिलान कर, उन परसे एक विश्लेषणात्मक और अनुसन्धानात्मक आवृत्ति–जिसे इंग्लीशमें क्रिटिकल एडिशन कहते हैं–तैयार होनी चाहिये।

श्रीयुत सौभाग्यसिंहजी शेखावत हमें सूचित करते हैं कि–

लावारासा की मेरे पास ३–४ प्रतियां हैं। एक तो मैंने हाजिर कर ही दी थी १ प्रतिया और है। ये प्रतियां मुझे विभिन्न व्यक्तियोंसे उपलब्ध हुई हैं। इनमेंसे (१) एक प्रति तो मेरे प्रपितामहके पास ही थी जो कि ठिकाना चूरूमें कामदार थे। (२) दूसरी कुमार श्री देवीसिंहजी मंडावावालोंसे मिली है। (३) तीसरी गुमानजी मिश्रसे प्राप्त दुलचासरकी वकमी

बारैठ प्रभुदानजी कवीश्वरसे मिली है। कहते हैं कि यह प्रति गोपालदानजीकी हस्तलिखित प्रतिसे अनुकृत हुई है जो सबसे अच्छी है और मेरी प्रतिसे अधिक मिलती है। इनके सिवाय ठाकुर बहादुरसिंह मानूड़ा (बूड़) के पास भी एक प्रति है जो पहली और तीसरी प्रतिसे मिलती है। इनके अतिरिक्त कल्याणदानजी मानदानजी कविया बीपपुरा सीकर ठाकुर किशनसिंहजी परस रामपुरा (उदयपुरवाटी) एवं रावराजा सरदारसिंहजी उनियाराके पास भी इसकी प्रतियां हैं। यद्यपि जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है प्रस्तुत आवृत्ति केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर संपादित हुई है अतः इसमें पाठभेद पंक्तिभेद छन्दभेद आदि स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होंगे – तथापि इसके संपादक श्री सारस्वतजीने इसे यथासंभव शुद्ध रूपमें तैयार करनेका यथेष्ट श्रम किया है और मूलके नीचे कठिन एवं अल्पपरिचित शब्दोंका अर्थ आदि देकर ग्रन्थके समझने समझानेका यथोचित प्रयत्न किया है। साथ ही में अच्छी विस्तृत भूमिका लिख कर ग्रन्थगत इतिहासका भी स्पष्ट दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया है उससे ग्रन्थके अध्ययनकी उपयोगिता अधिक सिद्ध होगी।

सर्वोदय साधना आश्रम
चंदेरिया (मेवाड़)
दि १०–६–५९

जिनविजय मुनि

# भूमिका

वीरभूमि राजस्थान अपनी अमर वीर संतानोंकी वीरता त्याग एवं उदारताके लिये जगप्रसिद्ध है। इसके सपूतोंकी गौरव-गाथायें गा कर अनेक महाकवि अपने यशको अक्षुण्ण बना गये हैं। इन महाकवियोंने अपनी रचनाएं राजस्थानकी प्रसिद्ध काव्यभाषा डिंगलमें की हैं। कहना नहीं होगा कि यह काव्यभाषा वीर-रसके व्यंजित करनेमें अन्य भाषाओंसे अपना स्थान कुछ ऊंचा रखती है, किन्तु यह भी बात नहीं है कि इस भाषामें अन्य रस उत्तमतासे व्यंजित ही नहीं हुए हों। इस भाषामें करुण शृंगार और शांत रस भी बहुत सुंदरतासे व्यंजित किये गये हैं, जिनका अनूठापन चित्तको बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानकी वीर गाथाओंको गाने वाले इन महाकवियोंमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो स्वयं युद्धक्षेत्रमें अपनी वाणी और भुजाओं दोनोंका चमत्कार बताते थे जिनके रचित ग्रंथोंका उपयोग इतिहासकारोंने अपने इतिहासग्रंथोंमें किया है। इन महाकवियोंका उद्देश्य अपने आश्रयदाताओंका अत्युक्तिपूर्ण यशोगान ही नहीं था वरन् ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करना भी था। ऐसे ही कवि-शिरोमणियोंमें कविया गोपाल जी थे जिनके रचित 'कूर्मवंशयशप्रकाश' अर्थात् 'लावारासा' में दोनों उद्देश्योंका सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक अर्थात् कूर्मवंशयशप्रकाश (लावारासा) स्व. पुरोहित हरिनारायणजी बी. ए., विद्याभूषणको किसी राजपूत सज्जनसे प्राप्त हुई थी जिनका विचार इसे प्रकाशित करा देनेका था। श्रद्धेय पुरोहितजीने यह पुस्तक सम्पादन करनेको मुझे दी। सम्पादन और टिप्पणियोंका कार्य सन् १९३७ ई. के आसपास ही समाप्त हो चुका था। भूमिकार्थ देनेके लिये ऐतिहासिक-सामग्री एकत्रित की जा रही थी इधर महासमर आरंभ हो जानेसे कागज दुष्प्राप्य हो गया। सुतराम् इस पुस्तकका प्रकाशन-कार्य रुक गया। संवत् २ २ वि में पुरोहितजी साहबके निधनसे भूमिकामें जो कुछ उनके विचार लिखे जानेको थे वह उन्हींके साथ चले गये। अब भूमिकाका भार भी मेरे ऊपर ही आ पड़ा। मेरे लिये यह कार्य बिलकुल नवीनतम ही रहा। पुरोहितजी भूमिकामें क्या-क्या देना चाहते थे यह मुझे इस विषयमें उनसे हुई बातचीतसे मालूम हो गया था। उसी आधार पर चल कर, प्रस्तुत सामग्री एकत्रित कर उपस्थित कर रहा हूं। यद्यपि इसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियां पाठकोंको प्राप्त होंगी तथापि मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि विद्वान् पाठकगण मेरी अल्पज्ञता एवं प्रथम प्रयासको ध्यानमें रख कर क्षमा करेंगे।

कविया गोपालजीका यह दूसरा ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व इनका एक ग्रंथ श्रद्धेय स्व. पुरोहित श्री हरिनारायणजी द्वारा संपादित "शिखरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" (सीकरका इतिहास) नागरी प्रचारणी सभा काशी द्वारा संचालित "बालाबक्ष राजपूत चारण पुस्तकमाला" में प्रकाशित हो चुका है। उस पुस्तककी भूमिकामें कवियाका जो परिचय अन्वेषणके पश्चात् दिया है, उसका सार पाठकोंके लिये यहां दे दिया जाता है —

कविया गोपालका पूरा नाम गोपालदान कविया था। यह अनेक डिंगल-पिंगल ग्रन्थोंके ज्ञाता अनन्य साहित्यसेवी एवं 'बालाबक्स राजपूत चारण पुस्तकमाला' के संस्थापक बारहठ श्री बालाबक्स पालहावतके मामा थे। इन्होंने उक्त दोनों ग्रंथोंके अतिरिक्त 'कृष्णविलास' एवं अनेक स्फुट गीत छंद बनाये थे। यह भी सुना जाता है कि इन्होंने 'काव्य प्रकाश भाषा' और 'सभा-प्रकाश भाषा' नामक दो ग्रंथ और बनाये थे। ये अभी अप्रकाशित हैं। कविने अपना परिचय 'कृष्णविलास' और 'लावारासा' में दिया है, वह क्रमशः इस प्रकार है—

कृष्णविलासमें—

कवि जन कवियो दिव्यकुल चारण चंडीकाल।
'अनूपमत'के वंशमें अद्भुत नाम गोपाल॥
'अनु' वंश 'नरपाल' भय 'नरू' वंश 'भवदान'।
'भवदानके' सुत भये 'गिरधर' नाम सुजान॥
'गिरधर' सुत 'साहु' भये 'साहु' सुत 'हरिराम'।
पुत्र भये हरिरामके 'विक्रमराम' पुन काम॥
'विक्रमरामके' पुत्र फिर, 'दौलतराम' बखान।
सुत भये 'दौलतरामके' ताको नाम जु 'ज्ञान'॥
पुत्र भये फिर 'ज्ञानके' 'अनूपदान' 'खुमान'।
'रामनाथ' 'स्योनाथ' ये चार बंधु समजान॥
हम भये पुत्र 'खुमानके' नाम 'गुपाल' कहाय।
परम्यूं वंश नवीन यह, नृपकी आज्ञा पाय॥

लावारासामें—

खांडेपुर दक्षिण दिशा सीकर उत्तर कोन।
डूंगर पश्चिम जानिये पूर्व जीणकी मोन॥
ताके मध्य उदैपुरो बसत सुकविको ग्राम।
उक्त 'पर्वतदुर्ग'को तहँ भैरवको धाम॥
कविजन कवियो दिव्यकुल चारण चंडीकाल।
'अनूपमतके' वंशमें यह मम नाम गुपाल॥

इन उद्धरणोंके आधार पर चारण-कुलभूषण 'गोपालदान' कविया सीकर के 'उदयपुरा' अपर नाम 'गोपाका बास' ग्रामके निवासी थे। यह ग्राम सीकरसे ५ कोस दक्षिणकी तरफ हर्षके ऐतिहासिक पर्वतसे १ कोस और 'जीणमाता'के स्थानसे दो कोस है। इनके पिताका नाम 'खुमान' था। इनके तीन भाई और एक बहिन थी। इनके दो विवाह हुए थे और पांच पुत्र और २ पुत्रियां थी। इनकी जन्मतिथि ठीक ठीक तो ज्ञात नहीं हुई, किन्तु इनका स्वर्गवास भाद्रपद कृष्ण ४ सं

१९४२ विक्रमाब्दमें १५ दिनकी बीमारीके पश्चात् अपने ग्राम उदयपुरामें ७० वर्षकी अवस्थामें हुआ। इससे इनका जन्म संवत १८७२ वि. निकलता है। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने काका कवि रामनाथसे और तिजारेमें—जो इलाका अलवरमें है—रह कर श्रीबलवंतसिंह रईससे प्राप्त की थी। यह श्रीबलवंतसिंह अलवरके राजराजा श्रीबख्तावरसिंहजी पासवान 'मूसी'के पुत्र थे।

'सिकरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक'में कविने ग्रंथ निर्माणका समय सं १९२६ वि. दिया है उस प्रकार इस ग्रंथ लावारासामें नहीं दिया। यह ग्रंथ किस समय लिखा गया इसका ठीक ठीक समय प्रमाणाभावमें कुछ बताया नहीं जा सकता है। किन्तु अनुमान ऐसा होता है कि लावारासाके पांचवें प्रसंगमें जिस युद्धका कविने वर्णन किया है, उस युद्धका होना "तवारिखे महमूदआबाद माने टोंकके' लेखक सैयद मुहम्मद अलवरवाली "बायक"ने हिजरी सन् १२६५ में लिखा है। हिसाबसे यह हिजरी सन् संवत् १९१ वि में पड़ता है। इससे यह तो निश्चय हो जाता है कि सं १९१० से पूर्व यह ग्रंथ नहीं बना। और यह भी निश्चित ही है कि इस समयसे पांच दस वर्ष बाद भी इतना जल्दी यह ग्रंथ नहीं बना होगा। मेरा अनुमान यह कि इस ग्रंथका निर्माण "सिकर वंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक"के पश्चात् सं १९२६ वि के पश्चात् होना चाहिए। एक ऐतिहासिक ग्रंथकी समाप्तिके बाद वैसा ही दूसरा ग्रंथ लिखनेकी प्रवृत्ति होना स्वभावतः उचित प्रतीत होती है। 'लावारासा'में कविने ग्रंथ-निर्माणका उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही प्रकट किया है—

सूरवीर रजपूत कुल कवि चारन कुल जानि।
जो न चहत निज धर्मयुत यहुं कुल गौरव हानि॥
आदि धर्म छिति छत्रकुल पूरन पैज प्रतीत।
दान करन मारन मरन रजपूतों यह रीत॥
सैन रह्यो संपति-विपति सुख दुख सह्यो सत्य।
कीरत कह्यो दान भुव कुल चारन यह कृत्य॥
याते हम यह ग्रंथमें परिश्रम कियो अपार।
सुजस कच्छ कुलको कियो अपनी मति अनुसार॥

इससे यह प्रकट है कि कविने अपना पूर्ण अधिकार समझ कर इस ग्रंथकी रचना की। इसका रचना-काल जैसा कि ऊपर अनुमान किया गया है—सं १९२६ वि के पश्चात् सं १९१ वि के आसपास होना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ 'लावा रासामें' कविने अपनी डिंगल भाषाको छोड़ कर शताब्दियोंसे क्रमशः विकसित होती आ रही उस राजस्थानी भाषाका प्रयोग किया है, जो उत्तर-भारतमें गुजरातसे अंतरवेद (प्रयाग) तक प्रचलित थी। इसके साथ ही इस ग्रंथमें फारसी अरबी संस्कृत डिंगल और राजस्थानके देसी शब्दोंका कविने प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त मुसलमानोंके मुखसे खड़ी बोली

और पंजाबीके पुटसे युक्त भाषाका कविने प्रयोग कराया है। ग्रंथमें वर्णन प्रसंग और रसके अनुकूल काव्यके रीतिग्रंथोंके अनुसार किया गया है। स्थान २ पर वर्णनको सजीव करनेके लिए उपमा रूपक उत्प्रेक्षादिका प्रयोग उत्तम रीतिसे किया गया है। जैसे–

"जम्बूर रम्प रम्पके, गिरेसाते एसै जबै ।
"तूर बजन्तर सूर करि, बैठि विमाननि पात ।
सम्पति मानहु तीज दिन, दुलहर बैठि दुकात" ॥
बगत सौर साबात मानहु अंकुर पूर बन" ।

और भी "कितेक तूर बज्जरी विमान बैठि उत्तरी कितेक पात व्योमको मनो मरल्ठ की तरी"। एक स्थान पर उत्प्रेक्षाओंकी छटा देखिये–

आतुरके उर मध्य वस्त अन्तक सम वसिय ।
मानहु रम्प भुवाल बांम ज्वाला गनि पैसिय ।।
बसन बैधि कटाय कोर कुब्टा द्रुप कढ़िय्य ।
हुस्स धेधि बस हुरस, पेम सम पारक कढ़िय्य ।।
उमरौ बाजि सम्मा बसर, चुगत चौन रंग बाढ़ियो ।
मानहु कुमारि बालक सहित करबालायन कढ़ियो ।।

इसके अतिरिक्त और भी कई स्थल हैं जिन्हें पाठकगण यथास्थान देखेंगे। सम्पूर्ण ग्रंथ वीररस प्रधान है। अतः इस रसके अनुकूल ही छंदोंका प्रयोग कर वर्णनीय दृश्यको साकार बना दिया है। वैसे इस ग्रंथमें दोहा सोरठा छप्पय दुमिल भुजंगप्रयात मोतीदाम भुजंगी तोटक निशानी और पद्धरी छंदोंका प्रयोग बहुलतासे है, इसके साथ ही त्रिभंगी वेस्वरी नाराच दीर्घनाराच और बेताल छंदोंका भी कहीं-कहीं प्रयोग है। परन्तु इन छंदोंके प्रयोगमें कविने बड़ी दक्षता दिखाई है। जिस वर्णन अथवा विषयमें कौन सा छंद उपयुक्त होगा जिससे प्रसंग सजीव एवं साकार हो उठे, वैसी ही जब बाजा छंद प्रयोग कर, कविने अपनी विशेषता प्रकट की है। यथास्थान पाठकगण इसका अनुभव करेंगे। इसके साथ ही पाठकगण यह भी अवलोकन करेंगे कि जिस विषयका कविने वर्णन आरंभ किया है, उसका शब्दों द्वारा अविकल चित्र सामने उपस्थित कर दिया है। इससे यह न समझा जावे कि वर्णनमें कविने कोई दोष ही नहीं आने दिया है। एकाध ऐसे भी स्थल हैं, जहाँ कवि वर्णन-प्रवाहमें बह भी गया है। यथा–

"धमधमत अंकुसतें दुगयार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार" ।
"भरि बत्त बत्त गजनीहि करि ऐम असुर हिन्दुव मिलत ।
मानहु अनेक दिन बीछुरे, उर मिलाय बंधव मिलत" ॥

अन्त दोनों स्थल चिन्तनीय हैं। एक स्थान पर वर्णन कुछ टूटा हुआ-सा ज्ञात होता है। 'उदयामृत' प्रसंगमें जहां गौरवा अपने परिवारके क्षय होने पर शोक प्रकट कर रहा है उस स्थान पर शोक करते करते ही एक दम चढ़ाईका वर्णन उचित प्रतीत नहीं होता। ऐसा लगता है कि इन दोनों स्थलोंके मध्यमें कुछ अंश छूट गया हो यदि इनको जोड़नेके लिए कवि कुछ बीचमें और कहता तो ठीक होता। ऐसे एकाध स्थलको छोड़ कर सब प्रकारसे ग्रंथ सुंदर है। फिर भी हणुतिया ग्रामके पाल्हावत बारैठ श्री चतरदानने जो स्व. श्री बाळाबक्सजीके काका थे निम्नांकित दोहा 'लावारासा'के विषयमें रच कर कविया गोपालदानकी खिल्ली उड़ाई है—

"चोर चोर कुल चंदकी ग्रंथ बणायो गोप।
भीखण सूरजमल्लकी उपमा लई कछु ओप।।

इस दोहे में उक्त पाल्हावत बारैठने लावारासाको महाकवि चंदके पृथ्वीराज-रासासे और बूंदीके महाकवि सूर्यमलके 'वंशभास्कर'से तुकें और उपमायें चुरा कर बनाया हुआ इंगित किया है। मैंने पृथ्वीराज रासा और वंशभास्करका कई स्थलोंसे अध्ययन किया है। मुझे तो पृथ्वीराज रासाकी भाषामें और लावारासाकी भाषामें कहीं भी समानता प्रतीत नहीं हुई, तुकोंकी चोरीकी बात तो अलग रही। महाकवि चंद और कविया गोपालदानकी भाषा और वर्णन शैलीमें रातदिनका अन्तर है। इसका निर्णय तो पाठकगण स्वयं भी पृथ्वीराज रासाके अध्ययनसे कर सकते हैं। रही उपमाओंको चुरानेकी बात उपमा उत्प्रेक्षा आदिकी चोरी चोरी नहीं कही जा सकती है। पूर्ववर्ती कवियों द्वारा प्रयुक्त उपमा उत्प्रेक्षा आदिका ग्रहण परवर्ती कवियों द्वारा होता ही आ रहा है। इसमें चोरीका दोष नहीं। माना कि एक कविने मुखको चंद्रमा कहा और अन्य कवियोंने उसका अनुकरण किया तो इसमें चोरी क्या? इसमें तो कहनेकी शैलीका पार्थक्य ही मौलिकता का मूल कारण है। कविया गोपालदान और महाकवि सूर्यमल समवयस्क और समकालीन थे। कविया गोपालने अपने काका रामनाथके साथ महाकवि सूर्यमलसे बूंदीमें भेंट की थी और कवि गोपालने वंशभास्करका भी रामनाथसे अध्ययन भी किया था जिसका प्रभाव उसके चित्त पर पड़ा था। लावारासामें यह प्रभाव अवश्य है परन्तु इसे चोरी कदापि नहीं कहा जा सकता। वास्तवमें बात यह है कि उक्त दोहा केवल हास्य मात्र है क्योंकि कवि गोपालदान और पाल्हावत श्री चतरदान आपसमें ब्याई (समधी) थे। इसके साथ-साथ आपसमें गहरे स्नेही भी। इनमें आपसमें हास्य उपहास्य निरंतर होता रहता था जिसके पचासों छंद प्रसिद्ध हैं। श्री चतरदान गोपालदानकी और श्री गोपालदान भी चतरदानकी इस प्रकार अवसर प्राप्त होने पर हँसी उड़ाया ही करते थे जिसमें मनमुटाव लेशमात्र भी नहीं रहता था। कविया गोपालदानने भी एक दोहे में श्री चतरदान पाल्हावतकी खूब खबर ली है—

"सांपिन बीछिन बाहरी स्यालन पाल्हण-नार।
मात रहेंतें बहुत गुण ब्याये करत बिगार।।"

अस्तु, उक्त "चोर चोर गुरु चेलकी" दोहेमें सिवाय हास्यके और तथ्य नहीं है।

कूर्मवंश यशप्रकाश में' (लावारासा में) कविने कछवाहों एवं उसकी नरूका शाखाके वीरों द्वारा लड़ी हुई लड़ाइयोंका रोचक ढंगसे ओजपूर्ण शब्दोंमें वर्णन किया है। इस ग्रंथमें ५ युद्धों का ५ प्रसंगोंमें वर्णन है जिसका कथासार क्रमशः इस प्रकार है –

## [१] प्रथम प्रसंग

इस प्रसंगमें शिव स्तुतिके पश्चात् जयपुराधीश महाराजा श्री जगतसिंह और जोधपुरपति महाराज श्री मानसिंहके युद्धका वर्णन है। इसमें पोकरणके ठाकुर चांपावत सवाईसिंहने जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी धौंकलसिंहको मान कर, मानसिंहके विरुद्ध सवाईजगतसिंहको अपनी ओर करके आक्रमण किया। इस युद्धमें स० जगतसिंहके साथ खोजड़ीके रावत अमरसिंह मलसरके ठाकुर लक्ष्मणसिंह दीवान रायचंद बोगावत रायचंद, सीकरके लक्ष्मणसिंह बांकेके नवलसिंह शेखावत अभिमानी भूरा सिरदार नाथावत और राजावत सरदार बीकानेरके सूरतसिंह और अमीरखां अपनी अपनी सेना सहित सम्मिलित हुए। यह युद्ध परबतसर (जोधपुर राज्य) के पास हुआ। युद्धके कुछ दिन बाद महाराजा मानसिंहके सहायक गण कुचामन ठाकुरके अतिरिक्त उनका साथ छोड़ कर महाराज स० जगतसिंहकी ओर मिल गये। इससे महाराज मानसिंहको भाग कर जोधपुरके किलेकी शरण लेनी पड़ी। महाराज स० जगतसिंहने धौंकलसिंहको नागोरमें गद्दी पर बैठा कर जोधपुर पर आ कर घेरा डाल दिया। फिर महाराज सवाई जगतसिंह तो जयपुर लौट आये। इधर महाराज मानसिंहने अमीरखांको अपनी ओर मिला लिया। उसने छलबल करके मारवाड़को लूटा। सवाईसिंहको मार डाला। फिर ढूंढाड़में आ कर लूटमार करने लगा। महाराज जगतसिंह अपने राग रंगमें ही लगे रहे।

## [२] द्वितीय प्रसंग – प्रथम लावा युद्ध

अमीरखांने ढूंढाड़में बहुत लूटमार की किन्तु महाराज स० जगतसिंहने इसका कोई प्रबंध नहीं किया। इस प्रकार लूटमार करता हुआ वह लावाके समीप आया और वहीं अपने डेरे खड़े करवा दिये। उस समय मुसाहबोंने कहा कि किलेमें बहुत कम है। यदि आज्ञा हो तो युद्ध किया जावे अथवा कुछ लेने-देनेकी बात की जावे। इस पर नवाबके चाचा मीर मुस्ताखांने कहा कि ये नरूके राजपूत सदासे बहुत ही प्रबल रहे हैं इससे युद्ध करना उचित नहीं है। देखो तंवरोंने आमेर और जोधपुरने सांभर पर युद्ध किया था उस समय वे दोनों तो हार गये थे तब इन नरूके राजपूतोंने ही तेजसिंह उसी स्थान पर लोहा लिया था और बादशाही सेनाके साही गुरजदार छीन कर आमेरपति सवाई जयसिंहको ला दिये थे। इससे इन नरूकोंसे तो लेने-देनेकी [illegible] बात ही करनी

चाहिए। किन्तु अमीरखाँने इसकी बात नहीं मानी और किलेको घेर लिया। कामा-पतिने भी प्रत्युत्तर अच्छा दिया। इस प्रकार यह युद्ध ६ मास तक चलता रहा। इसमें नरूकोंका प्रसिद्ध वीर सहलसिंह मारा गया। अमीरखाँकी भी बहुत हानि हुई। इससे वह बहुत घबरा गया। अंतमें भेंट देनेकी बातचीत आरंभ कर धोखेसे कुंवर हनुमंतसिंहको पकड़ कर और डेरा उठा कर चल दिया।

## [३] तृतीय प्रसंग – मछाना-युद्ध

इस प्रकार हनुमंतसिंहको ले कर अमीरखाँ वहाँसे चला गया। यह बात लक्ष्मणसिंहको बहुत ही खटकी। वह कामासे उठाने गया और वहाँ कुँवर भारतसिंहसे बातचीत की। भारतसिंहने युद्धकी तैयारी की और माचवनगरका (माधवराजपुरका) किला अपने अधीन कर, एक पत्र अमीरखाँको लिखा कि या तो तुम कुँवर हनुमंतसिंहको छोड़ दो या युद्धके लिये तैयार हो जाओ। पत्र पाने पर अमीरखाँ बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पत्रका प्रत्युत्तर दिया कि हमने कामाके युद्धमें दो लाख रुपये व्यय किये हैं इसलिये हनुमंतसिंहको छुड़ानेके लिए दो लाख रुपया दो नहीं तो हम भी युद्धके लिये तैयार हैं। यह बात जब आसमानखाँने सुनी तब उसने अमीरखाँसे अर्ज की कि आपको ऐसा उत्तर देना उचित नहीं है। मुझे कल ही एक स्वप्न आया है कि उसने (भारतसिंहने) आपकी स्त्रियों आदिको कैद कर लिया है। इस पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ है। इस युद्धमें हमारी बहुत बड़ी हानि हुई है। इसलिए अब सोच समझ कर चला जावे। इस तरह आसमानखाँने बहुत समझाया किन्तु अमीरखाँने एक भी बात नहीं सुनी। अंतमें दूतको उत्तर दिया कि वह (भारतसिंह) हमारे पाँवोंमें आ कर गिरे और दंड स्वरूप हमको रकम दे। यह समाचार दूतने आ कर भारतसिंहको कहे। भारतसिंहने क्रुद्ध हो कर अमीरखाँकी बेगमोंको जो उस समय 'टोरड़ीमें' थीं पकड़ लिया। जब यह बात अमीरखाँको ज्ञात हुई तो वह अत्यन्त ही क्रोधित हुआ और उसने माधवराजपुरे पर चढ़ाई कर दी। यह युद्ध भी महीने तक चलता रहा। इसमें अमीरखाँकी बहुत हानि हुई। अंतमें उसने एक दूत भारतसिंहके पास भेजा और कहलाया कि आप हमारे कुटुम्बको छोड़ दीजिये हम हनुमंतसिंहको छोड़ देंगे। भारतसिंहने इसका उत्तर भेजा कि तुम हनुमंतसिंहको तो छोड़ ही दो और अपनी बेगमोंका छुड़ानेके लिए एक लाख रुपया हर्जानेका दो। यदि यह अस्वीकार हो तो युद्धके लिए तैयार रहो। अंतमें विवश हो कर अमीरखाँको हनुमंतसिंहको छोड़ना पड़ा और एक लाख रुपये और अनेक वस्तुएँ भारतसिंहको भेजीं। इस प्रकार अपनी बेगमोंको छुड़ा कर अमीरखाँ वहाँसे चला गया।

## [४] – चतुर्थ प्रसंग – उणियारा-युद्ध

यहाँसे अमीरखाँ अजमेर जियारतको गया। वापिस आते समय उसने सांभरको लूटा। इस समय तक राजस्थानमें अंग्रेजोंके पाँव बहुत कुछ जम गये थे। अंग्रेजोंने सांभर पर

कहते हैं कि खुदावन्द करीमने व्यक्तियों पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफ़गानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मंत्री नियुक्त हुआ और अफ़गानिया राज्यका सेनापति। इसी अफ़गानियाकी सन्तानें अफ़गान नामसे प्रसिद्ध हुईं और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफ़गानियाकी संतानोंमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने पठान की उपाधि धारण की। तबसे ये अफ़गान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोंमेंसे कालेखां गुलरबास शाकारजईका पुत्र तालिबखां उर्फ़ तालेखां बोहर अमीर देहलीके मुहम्मदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफ़गानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड़ कर रहीमाबादराज्यके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखां भी यहीं पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखांको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूंदेखांने फिर अपने पास नौकर रख लिया। दूंदेखांके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखांने नौकरी छोड़ दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाड़ीका कार्य आरंभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखां रखा गया। अमीरखां बाल्यावस्थासे ही हठीला और मालूम होता था। छः सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसंद करता था। वह स्वयं बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वजीर किसीको सेनापति किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीड़ा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते थे उस खेलमें अपने साथियोंमें बाँट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई बार डांट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही बान रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकांक्षी बालकके हृदय पर इस बातका कुछ भी असर नहीं होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकांक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकांक्षाका दूध पियेगा? दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठों से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नहीं थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होठोंसे लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गंध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकड़ों गालियाँ दीं। उस महात्माने उसकी गालियोंकी ओर ध्यान न दे कर उससे कहा "अरे मूर्ख तेरी आशाओं और महत्वाकांक्षाओंका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया था तेरे भाग्यमें नहीं था।" अमीर उस समय तो कुछ समझ नहीं सका किन्तु बड़े होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहीं हुआ।

जा कर अमीरखांको घेर लिया। फिर अंग्रेजी सरकारने अमीरखांको टोंक आदि दिला कर उसे नवाब बना दिया। कुछ दिनों बाद अमीरखांका देहान्त हो गया। अब टोंकका स्वामी उसका पुत्र वजीरउद्दौला हुआ। टोंककी सीमा पर उणियारा एक ठिकाना है। वहांके स्वामीका भी स्वर्गवास हो गया। उनके स्थान पर फतहसिंह वहांके स्वामी हुए। स्वर्गवासी उणियारे नरेशने बमोरका जिला अपने दूसरे पुत्रको दिया था। उसने आपसी झगड़ेसे यह जिला टोंक वालोंको दे दिया। जब यह जिला टोंक वालोंके हाथमें आ गया तब उणियारे वालोंकी कुछ और जमीन भी अपने अधिकारमें कर ली। जब यह बात फतहसिंहको ज्ञात हुई तो उसने अपने सिपाही वहां भेजे। इस स्थान पर एक छोटा युद्ध हो गया जिसमें २ व्यक्ति मुसलमानोंके मारे गये और बाकीके भाग गये। वजीरउद्दौलाको जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उसने एक सेना उणियारेकी ओर भेजी। उस सेनाने वहां जा कर बहुत उत्पात किया। फतहसिंहने भी मुसलमानी सेनाको हटानेके लिये अपनी सेना भेजी। कई दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। अंतमें मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये और वे युद्धस्थल छोड़ कर टोंक भाग गये।

## [९] पंचम प्रसंग – द्वितीय लावा-युद्ध

द्वितीय लावा-युद्धके समय लावाके स्वामी कर्णसिंह थे। एक समय मालनगरका एक पहलवान टोंकमें आया। नवाब वजीरउद्दौलाने उसका बहुत सम्मान किया और उसे अपना उस्ताद बना लिया। जब वह जाने लगा तो नवाबने उसे बहुत द्रव्य आदि भेंटमें दिये। जब वह पहलवान टोंकसे विदा हो कर जा रहा था उस समय आगे आ कर मार्ग भूल गया और वह अपने साथियों सहित लावाकी ओर आ निकला। वह लावाके बाहर तालाबके किनारे महादेवके मंदिरके पास ठहरा। प्रातःकालका समय था। लावाका कोई राजपूत गुमट महादेवकी पूजन करनेको आया था। उसने महादेवकी पूजन की और नाच गा कर स्तुति करने लगा। उसके गीतोंकी आवाज उस पहलवानने बाहरसे सुनी और सुनकर [illegible] जूते पहिने हुए ही मंदिरमें प्रवेश करने लगा उसको कई व्यक्तियोंने अंदर जानेसे रोका परन्तु वह उन्मत्त नहीं रुका। अंदर जाने पर उस गुमटने भी पहलवानको निकालना चाहा इस पर दोनों ओरसे तलवारें निकल पड़ीं। एक छोटा-सा युद्ध हो गया सम्पूर्ण देवालय रक्तसे रंग गया। वह पहलवान अपने साथियों सहित मारा गया। एक छोटा लड़का बचा वह भाग कर रोता-रोता नवाबके पास आया और उसने सम्पूर्ण कथा सुनाई। इस पर नवाब बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने लावा पर चढ़ाई करनेकी आज्ञा [illegible] दी। इस पर स्वर्गवासी नवाबके चाचाने उसे बहुत समझाया किन्तु उसने एक भी नहीं सुनी और अपनी सेना [illegible] कर लावा पर चढ़ाई कर दी। बनास नदीके किनारे अपने डेरे डाले। इस युद्धमें नवाबके साथ जावरे बाघनगर आदिकी भी सेना थी। लावाके स्वामी कर्णसिंहने भी प्रतिकारका प्रबंध किया। इस युद्धमें फतहसिंह उणियारेसे हनुमंतसिंह स्योरासे भारतसिंह कठमानेसे और चोर्ह महदूनाके

स्वामी भी आमाकी सहायतार्थ सम्मिलित हुए। कर्णसिंहके एक भाई अजमेरमें थे। उनको भी सूचना भेजी गई। वह अपनी और अजमेरकी सेना सहित आये। मारोठके मेड़तिया राठौड़ सुजानसिंह भी इस युद्धमें अपने दलबल सहित सम्मिलित हुए। युद्ध आरंभ ही गया। इधर पद्मसिंहने टोंकको जा घेरा और वहां लूटमार करने लगा। यह समाचार नवाबको भी मिले। युद्ध भयंकर होता जा रहा था। नवाबका सेनापति मंसूरखां मारा गया। तब कुतबखांने बड़े कौशलसे हमला किया। इस हमलेको सुजानसिंहके बरोधा हाजरमाने बड़ी वीरतासे रोका और अंतमें वह वीरगतिको प्राप्त हुआ। इधर कुतबखां भी मारा गया। अब युद्धकी बागडोर स्वयं नवाबने संभाली। बहुत भयंकर युद्ध हुआ। मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये। वह छिन्नभिन्न हो कर इधर उधर भाग निकली। नरूकोंकी सेनाने बहुत दूर तक उनका पीछा किया और छोड़ी हुई युद्ध-सामग्रीको अपने अधिकारमें करके वापिस लौट आई।

इसके अनन्तर कविने अपना परिचय तथा ग्रंथनिर्माणका कारण बताया है।

ऊपर कुर्मवंशयशप्रकाशके (लावारासा) के पांचों प्रसंगोंका जो कथासार दिया गया है वह सत्य घटनाओंके आधार पर कवि द्वारा कल्पना शक्तिसे काव्यरूपके रूपमें प्रस्तुत किया गया है। इनमें प्रथम प्रसंगकी घटनाको छोड़ कर बाकी चारों प्रसंगकी घटनायें कछवाहोंकी नरूका शाखा और मुसलमान लुटेरोंके मध्य हुए युद्धोंके वर्णनकी हैं। इनका परिचय लेनेसे पूर्व तत्कालीन परिस्थितियों और वातावरणका सिंहावलोकन कर लेना उपयुक्त होगा।

अठारवी शताब्दीका अंतिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दीका आदि चरण सम्पूर्ण भारतीय जनताके लिए दुर्भाग्यपूर्ण अशांत एवं निराश्रयता था। देशमें चारों ओर लूटमार एवं अराजकताका साम्राज्य था। बंगालमें ईस्ट इंडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अत्याचारोंसे जनता पिसती जा रही थी। मध्यप्रदेश और राजस्थान प्रांत मराठे, *पिंडारी और पठान

---

* पिंडारी लोग दक्षिणमें कर्णाटकके निवासी थे। खास कर ये बैलगाड़ी [illegible] था। ये पहिले हिन्दु थे बादमें मुसलमान हो गये। ये मोहर्रम मनाते थे और देवताओंकी पूजा और व्रत उपवास भी करते थे। इनमें अनेक जातियोंके मिल जानेसे यह संकर जाति बन गई। कहते हैं कि ये लोग [illegible] नामक [illegible] अधिक सेवन करनेसे पिंडारी कहलाने लग गये। बादमें इन लोगोंने अपनी आजीविकाका साधन दस्युवृत्ति बना लिया था। औरंगजेबके शासनकालमें इन पिंडारी दस्युओंका नेता [illegible] बहुत प्रसिद्ध हुआ है। मुगल सेनाओंसे इनके कई युद्ध हुए थे। जब मुगल दक्षिणमें अपना आधिपत्य फैला रहे थे उस समय ये पिंडारी [illegible] सेनामें भरती हो गये थे। धीरे धीरे ये लोग भयंकर अत्याचारी और [illegible] प्रभावशील हो गये थे। अठारहवीं शताब्दीके तीसरी दशाब्दीमें [illegible] और [illegible] नामक दो सरदार पंद्रह हजार सवारोंके साथ उपस्थित थे। पेशवा बाजीराव प्रथमने जब मालवा पर आक्रमण किया था, उस समय गाजीउद्दीन पिंडारीने पेशवाकी सहायता की थी। इसी समयसे ये लोग मालवामें बस गये थे। मालवामें इनके बसनेके पश्चात् तुकोजीराव होलकर और महादजी सेंधियाने इन लोगोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया था। तभीसे इनके दल होलकरशाही और सेंधिया-शाहीके नामसे विख्यात हो गये थे। तलवार और भाला इनके मुख्य शस्त्र थे। [illegible] इनके पीछे एक बंदूक भी इन लोगोंके पास थी। [illegible] लड़ाईमें ये लोग बहुत ही तेज थे। ये

कहते हैं कि खुदावन्द करीमने व्यक्तियों पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरखिया और अरमिया। अरमियाके अफगानिया नामक पुत्र हुआ और बुरखियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मंत्री नियुक्त हुआ और अफगानिया राज्यका सेनापति। इसी अफगानियाकी सन्तानें अफगान नामसे प्रसिद्ध हुई और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफगानियाकी संतानोंमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने पठान की उपाधि धारण की। तबसे ये अफगान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोंमेंसे कालेखां गुमरवाल साकारजईका पुत्र ताजिखां उर्फ तालेखां ओहद अमीर तैमूरके मुहम्मदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफगानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड़ कर सरीनासरायके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखां भी वहीं पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखांको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूंदेखांने फिर अपने पास नौकर रख लिया दूंदेखांके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखांने नौकरी छोड़ दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाड़ीका कार्य आरंभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखां रखा गया। अमीरखां बाल्यावस्थासे ही होनहार वीर मालूम होता था। छ सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसंद करता था। वह स्वयं बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वजीर, किसीको सेनापति किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीड़ा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते थे उन खेलमें अपने साथियोंमें बांट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफा डांट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकांक्षी बालकके हृदय पर इन सबका कुछ भी असर नहीं होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकांक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकांक्षाका घूंट पियेगा इसका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठों से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नहीं थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होठोंसे लगानेके लिए ऊंचा उठाया कि शराबकी गंध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकड़ो गालियां दी। उस महात्माने उसकी गालियोंकी और ध्यान न दे कर उससे कहा अरे मूर्ख तेरी आशाओं और महत्वाकांक्षाओंका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया जा तेरे भाग्यमें नहीं था। अमीर उस समय तो कुछ समझ नहीं सका किन्तु बड़े होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहीं हुआ।

इस प्रकार अमीर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत कर बड़ा हुआ। जब यह १५ वर्षके लगभग हुआ होगा इसने अपनी महत्वाकांक्षाको पूर्ण करने और भाग्यकी परीक्षा करनेका विचार किया। इससे इसके माता-पिता अत्यंत स्नेह रखते थे और इसे कहीं जाने नहीं देते थे अतः माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये बिना ही यह घरसे निकल पड़ा। यह घरसे लखनऊ गया फिर वहाँसे मेरठ आया। यहाँ गुलाम कादिरखाँकी सेनामें सम्मिलित हो गया। किन्तु इच्छानुसार सफलता प्राप्त नहीं हुई। इससे यह समझ कर कि बिना माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये ही आनेसे सफलता नहीं मिली है यह वापिस घर लौट कर आ गया। अब यह यौवनावस्था प्राप्त युवक २ वर्षका हो चुका था—उस समय इसका शरीर गठीला और मांस-पेशियां दृढ़ थी। शरीर की ऊँचाई मध्यम थी। आकृतिसे साहस और वीरत्व प्रकट होता था इस कारण मुखाकृति अत्यंत प्रभावोत्पादक थी। इसके साथ ही शरीर और मुखाकृतिसे अत्यंत भाग्यशाली प्रतीत होता था। महत्वाकांक्षाएँ इसकी मुखाकृति पर अपना घर बनाये हुए थीं। इस प्रकारका व्यक्ति घर कब तक रह सकता था। एक दिन अपने माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त कर कुछ आदमियों सहित घरसे जीविकोपार्जनार्थ चल ही तो पड़ा। घरसे निकल कर घूमता हुआ मालवे पहुँचा वहाँ सेनामें भरती हो गया। वहाँ कुछ दिन रहनेके बाद यह मुतुक्ली रिसालदारके पास आया। रिसालदारने इसे भाग्यशाली देख कर अपने पास रख लिया। यहाँ कई दिन रहनेके पश्चात् रिसालदार और अमीरखाँ दोनों जोधपुरके महाराज विजयसिंहके पास आये। इन्हीं दिनों रिसालदार अपनी पुत्रीका विवाह अमीरके साथ करना चाहता था किन्तु अमीरको यह सम्बन्ध नहीं जँचा अतः उसका साथ छोड़ कर अमीर ईडर चला आया दो मास यहाँ रह कर यह बड़ौदा आ गया। इस समय इसके पास १ ०–४ आदमी एकत्रित हो चुके थे। इन आदमियों सहित इसने गायकवाड़की नौकरी कर ली। यहाँ भी यह अधिक दिन नहीं ठहर सका घूमता हुआ सूरत पहुँचा वहाँ गायकवाड़के पंडितसे इसका परिचय हुआ जो सूरतमें चौथ वसूल करता था। अंग्रेज व्यापारियोंके कारण चौथ वसूल नहीं हो रही थी अतः अमीरने सहायता करके चौथ वसूल करा दी। यहाँसे अमीर भोपाल चला आया। भोपालमें इस समय छत्तेखाँकी सन् १७९४ ई मृत्यु हो जाने से भिन्न भिन्न दलों द्वारा सेना एकत्रित की जा रही थी। अमीर अपने आदमियों सहित नवाब हयात मुहम्मदखाँके पास नौकर हो गया। यहीं पर इसका परिचय गौसमुहम्मद फैजउल्लाखाँके वंशज मुरीद मुहम्मदसे हो गया। इसने यहाँ कई काम किये जिससे इसकी प्रसिद्धि हो गई। यहाँ एक वर्ष रह कर अमीर रघुगढ़के राजा जयसिंह और दुर्जनसाल खीचीके पास आ गया। इस समय यह खींची राजा अत्यन्त कठिनाईमें थे क्यों कि सेंधियाने किसी बातसे बिगड़ कर अपने यहाँसे इनको निकाल दिया था। ये लोग दस्युवृत्तिसे अपना निर्वाह कर रहे थे। इन्हीं दिनोंमें राजा रघुगढ़ और सेंधियामें युद्ध आरम्भ हो गया। अमीरने खीचियोंकी सहायता की जिससे सेंधियाको पीछे हटना पड़ा किन्तु खीचियोंके एक सरदारसे अमीरका झगड़ा हो जानेके कारण अमीर

वहाँ भी अधिक नहीं ठहर सका। वहाँसे अलग होकर मरहठा सरदार बालाराव इंगलियाके पास जो गोपालगढ़का प्रबंधक था आ कर नौकर हो गया। अमीरको छत्रहगढ़के किले और नवाब गोधमुहम्मदकी रक्षाका भार सौंपा गया। किन्तु मुराद मोहम्मदकी मृत्यु हो जाने और बालाराव इंगलियाका वहाँसे संबंध टूट जानेके कारण अमीरका संबंध भी छत्रहगढ़से छूट गया। कुछ दिन अमीर इस प्रयत्नमें रहा कि अंग्रेजोंके यहाँ नौकर हो जावे परन्तु सफलता नहीं प्राप्त हुई।

अमीरखाँने अब तक अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस ख्यातिने ही अमीरके भाग्यको जसवंतराव होल्करके भाग्यसे जा मिलाया। इसी समय अर्थात् हिजरी सन् १२१४ तदनुसार १७९९ ई० से अमीरखाँ और जसवंतराव होल्कर तब तक साथ साथ रहे जब तक कि अंग्रेजोंने इन्हें अलग अलग होनेके लिए विवश नहीं किया। इस समय जसवंतराव होल्कर बड़ी विपत्तिमें था। इसके बड़े भाई काशीरावने सब कुछ छीन कर इसे राज्यसे बाहर निकाल दिया था। होल्करने अमीरसे प्रतिज्ञा की कि जैसे जैसे प्राप्ति होगी उसका आधा भाग कर दिया जायेगा। सर्व प्रथम काशीरावसे ही इनका युद्ध हुआ जिसमें इनकी विजय हुई। जसवंतराव अब सम्पूर्ण मालवेका स्वामी हो गया।

यद्यपि अमीरखाँ जसवंतरावका नौकर था किन्तु उसने अमीरके साथ कभी भी नौकरों जैसा व्यवहार नहीं किया। आपसमें इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। यहाँ तक कि अमीरखाँ हर काम करनेमें स्वतंत्र था जिसे चाहता सेनामें रख लेता था जिसे चाहता उसे निकाल देता था। इस स्वतंत्रताके साथ साथ इसे कष्ट भी बहुत उठाने पड़ते थे। रुपयेकी कमीके कारण जब सेनाको वेतन नहीं मिलता था तो यह स्थान स्थान पर लूटमार किया करती थी और जब इस प्रकार भी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं होती थी तो नवाब अमीरखाँको सेना अत्यन्त दुःखी करती थी। यहाँ तक कि उसे तोपके मुहने बांध कर देर तक धूपमें रखती थी। लेकिन समय पड़ने पर यही सेना अपने स्वामीके लिए अपने प्राणों की आहुती देनेमें जरा भी पीछे नहीं हटती थी। होल्करने इस सेनाके खर्चके लिए अमीरको कई गांव जागीरमें भी दे रखे थे किन्तु इससे उसका व्यय अधिक ही था। इस कारण अमीरखाँकी यह सेना राजस्थान मालवा बुंदेलखंड आदि स्थानों पर धावाकर दस्युता किया करती थी। धीरे-धीरे यह दस्युओंका दल बढ़ता ही गया यहाँ तक कि इस दलमें १५ हजार व्यक्ति और ११५ तोपें एकत्रित हो गयी थीं। अस्तु।

अमीरखाँके इस प्रकार स्वतंत्र होने तथा होल्करके सम्मान सहित अमीरके साथ व्यवहार करनेसे होल्करके कई एक सरदार अमीरसे अप्रसन्न रहते थे। ये लोग होल्करके कान भरने लगे जिससे उसके हृदयमें संदेहने घर कर लिया। यह बात अमीरसे गुप्त न रह सकी। सुतराम् अमीरखाँने एक दिन समय पा कर एकान्तमें होल्कर को पकड़कर

और उसके कमरबंदसे एक छोटी कटार निकाल कर कहा—"मैं इस समय एकाकी हूं यदि मेरे मार डालनेमें तुम्हारी भलाई होती हो तो यह छुरी लो और मुझे मार डालो जरा भी विलंब न करो। इस पर होल्कर लज्जित हो कर कहने लगा कि ऐसी कोई भी बात नहीं होगी जिससे तुम्हें कष्ट हो। इसके पश्चात कभी भी ऐसी कोई घटना नहीं हुई। तबसे यह बराबर मिल कर कार्य (वस्तुतः) करते रहे।

उसी समयमें महादजी सिंधिया पूनासे उज्जैन आया था। होल्करकी सेनाने इसे लूट लिया। इस पर महादजी सिंधिया चित्तौड़में लकवाके पास चला गया। होल्कर और लकवामें शाहजहांपुरके किलेमें युद्ध हुआ जिसमें लकवा हार कर भाग गया। उधर दौलतराव सिंधियाका अंग्रेज सेनापति कुमूससाहब दक्षिणसे सिरौंजमें आया। सिरौंज अमीरखां को होल्करकी ओरसे जागीरमें मिला हुआ था। अतः वहां अमीरखांकी ओरसे एक प्रबंधक अधिकारी मुत्सद्दी रहता था। उसने अमीरको कुमूस साहबके आनेकी सूचना भेजी। अमीरखांने सिरौंज पहुंच कर उसे वहांसे भगाया। फिर नागपुरके राजाको ३॥ घंटेके युद्धके पश्चात् बेरारीके निकट परास्त किया। इधर फिर दौलतराव सिंधिया बलवंत राव लोकड़ा और जौरस साहब मिलके साथ बीस हजार सिपाही ले उज्जैन आये। होल्करके पास इस समय सेना कम थी अतः वह केसूरी चला गया और वहां उसने उन दो सेनाओंको लूट लिया जो बलवंतरावकी सहायताके लिए दक्षिणसे आई थी। फिर अमीरखां को जौरस साहब आदिके साथ युद्ध करनेको भुकाया। होल्कर और अमीरखांने मिल कर उन्हें भागनेके लिए विवश कर दिया। इसके पश्चात् दोनोंने मिल कर स्थान स्थान पर बड़ी लूटमार की। कुछ दिन साथ रह कर फिर अलग अलग हो कर काम करने लगे। सन् १८ ५ ई. में जसवंतराव होल्कर और अंग्रेजोंके बीच युद्ध हुआ। यह युद्ध डीगमें हुआ था जिसमें होल्करको परास्त होना पड़ा और भरतपुरमें शरण लेनी पड़ी। लार्ड लेकने होल्करका पीछा किया और भरतपुरके राजा रणजीतसिंहको कहलवाया कि जसवंतराव को उन्हें सौंप दें। किन्तु राजा रणजीतसिंहने जसवंतरावको देनेके लिए इनकार कर दिया इस पर भरतपुरका किला घेर लिया गया। इस समय अमीरखां भी होल्करकी सहायताके लिए आ गया था। उसने अंग्रेजोंके सिपाहियोंको हैरान करना आरंभ किया। उसका विचार था कि जो सहायता और रसद कर्नल मेरीके साथ अंग्रेजोंके लिए आती है उसे भरतपुर न पहुंचने दी जावे किन्तु वह सफल नहीं हो सका। इस पर राजा रणजीतसिंहने इन्हें सलाह दी कि एक व्यक्ति तो यहीं भरतपुरमें रहे और दूसरा जमुनाके देशमें जा कर लूटमार करे। जसवंतरावका जानेका साहस नहीं हुआ क्यों कि वह फर्रुखाबाद और डीगके युद्धमें हार चुका था। अतः अमीरखां यहांसे रोहिलखंडकी ओर चला। पीछे ही अमीरखां रवाना हो कर चला जनरल स्मिथने अपने सवारों और तोपखानेके साथ उसका पीछा किया। अमीरखां भागता फर्रुखाबाद आदिको लूटता हुआ मुरादाबाद पहुंचा। वहां अंग्रेज कुछ सिपाहियोंके

साथ पड़े हुए थे। दो दिन तक वे उससे लड़ते रहे। इतने हीमें जनरल स्मिथ भी आ पहुँचा। जनरल स्मिथके पहुँचनेसे अमीरखाँ अपनी सेनाको ले कर पहाड़ोंकी ओर भागा जनरल भी उसके पीछे पीछे चला। अफजलगढ़के पास दोनोंका युद्ध हुआ किन्तु अमीरखाँ ठहर न सका। युद्धस्थल छोड़ कर रुहेलखंडके गाँवोंको लूटता हुआ गंगापार हो गया। इस समय इसके साथ केवल १ सिपाही रह गये थे। इसलिए फिर इसने सेना एकत्रित की और जसवंतरावके पास चला आया। इधर लार्ड लेकने जसवंतरावको संधि कर लेनेके लिए विवश कर दिया। जब संधि होने लगी तो लार्ड लेकने जसवंतरावसे यह कहा कि इस संधिपत्र पर अमीरखाँके भी हस्ताक्षर होने चाहिए। अमीरखाँको यह स्वीकार नहीं था। इस पर जसवंतरावने अमीरखाँकी बहुत खुशामद की और कहा कि मुझे इस समय एक करोड़ बीस लाख मिला है जिसमेंसे मैं आधा दे दूंगा। इस समय १ लाखके गांव देता हूँ बाकी धविष्य और मांग प्राप्त कर दे दूंगा। इस पर बड़ी कठिनाईसे अमीर राजी हुआ। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर जसवंतरावसे गाँवोंका लेखा मंगवा लिया। जसवंतरावने नवाबकी इच्छानुसार नवर्नर जनरलसे टोंक अलीगढ़ मालवेसे सिरौंज और पचावा मेवाड़से नीमाहेड़ा छीनीवालेसे छबड़ा नवाबको वर्षमें लिख दिये।

अमीरखाँको अब रहनेके लिए, अच्छा स्थान मिल चुका था और उसकी अवस्था भी बढ़ चुकी थी। अतः उसने मुहम्मद अय्याज खाँकी पुत्रीसे सन १२२१ हिजरी तदनुसार सन् १८ ६ ई. में अजमेरमें विवाह कर लिया। इस स्त्रीसे हिजरी १२२२ (सन् १८ ६) में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम वजीर मुहम्मद रखा गया। इस समय तक इसका (अमीरखाँका) दल बहुत बढ़ गया था। उसका आतंक चारों ओर छाया हुआ था। कुछ दिन बाद अमीरखाँको जयपुरके राजा सवाई जगतसिंहने जोधपुरके राजा मानसिंहसे युद्ध करने के लिए अपनी सहायतार्थ बुला लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि उदयपुरके राणा भीमसिंहकी कन्या कृष्णा कुमारी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका वाग्दान (सगाई) राणाने जोधपुर नरेश भीमसिंहके साथ किया था। जब भीमसिंहका निःसंतान स्वर्गवास हो गया और जोधपुरकी गद्दी पर मानसिंह बैठे तो राणाने कृष्णा कुमारीका विवाह उसके साथ करना चाहा। इस पर मानसिंहने उत्तर दिया कि कृष्णा कुमारीकी सगाई उसके पिता भीमसिंहके साथ हुई थी अतः माताके साथ मैं विवाह नहीं कर सकता। इसलिए राणाने जयपुरके महाराज जगतसिंहसे संबंध करना चाहा। महाराज जगतसिंहने जोधपुर नरेश महाराज मानसिंहसे पूछ कर और उनके इनकार होने पर विवाह संबंध स्वीकार कर लिया।

तत्कालीन समयमें पोकरणके ठाकुर सवाईसिंह बहुत ही प्रभावशाली एवं विख्यात व्यक्ति थे जिनके पितामह देवीसिंहको महाराजा भीमसिंहने मरवा दिया था। देवीसिंहके

दो पुत्र थे। सवलसिंह और श्यामसिंह। सवलसिंहके पुत्र सवाईसिंह पोकरणके स्वामी हुए और श्यामसिंहने जयपुरमें गीजगढकी जागीर प्राप्त की। महाराज मानसिंह जब जोध पुरकी गद्दी पर बैठे उस समय सवाईसिंह अपनी कन्याका विवाह जयपुरके महाराज जगतसिंहसे करनेकी तैयारी जयपुरमें कर रहे थे। महाराज मानसिंहने सवाईसिंहसे कहलाया कि आजतक राठौड़ों ने जयपुरवालोंको कभी डोला नहीं दिया है। आप डोला दे रहे हो इससे राठौड़ोंका बहुत ही अपयश होगा। सवाईसिंहने जो मानसिंहसे पहिलेसे ही इस बात पर खिजा हुआ था कि उसकी बिना सम्मतिके ही जोधपुरकी गद्दी पर बैठ गया था उत्तर भिजवाया कि मेरे काका जयपुरमें ही रहते हैं वहींसे यह विवाह होगा परन्तु यह कहां तक उचित है कि जोधपुरकी मांगको जयपुर वाले ब्याह ले जावें। मानसिंहको यह बात बहुत बुरी लगी और उसने उदयपुरके राणाको विवाहके लिए कहलाकर वह स्वयं विवाहकी तैयारी करने लगा। इधर जयपुरमें भी विवाहकी तैयारी हो रही थी। उदयपुरके राणा जयपुरसे संबंध स्थापित कर देनेके कारण कृष्णा कुमारीका विवाह जयपुर नरेशसे ही करना चाहते थे। इस कारण इस युद्धका श्रीगणेश हो गया।

इधर पोकरण ठा० सवाईसिंहने प्रचारित किया कि स्वर्गीय महाराज भीमसिंहकी रानीसे धौंकलसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ है जो शेखावटीमें पोषण पा रहा है। वही जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी है। साथ ही जयपुर नरेश जगतसिंहको कृष्णाकुमारीसे विवाह करनेके लिए उत्साहित किया और आश्वासन दिया कि समय पड़ने पर हम सब राठौड़ आपके साथ हैं। हम केवल यही चाहते हैं कि भीमसिंहका पुत्र धौंकलसिंह ही जोधपुरका स्वामी बने।

ऊपर लिखा जा चुका है कि राजस्थानमें अमीरखां और उसका दल अपने कार्य कलापोंके कारण भयंकरतामें अति प्रसिद्ध हो चुका था। वह दल पैसेके लिए सब कुछ करनेके लिए हर समय तैयार रहता था। जो अधिक रकम देता था उसीकी ओर हो जाता था। इस कारण जयपुर और जोधपुर नरेश दोनोंने अच्छी रकम देनेकी प्रतिज्ञा कर अमीरखांके दलसे सहायता प्राप्त करनी चाही। इसमें जगतसिंहको सफलता मिल गई। और मानसिंहको किसी भी ओरसे सहायता प्राप्त न हो सकी। जगतसिंहके साथ इस युद्धमें अमीरखांके अतिरिक्त हैदराबादके मीरमहबूब वाजिदखां बुधावत और शहदीन और मरदान अली नवाब जावरा बीकानेर नरेश सूरतसिंह और पोकरणके ठा० सवाईसिंह सम्मिलित हुए थे। परबतसर पर जहाँ जयपुर और जोधपुरकी सीमाएँ मिलती है, ये लोग एकत्रित हुए। उधरसे महाराज मानसिंह इन्हें रोकनेके लिये साठ हजार सेना सहित आगे बढ़े। दोनों सेनाओंमें भयंकर काटमार हुई, और अंतमें सवाईसिंहके उद्योगसे राठौड़ी सेना मानसिंहका साथ छोड़ कर, जगतसिंहकी ओर मिल गई। इससे मानसिंह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। जैसे तैसे करके बचे हुए व्यक्तियोंको साथ ले जोधपुरकी ओर रवाना हुआ। महाराज जगतसिंह अब

विवाहार्थ उदयपुर जाना चाहते थे किन्तु सवाईसिंहके अनुरोधसे पहिले मानसिंहसे निबट लेना उचित समझ कर जोधपुरकी ओर बढ़े। मड़ताके पास फिर राठौड़ी सेनासे मुठभेड़ हुई। और वहां विजय प्राप्त कर कुछ जमीन बीकानेर नरेशको दी। अब मानसिंहके पास केवल जोधपुर और जालोर ही रह गये थे। महाराज जगतसिंहने पीपाड़ पहुँचकर मारवाड़की २२ तोपें और प्राप्त की। मंडोवर और जोधपुरके निकट सूर्यास्तके समय महाराज जगतसिंह धौंकलसिंहके डेरेमें गये। वहाँ धौंकलसिंहने महाराजका अच्छा आदर-सत्कार किया। वहां दरबार हुआ जिसमें बीकानेरके सुरतसिंह भी थे। धौंकलसिंहको जोधपुरका स्वामी घोषित कर आगे बढ़े जहाँ सिंघी रामचन्द्र बख्शी और अमीरखांकी सेनाएं इनसे आ कर मिल गई। उसी दिन ये लोग मालकोट जोधपुर नगर अधिकृत करनेवाले थे। अतः इन्होंने विजय घोषित कर दी और धौंकलसिंहके नामसे १९ अप्रैल सन् १८०७ ई०को दुहाई फेर दी और जोधपुर आ कर घेरा डाल दिया।

अब तो जोधपुर नरेश बड़ी कठिनाईमें पड़े। एक बार फिर पुनामचा अफजलके द्वारा अमीरखांसे सहायताकी याचना की किन्तु अमीरने सहायता देनेसे साफ इनकार कर दिया। घेरा कई दिन तक चलता रहा। राठौड़ोंने बड़ी वीरता पूर्वक सामना किया। अंतमें तोपोंके गोलोंसे किलेका कुछ हिस्सा गिरा दिया गया। उधर किलेकी खाद्य-सामग्री दिन दिन कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें महाराज मानसिंहने सवाईसिंहको कहलवाया कि "राठौड़ोंकी इज्जत अब आपके हाथ है। धौंकलसिंह अंततोगत्वा राठौड़ ही है। अतः मारवाड़के दो हिस्से करके एक हिस्सा धौंकलसिंहको दिया जावे जिसकी राजधानी नागौर रहे, दूसरा अर्द्ध भाग मेरे लिये रहे जिसकी राजधानी जोधपुर रहे।" इस पर सवाईसिंहने प्रत्युत्तर दिया कि आप किला परित्याग कर दीजिए और अपने लिए एक अच्छी जागीर ले लीजिए। इस पर मानसिंहने साका करके वीरोंकी तरह युद्धक्षेत्रमें प्राणोत्सर्ग करनेका विचार किया। इसी समय इंद्रराज सिंघी और भंडारी गंगारामने जो किसी कारणवश किलेमें कैद थे—मानसिंहको कहा कि अब यह समय हमारी स्वामिभक्तिका है आप हमारा विश्वास कीजिए और हमें छोड़ दीजिये। हम आपको दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते हैं? अंतमें ये दोनों कर्मचारी छोड़ दिये गये। इन्होंने किलेसे बाहर निकल कर मरहठा सरदारों द्वारा अमीरखांसे कहलवाया कि यदि आप हमारी सहायता करें तो हम आपको ४ लाख रुपया खजाना और आपकी सम्पूर्ण सेनाका खर्चा देंगे तथा आपको एक अच्छी जागीर भी देंगे। इस पर अमीर सिंघी इन्द्रराजसे बातचीत करनेके लिए घेरेसे हट गया और मरहठा सरदारोंसे मिल कर, मारवाड़को लूटता हुआ अरक्षित जयपुर पर आक्रमण कर दिया।

जब यह बात महाराज जगतसिंहको ज्ञात हुई तो प्रथम तो वह बहुत घबड़ाया फिर तुरन्त ही बख्शी शिवलालको अमीरके विरुद्ध भेज दिया। शिवलालने आगे बढ़ कर अमीरकी

सेनाको फागीके पास परास्त किया। तत्पश्चात् अपनी सेनाको छोड़ कर किसी कार्यवश जयपुर चला आया। जब अमीरखांको अपनी हारका हाल ज्ञात हुआ तो उसने मुहम्मदखां और राजा बहादुरको जो ईसरदाको घेरे हुए थे मुक्त किया और अपनी शिवलालकी सेनाकी ओर बढ़े। रास्तेमें इन दोनों सेनाओंकी टक्कर हुई। कई स्थानों पर नवाबकी सेना परास्त हुई, किन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण कछवाही सेनाको सांगानेर तक पीछे हटना पड़ा और नवाबकी सेनाने उसका पीछा किया। यहांसे जयपुर शहर सिर्फ ५ कोस दूरी पर था। शहर जयपुर पर चढ़ाई करना नवाबके लिए सरल नहीं था। अतः नवाब अमीरखां सींधिया और राठौड़ोंके साथ मारवाड़की ओर चला।

इधर अभी तक अम्बाजी इंगलिया और स. जगतसिंह जोधपुर पर घेरा डाले हुए थे जब कि अन्य सरदार अमीरखांकी तरह घेरा छोड़ कर जा चुके थे। अतः जगतसिंहने भी घेरा उठा लेनेका विचार कर धौकलसिंह और सवाईसिंहको नागौर रहनेके लिए कहा। और उनकी रक्षार्थ अन्य लोगोंको वहां छोड़ा। साथ ही कुछ सेना शेखावाटीमें भी सहायतार्थ छोड़ी और आप स्वयं जयपुरकी ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह घेरा उठाया गया। इससे मानसिंह बड़ा ही भाग्यशाली प्रमाणित हुआ जो बिना किसी उद्योगके घेरेसे निकल गया।

*अब रही कृष्णा कुमारीके विवाहकी बात उसका हाल यह है कि अमीरखांने पहिले* जगतसिंह और सवाईसिंहसे अच्छी मित्रता प्रदर्शित की तत्पश्चात् पैसेके लोभसे इनका साथ परित्याग कर दिया और मानसिंहसे जा मिला। लेकिन उसके साथ भी अपनी कुटिलताका परिचय दिया। उसने सवाईसिंह, इंदराज सिंघी और महाराजा मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्या की जिससे मानसिंहको अत्यन्त दुःख हुआ। अंतमें उसने यह सोचा कि कृष्णा कुमारी रहेगी तो फिर झगड़ा होना संभव है इसे समाप्त कर दिया जाना ही उचित है। अतः उसने उदयपुर जा कर राणा भीमसिंहको कृष्णा कुमारीकी हत्या कर देनेके लिये विवश कर दिया। कृष्णा कुमारीके तीन बार हलाहल पी लेने के पश्चात् सदाके लिए झगड़ेकी संभावना जाती रही। सवाईसिंहकी हत्याके पश्चात् धौकलसिंह भाग कर बीकानेरकी ओर चला गया। इस प्रकार इस युद्धका अंत हुआ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अमीरका दल बहुत बढ़ गया था। उसकी सेनामें कई रिसालदार थे जो स्थान स्थान पर रियासतों और ठिकानेवालोंसे अपनी सेनाका व्यय बलात् लेते थे और समय असमय पर जनताको लूटते रहते थे। इस पर भी उनका व्यय नहीं चलता तो वे मिल कर अमीरखांको तंग करते थे। एक समय जोधपुर वाले युद्धके पश्चात् बुधायक्त मुहम्मद सईदखां कुतुबुद्दीनखां फैजुल्लाखां मुनीरखां नजीबखां खान मुहम्मद सारापाहखां कमरुद्दीनखां और अन्य रिसालदारोंने मुहम्मदखांके साथ षड्यन्त्र करके अपने वेतनके लिये विद्रोह उत्पन्न किया। उस समय अमीरखां अपने परिवारके साथ कुमकोलाके

किलेमें था जो उसने कुछ दिन पूर्व हस्तगत किया था। इन विद्रोहियोंने वहाँ आ कर घेरा दिया। अमीरखाँने राजा बहादुरलालसिंहको जो उदयपुरमें था अपनी सेना सहित इन उपद्रवियोंको शांत करनेके लिये बुलाया किन्तु उसने उत्तर भिजवाया कि आजकल मैं महाराणाकी सेवामें हूँ, बिना उनकी आज्ञाके नहीं आ सकता। अतः अमीरखाँने महाराणाको लिख कर उसे बुला लिया। वह वहाँसे सीधा जयपुरमें नवाब मुस्ताअलीखाँके पास आया उसने फिरसे उसकी (नवाबकी) अध्यक्षतामें सेनाकी बागडोर संभाली।

जब अमीरखाँको ज्ञात हुआ कि उसकी रक्षक सेना जमशेदखाँ मुहम्मद सईदखाँ आदिके साथ इन उपद्रवकारियोंसे असन्न है और अभी तक शांत है तो उसने सोचा कि इनके सामने युद्धके स्थान पर इस सेनाके सामने प्रकट होना अति उत्तम होगा। इस विचारके अनुसार वह किलेसे बाहर आया और सबको पृथक पृथक बुला कर कहा कि यदि आप यह समझते हों कि मैंने अपने लिए धन एकत्रित करके छिपा रखा है तो आप तलाश करके कोई भी वस्तु अपने अधिकारमें कर सकते हो। किन्तु इन अफगानोंने उसका जरा भी विश्वास नहीं किया और उसे अपने अधिकारमें पा कर उसके साथ अत्यन्त कुत्सित व्यवहार करने लगे। अमीरखाँने यह देख कर अपने पुत्र वजीरुद्दौलाके साथ अपने परिवारको संरक्षकोंकी अधीनतामें टोंक भेजा दिया और आप स्वयं उन लोगोंके साथ किशनगढ़की सीमामें आया। वहाँ युद्ध अजमार की ओर ७ हजार रुपया सेना खर्चका राजासे प्राप्त किया। इसी प्रकार शाहपुरा आदिसे सैन्यव्यय प्राप्त कर तत्पश्चात् बूँदीकी सीमामें प्रवेश किया फिर समेली दूपर और निनवरमें आया। इस स्थान पर कर्नल मोहनसिंह और मुहम्मद अब्बासखाँके रिसालेसे मिला जो तत्काल ही बंबीसे आये थे। अमीरखाँने बूँदीसे भी सेना-व्यय माँगा और लेनेके बाद जयपुर राज्यकी सीमामें प्रवेश किया। टोरडी और चाकसूके निकट आकर उनियारा और ईसरदासे भी उसी प्रकार अपनी माँग रखी तथा निवाईके पास आ कर डेरा डाला। अब उसका विचार जयपुरके साथ झगड़ेके लिए आवश्यक समझौता करनेका हुआ। इसके लिए मुस्ताअलीखाँको सेना सहित बुलाया था जो उस समय हिण्डौनमें था। उसको पत्र लिख कर आप मोहनसिंहकी सेना सहित चाकसूमें आया। इस स्थान पर अमीरखाँने मेघसिंह आदि जयपुरके अन्य अधिकारियोंसे मिल कर तै किया कि १२ लाख रुपया उसको (अमीरको) हीरानंद सेठके द्वारा मिल जाय जो मुस्ताअलीखाँकी सेनाके साथ है। अमीरखाँ यह समझौता कर किशनगढ़की ओर बढ़ा। उधर यह समाचार मुस्ताअलीखाँने सुने कि जयपुरके साथ इस प्रकार बातचीत निश्चित हो चुकी है तो वह वापिस लौट गया। जयपुरके भूतपूर्व दीवान राव चतुर्भुजके बहकानेसे शेखावाटीमें नवलगढ़ और खेतड़ीके विरुद्ध गया। इसी बीचमें महाराज जगतसिंहने किसी कारणवश मेघसिंहको दीवानपदसे हटा दिया। उसी समय अमीरखाँने अपने पुत्रको सपरिवार टोंक छोड़ कर सेरगढ़ चले जानेकी आज्ञा भेजी और स्वयं किशनगढ़से रवाना हो कर तुगरमें आ कर माँडीके निकट डेरे डाले। इधर मुस्ताअलीखाँने नवलगढ़ और खेतड़ी तथा शेखावाटीके अन्य ठिकानोंसे सेना-व्यय प्राप्त कर अमीरके

पास आ कर पड़ाव किया। अमीरखाँ अभी तक जयपुरवालोंकी दुरंगाई नीतिके कारण उनके घेरेमें ही था। इस प्रकार आठ मास व्यतीत हो चुके थे। अमीरखांने उस लाखकी हुंडी को अभी जोधपुरसे प्राप्त हुई थी उन्हें दे कर अपना पीछा छुड़ाया और खुशीमें अपने डेरेमें आ कर सलामीकी तोपें चलवाईं। जयपुरमें जब इन तोपोंकी आवाजकी सूचना महाराज जगतसिंहको मिली तो वे बहुत चकित हुए। प्रातःकाल जब सब घटना ज्ञात हुई तब महाराजने बोहरा दीलारामको अमीरखांके पास आवश्यक समझौतेके लिए भेजा। अमीरखां कुछ समय तक वहीं ठहरा रहा। अपने सेना व्ययको मिलता न देख कर अपनी सम्पूर्ण सेना सहित सांगानेर आया। सांगानेरके पास जोधपुरकी सेना थी उस पर आक्रमण कर भगा दिया। अब वह बोहरा दीलारामके बागके (आजकल बांधी नगरके) निकट आ गया। जब यह समाचार जयपुरके अधिकारियोंने सुने तो वे बहुत घबराये और उन्होंने दस लाख रुपया बोहरा दीला रामके द्वारा जो तोमारसे अमीरखांके साथ था देना स्वीकार किया। जिसमेंसे ६ लाख रुपया तो अमीरखांने मुहम्मदशाहखांकी सेनाका बंधा हुआ खर्चा रखा बाकी रुपया जमशेदखां दादासाहबखां और शेरमुहम्मदखां तथा अन्य स्वतंत्र रिसालदारोंके लिए रखा। इस प्रकार मान करनेका कारण यह भी था कि जब अमीर घरेमें था उस समय यह लोग अत्यन्त ही स्वामि भक्त रहे थे। अमीरखांने इस रुपयको प्राप्त कर लेनेका कार्य मुहम्मदशाहखां पर रखा।

इस प्रकार सब कार्यवाही कर अमीरखां अजमेरकी ओर अग्रसर हुआ। वहाँ उसका विचार पहुँचते ही आक्रमण कर देनेका था किन्तु मुहम्मदशाहखान समझाया कि इस प्रकार आक्रमण करनेसे कुछ भी लाभ नहीं आवेगा। अतः उसने दादाखाके साथ अपनी सेनाको मेवाड़में सेना-व्यय एकत्रित करनेके लिए भेजी और आप स्वयं दो हजार घुड़सवारों जमशेदखां और मकरीबियो सहित वहीं ठहर कर लालाबाकोसे सेना-व्ययकी मांग करने लगा। जालेके किले पर दो तीन बार आक्रमण भी किये। किन्तु किलेकी सुदृढ़ दीवारों और खाईको गहराईके कारण वे सफल नहीं हुए। बहुत समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। इसी बीचमें राजा रावाराम मुहम्मदशाहखांकी सेनाके साथ जोधपुर भेजा गया वह महाराज मानसिंहसे १ लाख रुपया प्राप्त कर आ रहा था। उसके लौटनेके समाचार जसवंतराव होल्करके डेरेमें पहुँचे उस समय अमीरखांके का लेखक मुंशी मुसाहबलाल (साहबराम कवि) भी वहीं उपस्थित था जो उस समय राजा मोहनसिंहकी सेनामें काम कर रहा था। उसने (साहबराम कविने) इस घटनाकी स्मृतिमें कुछ कविताएँ रचीं। इसी समय सन् १२२७ हिजरीमें (ई० सन् १८११) पिंडारी करीमखां जिसके पास पिंडारी वस्तुओंका बहुत बड़ा दल था सीन्धराव सैंधियासे हार कर, बचे हुए थिप हिमोंके साथ अमीरके पास आया। इस पर सैंधिया पर, राजाराणा जालिमसिंह होल्कर बाई (जसवंतरावकी विधवा) और अंग्रेजोंने मिल-कर अमीरको इस वस्तु सरदार करीमखांको पकड़ कर सौंप देनेके लिये बहुत दबाया था। अमीरने इस बातको अपने गौरवके अनुकूल न समझ कर इस पिंडारे सरदार और उसके साथियोंको

अपने पास रखा और रोंगिया आदिको उत्तर लिखवाया कि वह (पिण्डारा सरदार) इस समय उसके पास है इसलिए इस तरफसे कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यद्यपि अमीरखांको उसके बहुतसे रिसालदारोंने समझाया कि पिण्डारेको पकड़ कर सौंप देना चाहिए, तथापि उसने उन लोगोंकी एक भी न सुनी।

अब हम फिर आगरा की ओर आते हैं। जयपुरसे जो रुपया तय हुआ था वह ठीक समय पर मुस्तारहौलाको मिल चुका था। इस पर जमसेदखां और दूसरे रिसालदारोंने जिनके पास सेना थी समय पा कर नवाब मुस्तारहौलाको पकड़ लिया और उसके गलेमें तलवार लगा कर सौगन्ध खाई कि जब तक उन्हें पूरा रुपया न चुका दिया जायेगा तब तक उसे न छोड़ा जायेगा। संयोगवश उसी समय जिस समय यह उपद्रव हो रहा था अमीरखां भी नवाबके डेरेकी ओर आ निकला। उस समय दिनके ३-४ बजेका समय था। वहाँ पहुँच कर जब उसे सब घटना ज्ञात हुई तो उसने विचार किया कि यदि लोग उसे इस समय इस डेरेमें देख लेंगे तो सेनामें संदेह करेंगे कि यह उपद्रव उसीने खड़ा किया है। अतः वह चुपचाप अपने डेरेमें न लौट कर लोगोंकी निगाहसे निकल गया। वह फैजुल्लाखां बंगशके डेरेमें चला गया। जब तक यह उपद्रव शांत न हुआ तब तक वहीं रहा। जैसी कि अमीरखांने आशंका की थी मुस्तारहौलाकी अध्यक्षतामें जो सिपाही थे उन्होंने यह समझ कर कि अमीरने ही उनके सरदारके साथ यह गड़बड़ी की है, उसके डेरेको घेर लिया और मोर्चाबंदी कर दी। और यह कहा कि जब तक उनके स्वामी मुस्तारहौलाको न छोड़ा जायेगा वे अमीरको अपने अधिकारमें रखेंगे। यह समझ कर कि अमीर उनके अधिकारमें है रात भर आक्रमण करते रहे। उधर अकस्मात मुस्तारहौलाके सीनेमें तलवार लगाये खड़े जमाये रहे। अंतमें अमीरके मंत्री राय रामारतन मुस्तारहौलाके बालक पारखा और सेठ हीराचंदके गुमाश्ते जवाहरसिंहकी जमानत पर, उसको छोड़नेको उन्हें राजी किया गया। अमीरने उनको बुला कर कहा कि जब तक यह मुस्तारहौलाके बदला देना स्वीकार न करेगा तब तक इन दोनोंको न छोड़ा जायेगा। उसे आशा थी कि इस प्रकार राय उसका (मुस्तारहौलाका) शामिल हो जायेगा। रायने अमीरके लिए यह सब स्वीकार कर लिया। पारखा और जवाहरसिंहके साथ जमसेदखां और अन्य अफगानोंने रायको अपने अधिकारमें रख लिया। इस प्रकार अमीर और मुस्तारहौलाने कठिनाईसे मुक्ति पाई। इसी बीचमें राजा मोहनसिंहकी सेनाके सिपाही भी अपने वेतनके लिए हल्ला मचाने लगे। अमीरके हजूर मुहम्मद अय्याजखांके बहकानेसे अपने सरदार राजाको जयपुरमें टोरडीके स्थान पर कैद कर लिया। इसलिए मुंशी मुतायनलालने जो उस समय मोहनसिंहकी सेनामें था उसके छुटकारेके लिए उद्योग किया। छुटकारेके पश्चात् राजा मोहनसिंहने नौकरी करना उचित न समझ कर त्यागपत्र दे दिया और मुस्तारहौलाके पास चला गया। राजाके त्यागपत्र देने पर उसके स्थानका नायब मुहम्मद अय्याजखां बनाया गया।

नवाब अमदेरखां, मुहम्मद सईदखां और दूसरे रिसालदार, जिन्होंने राय रायाराम और उसके दो साथियोंको पकड़ रखा था, मेवाड़में भिंडाहेड़ाकी ओर अग्रसर हुए। अमीरने रायरायाहसी रिसालदारकी अध्यक्षतामें अपनी प्रधान सेना मेवाड़में सैनाध्यय प्राप्ति हेतु भेजी। आप स्वयं थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ करीमखां पिंडारीको ले कर टोंक और रामगढ़ होता हुआ कोटा राजराणा जालिमसिंहके पास गया। वहाँ पर चार दिन ठहर कर वह मानपुरा गया जहाँ हालहीमें यशवंतराव होल्करका निधन हुआ था। वहाँ उसकी विधवा बाईसे मिल कर शोक प्रकट किया और उसके आग्रहसे यशवंतरावके उत्तराधिकारी मल्हाररावकी नाबालगीमें राज्यका प्रबंध करना स्वीकार किया। अमीरखांने करीमखां पिंडारीको वहीं कुछ दिन ठहरनेकी सम्मति दी और उसे समझाया कि नामदारखां और उसके (करीमखांके) साथियों तथा संबंधियोंको मेरे साथ भेज दिया जाय जिन्हें मैं राजा दुर्जनसाल खींचीसे मिला दूंगा जो इस समय दौलतराव सेंधियाके विरुद्ध विद्रोह कर रहा है। वे लोग अच्छी सहायता करेंगे। सेंधियाको उसके किये का फल चखायेंगे। करीमखांको यह योजना पसंद आ गई और वह मानपुरा ठहरनेके लिए तैयार हो गया। इस पर अमीरने करीमखांको इस्त खासीला और नफूरखांके सिपाहियोंकी नाम मात्रकी चौकसीमें छोड़ दिया और आप नामदारखां, वहाबतखां और दूसरे लोगोंके साथ वेरपड़ आ कर दुर्जनसालसे मिला। पिंडारी सरदारोंको यह कह कर उसके पास छोड़ दिया कि ये लोग तुम्हारी अच्छी मदद करेंगे और इनके सहयोगसे बड़े बड़े कार्य हो सकेंगे। उधर पिंडारोंसे यह कहा कि मैं राजा (दुर्जनसाल)का कार्य तुम्हारे हाथमें देता हूँ तुम अपने और राजाके शत्रुके विरुद्ध मिल कर कार्य करो। इसके अतिरिक्त नामदारखांको वजीर मुहम्मदखां भूपाल वालेके नाम भी एक पत्र दिया जिसमें पिंडारियोंकी सहायता देनेको लिखा गया था। इसी समय अमीरखांने मुहम्मद सईदखांको 'शमशुद्दौला असदजंग' व जफरखांको 'सरफराजुद्दौला तेगजंग'की उपाधियां प्रदान कीं। जफरखांको मुहम्मदखांके स्थान पर सिरोंजका अधिकारी बना कर भेज दिया।

मुस्तासदौला जो जावाके पास सेना साथ पड़ा हुआ था अपने सिपाहियोंकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देख कर भयभीत हो चुका था। अतः जावाका घेरा परित्याग कर किशनगढ़की ओर चला गया। अमीरखांने मोहनसिंहके लड़को दूसरे सिपाहियोंके साथ अपने ससुर मोहम्मद अय्याजखांकी अध्यक्षतामें जयपुरके रामपाटी भागमें सैनाध्यय एकत्रित करनेको भेजा। जयपुर वालोंने अभी तक निश्चित रकम नहीं दी थी और देनेमें आनाकानी कर रहे थे। अतः मुस्तासदौलाके वकीलसे लोगोंने कहा कि जब तक अमीरके ससुरकी अध्यक्षतामें शहर पर तोपखाना न लगाया जायेगा तब तक रुपया प्राप्त होना कठिन है। इसलिए नवाब सांभरकी ओर रवाना हुआ और तोपखाना लानेका प्रयत्न करने लगा। मार्गमें ठाकुर चांदसिंहकी अध्यक्षतामें जयपुरकी सेनाने उन पर आक्रमण किया। जब यह समाचार राजा बहादुरजालिमसिंहने सुने जो इस समय जावाके घेरे पर नियुक्त था और जिसने जावा

वालोंको इतना दबा दिया था कि उनके साथ होनेमें कोई कमी नहीं थी तो लावावालोंने ८ हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर घेरा तोड़ कर, अमीरके ससुरकी सहायताके लिये शीघ्र पहुँच गया और जयपुरकी सेनाको पीछे हटा दिया। इस प्रकार यह लावेका घेरा कई दिन रह कर समाप्त हुआ। लावाका यह घेरा सन् १८१२ ईमें डाला गया था।

अमीरखां करीमखांको माधपुरा छोड़ कर, घूमता हुआ अजमेर आया वहाँ उसे मुहम्मद अय्याजखां मिला। मुहम्मद अय्याजखांके सिपाहियोंको अभी तक बाकी रुपया नहीं मिला था अतः अमीरखांने शीघ्र ही रुपया दिये जानेका उन्हें आश्वासन दिया। आश्वासन दे कर अमीरखां जोधपुर चला गया। इधर मुस्ताअलीखांकी जयपुरकी सेनासे फिर मुठभेड़ हो गई जिसमें जयपुर सेनाको पीछे हटना पड़ा और संधि करनी पड़ी। इसी समय सन् १८११ ईमें जगतसिंहकी बहिनका विवाह मानसिंह जोधपुरके साथ और मानसिंहकी पुत्रीका विवाह जगतसिंह जयपुरके साथ हुआ। संधिके पश्चात् मुस्ताअलीखां मेड़ता चला आया और अमीरसे मिल कर जोधपुरसे फिर रुपयोंकी मांग की। यहाँ इंद्रराज और महाराज मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्याके पश्चात् अमीरखां शेखावाटीमें आया। यहाँ श्यामसिंह और अभयसिंहके विरुद्ध मोर्चाबंदी की जिन्होंने जमशेदखांको हरा कर भगा दिया था। अमीरने इससे १ लाख रुपया ले कर जयपुर जा कर रुपयोंकी फिर मांग की और रुपया प्राप्त न होने पर घेरा डाल दिया। छुटपुट आक्रमणोंके अनन्तर मानसिंहकी पुत्रीके आग्रहसे जिसका विवाह कुछ दिन पूर्व जगतसिंहके साथ हुआ था—घेरा उठा कर अमीरखां जोधपुरकी ओर चला गया और इधर जोधपुर और बीकानेर रियासतोंमें वसूला करता हुआ कई महीनों तक घूमता रहा। तत्पश्चात् अमीरखांको माधोराजपुरेके किलेकी ओर जाना पड़ा वहाँ लवाणेके कुंवर भारतसिंहने अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखांकी बीबी बच्चोंको टोरडीसे ला कर, अमीरखांको अपने ऊपर आक्रमण करनेके लिये विवश कर दिया था।

अमीरखांने जब लावाको घेरा था उस समय लावाकी सहायताके लिए नरूकोंके सभी मसके सरदार आये थे। जिनमें लवाणेके ठा. मदनसिंहके पुत्र कुंवर भारतसिंह भी थे। यह वीर और उत्साही नवयुवक थे। इन्होंने अपने ठिकानेकी 'रिजक' नामक तोपसे इतने गोले अमीरखांकी सेना पर बरसाये थे कि विवश हो कर अमीरकी सेनाको घेरा उठाना पड़ा था। ऊपरकी पंक्तियोंमें यह लिखा जा चुका है कि लावेका घेरा राजा बहादुर बालसिंहने लावा वालोंके ८ हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर उठा लिया था। यह लेख अमीरखांके वेतन भोगी मुंशी बुसावनलालका है जिसने अमीरके जीवनकालमें ही अमीरकी जीवनी लिखी थी। किन्तु अन्य इतिहासकारोंका कथन है कि भारतसिंहके तोपोंकी मारसे विवश हो कर यह घेरा उठाया गया था।

लावाके घेरेके पश्चात् एक समय नरूकोंमें एक विवाहोत्सव था जिसमें कुंवर भारत सिंह भी अपने साथियों सहित सम्मिलित हुए थे। प्रसंगवश वहाँ पर कई सरदारोंके मध्यमें

जिनमें राठौड़ भी थे जाजमें भी गई अपनी वीरताका गर्वभरे शब्दोंमें वर्णन किया जिससे कि मेंड़ेकर जो संधिकी चर्चा चल रही थी वह स्थगित हो गई और जाजमका घेरा उठा लिया गया। प्रसंगवश यह बताना अनुपयुक्त न होगा कि राठौड़ों और कछवाहोंमें आपसमें समधियोंका संबंध था और वे एक दूसरेसे हँसी मजाक भी किया करते थे। किन्तु इस हास्यमें कभी मनोमालिन्य नहीं हो पाता था। अस्तु, माधवसिंहकी उक्त गर्वभरी बातसे एक राठौड़ सरदारने मुँह बना कर कहा कि "इसमें आपकी वीरता क्या थी आपने तो अपने तीन आतिथेयको और भी कठिनाईमें फँसा दिया था वह तो भाग्यकी बात थी कि घेरा उठ गया। आपकी वीरता तो तब समझी जाती कि जब आप नवाबको अपने घर पर मुकाबले निमंत्रित करते। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा किया जाता तो आप अपने बालबच्चों सहित ठिकानेको भी खो बैठते।" यह शब्द माधवसिंहको तीरकी तरह लगे। कुछ क्षणके लिए वह स्तब्ध हो गया किन्तु उसी क्षण एक व्यक्तिसे खड्ग मंगा कर उसे अपने दाहिने हाथमें ले कर प्रतिज्ञा की "यदि एक वर्षके भीतर मैं नवाबको मुकाबले निमंत्रित करके परास्त नहीं करूं तो मैं असल राजपूत नहीं और मुझे अपने वंशका कलंक समझा जावे।" इस पर उपस्थित सब ही व्यक्तियोंने माधवसिंहको अपनी प्रतिज्ञा वापिस लेनेके लिए बाध्य किया किन्तु उसने उत्तर दिया कि हाथीके दांत एक बार बाहर निकलनेके पश्चात् कभी अन्दर नहीं जा सकते हैं वैसे ही राजपूतके मुँहसे भी शब्द एक बार कह जाते हैं। इस हास्यसे आगेकी घटनाका श्रीगणेश हुआ।

जब माधवसिंह अपने स्वामिभक्त चतुर एवं दूरदर्शी कामदार बंधु बाबाई सहित घर लौट रहे थे तब मार्गमें कामदारने कुंवर माधवसिंहको उसके इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर बहुत बुरा भला कहा। तुम्हारा इस प्रकार अदूरदर्शितापूर्ण कार्य केवल मस्तीके भावके अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या आप अनेक साधन संपन्न अनेक सहायकोंसेयुक्त एवं अदमनीय कठोर और भयंकर अमीरखां पर विजयकी आशा करते हैं? क्या राजस्थानमें अमीरके विरुद्ध खड़े होनेकी किसीमें शक्ति है? जयपुर, जोधपुर, उदयपुर भी बराबर भय खाते रहते हैं और समय समय पर उसे सेनाव्ययकी रकम देते रहते हैं। इस पर कुंवरको वास्तवमें क्षोभ हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि जल्दबाजीमें बड़ी भयंकर भूल हो गयी। फिर भी उसने उत्तर दिया कि आप सब लोग अपने अपने घरोंमें बैठ कर आराम करो। मैं यह जानता हूँ कि आज नवाबका राजस्थानमें विरोध करने वाला कोई नहीं है तो भी नवाब चाहे जितना ही शक्तिशाली क्यों न हो मैं एकाकी ही नवाबकी सेनाका सामना करूंगा और अंतमें एक वीर योद्धाकी तरह वीरगति प्राप्त करूंगा। इस पर बाबाईने उसे आश्वासन दिया कि आपको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यद्यपि मैं एक तुच्छ जातिका गूजर हूँ और एक छोटेसे ठिकानेका कामदार हूँ तथापि आप विश्वास रखें और देखें कि मैं किस प्रकार धर्मके मन तक आपकी प्रतिज्ञापूर्तिमें योग देता हूँ। मुझे पूर्ण अधिकार दिया जावे

और आगे मेरा कार्य देखा जावे। इसी तरह वर्षका अंत होनेमें कुछ ही दिन शेष रह गये थे किन्तु जामाईने अभी तक कुछ भी नहीं किया था। इस पर कुंवरने एक दिन जामाईको बुला कर कहा कि तुम तो अपनेको गुच्छ गुजर कह कर अपनी बातसे हट सकते हो किन्तु मैं राजपूत बिना प्रतिज्ञा पूर्ण हुए कैसे मुंह दिखा सकूंगा। इस पर जामाईने कहा कि आप चिंतित न हों समय अब कार्य करनेका आया ही है। आप मेरी कार्यवाहियोंको चुपचाप देखते रहें।

दूसरे दिन उसने बाजारके हलवाइयोंको बुला कर ५ व्यक्तियोंके लिए हलवा पूरी तैयार करनेको कहा और साथ ही उसने सम्पूर्ण नक्काओंके नक्का राजपूतोंको स्त्री, बच्चों सहित भोजनका निमंत्रण भेजा। यथा समय सब लोग भोजनके लिए आये भोजनके पश्चात् जामाईने सबको एकत्रित कर कहा "ठिकानमें ऐसा कोई बड़ा कार्य नहीं था जिसके कारण इतना बड़ा प्रीतिभोज दिया जाता किन्तु कुंवर वीर और पराक्रमी हैं और नक्कोंके टीकाई हैं अतः आप सबको उन्हें सम्मान देना चाहिये। इसके पश्चात् कुंवर घोड़े पर चढ़ और उपस्थित नक्कोंमें से ५ चुने हुए पराक्रमी एवं साहसी योद्धागण कुंवरके पीछे पीछे चले और जामाई पैदल साथ साथ चला। यह सब लोग माधोराजपुरेके किलेकी ओर आये। जयपुरमें यह किला अन्य किलोंसे अधिक सुदृढ़ था। जब यह लोग वहां पहुंचे तब रात्रिके १ बज चुके थे। रस्सेकी सीढ़ियों द्वारा किलेमें प्रवेश कर किलेका दरवाजा खोल कर बाकी बचे हुए साथियोंको किलेके अंदर लिया गया और फिर वहांके रक्षकोंको बाहर निकाल दिया गया जो जसवंतसिंहकी राठौड़ रानी (मानसिंहकी पुत्री)के द्वारा वहां नियुक्त थे। इसके पश्चात् रातोंरात सम्पूर्ण नक्काओंको स्त्रियों बच्चों सहित वहां बुला लिया गया। इस प्रकार अपनी रक्षाका प्रबंध कर अमीरसे युद्ध करनेकी तैयारी की जाने लगी।

अमीरखांका ससुर मुहम्मद अय्याजखां उस समय टोरडी ठाकुरके यहां सपरिवार ठहरा हुआ था जिससे उसका संबंध पगड़ीबदल भाईका था और उसकी बहन ठकुरानीकी धर्मबहिन थी। इस बातको जामाई अच्छी तरह जानता था। अतः उसने २ चुने हुए पराक्रमी और उत्साही सवारोंको ले कर रात्रीमें टोरडीके जनाने महलों पर आक्रमण किया। उसने मार्गमें जा कर बहुतसे बैलोंको एकत्रित कर उनके दोनों सींगों पर मशालें जला कर इधर उधर फैला दिया जिससे यह मालूम हो कि कोई बहुत बड़ा दस्युओंका दल लूटनेको आया है। उस समय इस प्रकार किसी भी समय लूटमार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। अय्याजखां तथा ठाकुरने जब इन लोगोंका हल्ला सुना तो देखनेके लिये अपने स्थानसे बाहर आये। अय्याजखान यह समझा कि रात्रिके अंधकारके कारण उसीके व्यक्ति लूटमार करने आये होंगे। उन्हें देखनेको कुछ व्यक्तियोंको गांवकी ओर भेज दिया। इधर जामाईने जनाने महलों पर आक्रमण कर अय्याजखांके परिवारकी स्त्रियों और बच्चोंको, जिनमें अमीरखांकी स्त्री भी थी अपने अधिकारमें करके ले चला और पहरेदारोंमेंसे एकको भी समाचार देनेके लिये जीवित नहीं छोड़ा। इधर बैलोंके सींगोंकी मशालें बुझने

कमी तो उनके साथ जो आदमी थे उन्हें छोड़ कर चल गये। जब मार्च पाला समाप्त हुआ और मुहम्मद अय्याजखां अपने ठहरनेके स्थान पर मध्य रात्रिको वापिस आया तब वहाँ उसे कोई भी व्यक्ति नहीं मिला और हत्याकाण्डको देख कर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि इस इतनी बड़ी घटनाका उन्हें जरा भी भान न हुआ। उस ओर बालाराव उन बेगमों आदिको आरामके साथ माधोराजपुराके किलेमें ले गया जहाँ उन्हें बड़े ही आरामसे रखा। अब युद्धके लिए रसद आदिका प्रबंध किया गया। जब अमीरखांको इस दुर्भाग्यपूर्ण समाचार मिला तो उसने अपनी बड़ी सेना ले कर माधोराजपुराके किलेको घेर लिया।

घेरा डालनेके पश्चात् अमीरखांने प्रथम भारतसिंहको अपने परिवार वालोंको छोड़ देनेके लिए संदेश भेजा। भारतसिंहने फसल पकने तक अमीरको अपना विचार प्रकट नहीं होने दिया उसे वस्तुस्थितिसे अंधकारमें ही रखा। जब फसल पक कर तैयार हो गई और खाने पीनेकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्रित कर ली गई, तब अपनी इच्छा स्पष्ट रूपसे अमीरको प्रकट कर दी। इस पर अमीरने रावोंकी ओरसे आगे बढ़ कर घेरेको और भी संकुचित कर लिया। इसके साथ ही उसने राजा बहादुरकाशिंह मियां अब्दार, मोहम्मदखां और महमूदखां आदिकी सेनाको बुलवा लिया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमशेदखां और बेगम हिम्मतखांकी घुड़सवार सेनाको भी बुलवा लिया। इन्हें किलेके चारों ओर लगा कर मार्ग अवरुद्ध कर, बाहरसे किलेवालोंका संबंध विच्छेद करनेके पश्चात् आक्रमण कर दिया। इस प्रकार घटते जाते हुए और आक्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो जाने पर भी अमीरखांको सफलता नहीं मिली तब उसने अपनी सेनाके सम्पूर्ण अधिकारियोंको एकत्रित करके परामर्श किया और यह निश्चय किया कि किलेकी एक ओरकी दीवारको तोड़ कर किलेमें प्रवेश कर आक्रमण करना चाहिए। इस योजनाके अनुसार कार्यवाही आरंभ की गई, किन्तु अमीरके काबुली सिपाही—जो हिन्दी नहीं समझ सकते थे—दीवार टूटनेसे पूर्व ही आक्रमण कर बैठे। इससे किलेवालोंने सचेत हो कर ऊपर से पत्थर फेंकते हुए कम्पनोंके साथ साथ गोलाबारी भी इन लोगों पर की जिससे अमीरकी सेनाके कितने ही व्यक्ति मारे गये और कितने ही घायल हुए और बाकी बचे हुए भाग गये। अमीरने जब यह सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और बिना आज्ञा कार्यवाही करनेके अपराधमें बहुतोंको दंड दिया। उसकी यह योजना असफल हो गई जिसको पुनः कार्यान्वित करना भी असंभव था क्योंकि यह योजना प्रकट हो चुकी थी।

इस आक्रमणके समयमें कुंवर भारतसिंह और बालारावने स्थितिको इस धीरता और चतुराईसे संभाला कि अमीर जैसा कठोर एवं पराक्रमी योद्धा भी विचलित हो गया। नबाबके बीबी-बच्चोंको ऐसे प्रेम एवं आदरसे रखा कि वे उसे जीवन पर्यन्त न भूल सके जिससे

उनमें आपसमें सगे भाई बहिनोंका-सा संबंध हो गया था। एक बार फिर नवाबने दीवार तोड़नेका यत्न किया तो उस समय नवाबकी बीबी बच्चोंने अमीरसे कहलाया कि यदि आपने किलेकी दीवारें तोड़नेका फिर प्रयत्न किया तो हम उस स्थान पर पहुँच जायेंगे– हमारे मरने पर ही बाबा भारतसिंह व अन्य राजपूतों पर आँच आ सकती है। इस पर अमीरने किलेकी दीवार तोड़नेका विचार त्याग दिया। युद्ध चलते हुए कई मास व्यतीत हो गये थे उसकी सम्पूर्ण सेना युद्धस्थल पर एकत्रित हो चुकी थी जिसे वेतन नहीं मिला था। सेना व्यय जहाँ जहाँसे प्राप्त होनेको था वह आया नहीं था। इन परिस्थितियोंने अमीरखांको अत्यन्त चिंतित कर दिया था। अतः मुहम्मद उमरखां एवं बालाराम और मुहम्मद अय्याज खांने लाख रुपया ऊपर चतुर्रसिंहसे ला कर दिया जिसे अमीरखांने अपनी सेनामें बांट दिया। इसके पश्चात् किले पर फिर आक्रमणकी तैयारी की जिसका संचालन स्वयंने किया। उसने सब सेनानायकोंको सूचित कर दिया कि इस बार उसकी आज्ञाका पूर्णरूपसे पालन किया जावे और संकेत पाते ही तत्काल किलेपर आक्रमण कर दिया जावे। किन्तु इस बार भी हवाके विपरीत होनेके कारण अमीरने जो संकेत तोप चला कर किया था वह दूसरी ओर न पहुँच सका और उसकी सेनाके पड़ावमें पहुँचा। इसलिए इस ओर वाली सेनाने यह समझ कर कि उनके अन्य साथियोंने (दूसरी ओरवालोंने) किलेको तोड़ दिया है—आक्रमण कर दिया किन्तु दूसरी ओरवालोंको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था इसलिए वे वहींके वहीं रहे। किलेवालोंके सजग हो जानेसे अमीरकी यह योजना भी सफल न हो सकी और उसे अत्यन्त हानि उठानी पड़ी। अंतमें उसने घेरेको और भी संकुचित करके किलेवालोंको भूख प्याससे विवश करना चाहा। समय अत्यधिक हो चला था। १२ मास होने पर आये थे। क्योंकि यह घेरा २१ नवम्बर सन् १८१६ ई.में आरम्भ हुआ था और सन् १८१७ ई.का नवम्बर मास आरंभ हो चुका था। अब घेराके संकुचित हो जानेके कारण किलेवाले भी विशेष चिन्तित हुए। किन्तु किलेवालोंके सौभाग्यसे उन्हीं दिनों अंग्रेजी सरकारने अपनी सेनायें चारों ओरसे एकत्रित कर उन स्थानोंकी ओर रवाना की जो अमीरखां द्वारा लूटे जा रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेज सरकारने अमीरखांके देहलीवाले प्रतिनिधि मुंशी निरंजनलालसे समझौतेकी बातचीत की जो इस समय चार्लस् टी मेटकाफ रेजीडेन्टके पास था। उससे (निरंजनलालसे) यह कहा गया कि यदि अमीर हमारी शर्तोंको स्वीकार कर लेगा तो उसे दक्षिणकी कुछ जमीन और दे दी जावेगी। इस प्रकार संधिकी बातचीत करके एक डौल (ड्राफ्ट) अमीरकी स्वीकृति हेतु भेजा गया। इस डौलमें अंग्रेजोंके लाभकी शर्तें अधिक थीं और अमीरकी आशाओंके अनुसार बहुत कम थीं। इसी समय जावरेसे जनरल डंकिन और देहलीसे जनरल आक्टरलोनी अपनी अपनी सेनाओंके साथ जयपुरकी ओर बढ़ा। साथ ही अमीरखांको जो कुछ सहायता मरहट्टे सरदारोंसे मिल सकती थी, उस पर पहिलेसे ही रोक लगा दी। इससे अमीर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया और अंतमें विवश हो कर और संधि करनेमें ही अपना हित समझ कर उस डौल पर प्रथम हस्ताक्षर कर दिये। और

सिंहका सेवक लक्ष्मनसिंह बरोगा रतना भाभाई, मुक्ता बरोगा लालसिंह किलेदार आदि कितने ही प्रमुख वीर वीरगतिको प्राप्त हुए। × इस युद्धके पश्चात् अमीरखांका ५९ वर्षकी अवस्थामें सन् १२८१ हिजरी तदनुसार १८६५ ई में स्वर्गवास हुआ।

यह पहिले लिखा जा चुका है कि ये युद्ध अमीरखां और कछवाहोंकी नरूका शाखाके राजपूतोंके मध्य हुए थे। अमीरखां और उसके कार्य-कलापोंका वर्णन ऊपर लिखा जा चुका है। अब नरूकाओंकी उत्पत्ति प्रसार तथा उनके क्रियाओं आदिके विषयमें आवश्यक बातें दी जाती हैं।

संवत १४२१ वि में आमेरके सिंहासन पर उदयकर्णका उदय हुआ। इसके ज्येष्ठ पुत्र बरसिंह थे जिनके विवाहके लिए मंडोवरके निर्वाण (चौहान) वंशी राजा राव मीसलदेवने (अपनी पुत्रीके विवाहार्थ) टीका भेजा। इस अवसर पर वृद्ध राजा उदयकर्णने हास्यमें कहा कि यदि हमारी अवस्था भी कुंवर साहबकी-सी होती तो आज हमारे लिये भी ब्याहका टीका आता। यह सुन तत्काल कुंवर बरसिंह उठ गये और उस कन्याको हृदयमें माता अनुमान कर पितासे विवाह करनेका आग्रह करने लगे और मंडोवरके अतिथियोंसे कहा कि मांग हमारी हो चुकी है अतएव अन्य स्थान पर ब्याह करोगे तो बरबर युद्धका सामना करना पड़ेगा। जब मीसलदेवको यह ज्ञात हुआ तो उसने बरसिंहसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया "मैं राज्याधिकार प्राप्त नहीं करूंगा मैं माताके पुत्रको ही स्वामी मानूंगा।" अंततोगत्वा राजा उदयकर्णको वृद्धावस्थामें तीसरा विवाह करना पड़ा। इस कन्यासे उसके दो पुत्र हुए। ज्येष्ठका नाम नरसिंह और कनिष्ठका बालोजी था।

सं १४४५ वि में राजा उदयकर्णका स्वर्गवास हो जाने पर बरसिंहने अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने भाई नृसिंहको सिंहासनारूढ़ कराया। आमेरमें बालक राजा जान कर मकावर खांका राजपूतने आमेर हड़पनेके लिए एक बड़ी सेना ले कर ग्वारयाके निकट सरलके नालेके पास पड़ाव डाला। जब यह सूचना बरसिंहको मिली तो वह भी शत्रुको बीच हीमें रोकनेके लिए बड़ी धमधमके साथ सिवाड़में आकर ठहरा। बरसिंहका ऐसा उत्साह देख खांका मकावरने कुटिल नीतिका अनुसरण करते हुए उसे (बरसिंहको) कहलाया कि "व्यर्थहीमें क्षत्रिय परस्पर लड़ कर मारे जायेंगे अतएव आप निःसंकोच अकेले पधारें, मैं भी इसी प्रकार उपस्थित होऊंगा। संधि करली जायेगी। सीधे सीधे बरसिंह खांकाकी कुटिलताको न समझ कर, उसकी सूचनानुसार केवल एक सईसको साथ ले कर, सरलके नाले पर पहुंचे

---

× अमीरखांकी मृत्युके पश्चात् का विस्तार-पूर्वक वृत्त नहीं मिलता है। जो कुछ ज्ञात होता है वह "तवारीखे अमीरनामा में" है। अमीर अमीरखांनामा इस ही पुस्तकके आधारपर लिखा गया है। इसमें न तो अमीरके मृत्यु कारण लिखा है न परिणाम ही। तत्कालीन लिपिकोंसे जो इस भ्रम हुआ है, उससे इतिके इसकी पुष्टि होती है। पर यथास्थान आगे दिया जायेगा।

दया किये थे। यह रत्नसिंह अत्यन्त शराबी और व्यभिचारी प्रसिद्ध था। इसके राज्यका प्रबंध नीच प्रकृतिके लोगोंके हाथमें था। इस कारण शेखावतों और नरूकोंको अपनी अपनी सीमा बढ़ानेका अवसर प्राप्त हो गया था। राज्यके कुप्रबंधके कारण अन्य भाई बेटे सब ही अप्रसन्न थे। राजा रत्नसिंहने अपने चचेरे भाई तेजसिंह रायमलोतको अपना दीवान नियुक्त किया था। इससे अप्रसन्न हो कर उसका चाचा सांगा आमेरके राजा पृथ्वीराजका पुत्र अपनी ननिहाल बीकानेर चला गया था। उसके चले जानेके पश्चात् छोटे दर्जेके नौकरोंको जो राजाके बड़े कृपापात्र और मुंहलगे थे अपनी मनमानी करनेका अच्छा अवसर प्राप्त हो गया था जिसका परिणाम आमेरकी राज्य-क्षीणताका द्योतक हुआ। सांगा पृथ्वीराजोतको अपनी ननिहालमें आमेर राज्यके कुप्रबंध और क्षीणताके समाचार बराबर मिलते रहते थे। अंतमें उसने इन समाचारोंसे क्षुब्ध हो कर बीकानेरके राजा राव जैतसी लूणकरणोतसे जो उसके मामा थे सहायताकी प्रार्थना की। राव जैतसीने १५ हजार सेना सांगाको दी जिसमें बैणाथावतका वजीर बाघावत महाजनका लूणकरणोत रत्नसिंह, रायसरका कौवसोत कृष्णसिंह, द्रोणपुरका संसारचंदोत खेतसिंह सारूंडाका मण्डलावत महेशदास जैतूका दीपावत भोजराज बछीसरका बीकावत वेणीदास पूगलका भाटी राव बैरीसिंह, बिरमोतका धनराज घेघावत नाथाका बाघावत भाटी कृष्णसिंह मिलकका जोइया हेमा सिंहाणाका महता अमरा बछावत मूहता सांगा पुरोहित लक्ष्मीदास और भाणा सांखलाका भाई लाल सांखला प्रधान थे। इस सेनाको ले कर सांगा अमरसर पहुंचा। यहां रायमल शेखावतने उसकी अगवानी कर जोड़ भेंट किये सांगाने ये घोड़े वापिस कर दिये। सांगाका इस प्रकारका व्यवहार देख कर रायमलने राजा रत्नसिंहके दीवान तेजसी रायमलोतको सूचित किया कि ढंग देखनेसे ज्ञात होता है कि सांगा आमेरका राजा हो जायेगा। अतः इसके साथ जमीनसे संधि कर लेनी उचित होगी। इस पर तेजसी आमेरकी सेना ले कर रास्तेमें ही सांगासे मिला। मिलते समय ही सांगाने उपालंभ देते हुए तेजसीसे कहा "शाबास तेजसी तुमने मिलके हो कर आमेर को खूब आबाद किया।" तेजसीने उत्तर दिया कि "राजा तो शराब और व्यभिचारका दास बना हुआ है ऐसी स्थितिमें वह तो प्रबंधकी ओर तनिक भी ध्यान देता नहीं है। यदि आप राजा हो जावें तो सब कार्य सरल हो जावें। नरूकों द्वारा दबाई हुई भूमि सहज ही वापिस हस्तगत की जा सकती है। इस पर सांगाने उत्तर दिया कि नरूका करमचंदके रहते हुए हमारा अधिकार नहीं हो सकता है। अंतमें तेजसीने सांगाको मौजमाबादकी ओर प्रयाण करनेके लिए कहा। ये सब लोग वहां आये। तेजसीने करमचंद नरूकाके कनिष्ठ भाई जयमलको जो उसके पास रहता था बुला कर कहा कि "तू जा कर करमचंदको बुला ला। वह भी यहां आ कर सांगासे अपनी सफाई कर ले। क्यों कि आगे-पीछे राज्यका मालिक सांगा ही होता दिखाई देता है।" जयमलने इसका उत्तर यह दिया कि "आज दस वर्षसे करमचंद राज्यके इलाके दबा कर भोग रहा है, तब तो किसीने कुछ नहीं कहा है। अब यदि उससे कुछ कहा जायगा तो वह जमीन तो कुछ देगा नहीं और व्यर्थमें रक्तपात

करमचंदके पश्चात् उसके पौत्र जैतसीका पुत्र चंद्रभाण बड़ा पराक्रमी एवं प्रभावशाली हुआ। उसने मुगल-सम्राट शाहजहाँकी ओरसे सं १६५२ में बलख बदखशां और कंधारमें अपनी वीरता और पराक्रमका अच्छा परिचय दिया। इससे प्रसन्न हो कर सम्राटने चार हजारीका मंसब खिताब और माहीमुरातब* दे कर चंद्रभाणको सम्मानित किया। चंद्रभाणके पुत्र फतेहसिंहने शाहजहाँका पक्ष ले कर पूनाके साथ युद्धमें बहुत वीरता दिखाई। महाराज सवाई जयसिंहकी सहायतार्थ इस वंशके संग्रामसिंहने सांभरके युद्धमें हुसेनअली और अब्दुल्ला सैयद बंधुओंके विरुद्ध युद्ध कर पराक्रमको विजयश्रीमें परिणित किया था। सं १७८५ वि में महाराज सवाई जयसिंहके साथ मांडूके युद्धमें अजीतसिंहने अपना अद्भुत युद्ध कौशल प्रदर्शित किया जिसके उपलक्षमें महाराजाने वंशपरंपराके लिए "राव"की उपाधि दे सम्मानित किया था। इसी वंशमें महाराज सवाई प्रतापसिंहके समयमें विशनसिंह हुआ जिसने महाराजकी ओरसे सिंधियाके विरुद्ध तुंगाके युद्धमें अपूर्व पराक्रम दिखाया जिसके उपलक्षमें महाराजने सं १८४४ ई. वि में उणियाराका स्वतंत्र शासन तंत्र चलानेके अधिकारके साथ साथ "राजा"की वंशगत उपाधि और ५ तोपोंकी सलामीका सम्मान दिया। तबसे इस वंशके प्रधान "राजराजा" कहलाने लगे और राजस्थानके एकीकरण तक दीवानी और फौजदारी अधिकारयुक्त शासक रहे। आजकल इस वंशमें राजराजा सरदारसिंह हैं जो अपनी उदारता एवं लोकप्रियताके लिए प्रसिद्ध हैं।

राव दासाके एक पुत्र चांदराज थे जिनकी संतानको "लदाना" प्राप्त हुआ। इस वंशमें भी उत्तमोत्तम वीर हुए जिन्होंने यथासमय आमेर और जयपुर राज्यकी अच्छी सेवा की थी। विशेषकर मदनसिंहका पुत्र भरतसिंह बहुत विख्यात हुआ है जिसने अमीरखां जैसे दुर्दमनीय शत्रुको अपने साहस पराक्रम एवं कौशलसे युद्ध मोल ले कर नीचा दिखाया। इसी वंशके ठाकुर नाहरसिंहने लावा प्राप्त किया। उस समय लावा एक छोटासा ग्राम मात्र था और जयपुर राज्यके अधीन टोंक तहसीलके अंतर्गत था। जब टोंक अमीरखांको दे दिया गया तब लावा टोंकके नीचे आ गया। तबसे ही लावा इन पठानोंकी आंखका शूल हो गया। इन्होंने लावाको छीन लेनेके प्रयत्न किये किन्तु नरूके राजपूतोंके संगठन एवं वीरतासे असफल रहे। ठाकुर नाहरसिंहकी तीसरी पीढ़ीमें ठा देवीसिंह और

---

* ईरानके बादशाह नौशीरवांका पौत्र खुसरो राज्यच्युत हो कर निकल गया था। वह रूमकी [illegible] भागा था। फिर दैविक शक्ति पा जाने पर उसे फिर राज्यलाभ हो गया। जिस दिन राज्यलाभ हुआ उस दिन ज्योतिषके हिसाबसे चंद्रमा मीन राशीमें था। मीनका स्वरूप मछली जैसा माना गया है। इसी स्थितिको शकुन समझ कर सुलतानने मछली और चांदसे मिले हुए चिह्नको "माहीमुरातब" नामसे प्रसिद्ध किया। सुलतानने ऐसे चिह्नके चांदी सोनेके झंडे बनवा कर उन सरदारोंको दिये जिनका आदर सत्कार सर्वोच्च श्रेणीका था। इसके पीछे दिल्लीके मुगल बादशाहोंने भी इसका अनुकरण किया।

यह वृत्त श्री शिवनारायणजी सक्सेना बी. ए. भूतपूर्व [illegible] जयपुर राज्य द्वारा प्राप्त हुआ है। सक्सेनाजी कुछ दिन लावामें भी काम कर चुके हैं।

विजयसिंह हुए। ठिकानेका स्वामी देवीसिंह हुआ। एक समय शिवजीके मंदिरमें ठा विजयसिंह ध्यान कर रहा था। टोंकसे दो सरकारी मुसलमान कर्मचारी आ कर जूते पहने मंदिर के चबूतरे पर चढ गये मना करने पर भी नहीं माने और खानेको वहीं बैठ गये। तब ठा विजयसिंहने अपनी तलवारसे एक मियाँका काम समाप्त कर दिया और दूसरा भाग कर टोंक पहुँचा जिसने इस कांडकी सूचना नवाबको दी। नवाबने अपने चुने हुए सिपाहियोंकी एक टुकड़ी सेना लावा पर आक्रमण करनेको भेजी किन्तु वह सेना लावाका मार्ग भूल कर लावासे ४ मील उत्तरकी ओर टोंक होके एक बपडी नामक गांवमें पहुँच गई, वहाँ छोटासा लावा जैसाही एक किला था उसको तोपोंसे ढाह दिया। दूसरे दिन ज्ञात होने पर बहुत पश्चात्ताप किया गया। कुछ समय पश्चात् लड़ाई बन्द हुई। विक्रम सं १९२१ तक ३ लड़ाइयाँ टोंक वालोंके साथ हुईं, परन्तु टोंक वालोंको हर समय मुँहकी खानी पड़ी। जब टोंकका नवाब लावाको विजय नहीं कर सका तो संधिके लिए नवाबने ठा देवीसिंहको एक पत्र लिख कर भेजा। लावासे कुछ व्यक्ति टोंक गये और लावा हाउस टोंकमें ठहरे। यह २३ व्यक्तियोंका एक समुदाय था जिसमें ठा देवीसिंह और विजयसिंहजी थे। नवाबसे मिलने ठा विजयसिंह गया जिसके साथ ११ व्यक्ति थे। ठा देवीसिंहको भी बातचीतके लिए बुलाया गया था किन्तु वह गया नहीं। भेंट करनेके लिए जो महल चुना गया था उसके चारों ओर बारूद बिछा दी गई थी। जो जो व्यक्ति भेंटके लिए बुलाये गये थे उनमेंसे एक व्यक्ति नवाबको सूचना देनेके लिए इन लोगोंको उस महलमें छोड़ कर चला आया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी नवाब भेंटके लिए नहीं आया तब वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बहाना कर जाने लगा तो ठा विजयसिंहने उसे जाने नहीं दिया क्योंकि उसे इस षड्यन्त्रका कुछ कुछ आभास हो गया था। अतः ठा विजयसिंहने उस व्यक्तिको तलवारसे वहीं समाप्त कर दिया। इतनेमें बारूदमें आग लगा दी गई। वह महल उड़ गया और १ व्यक्ति ठाकुरके समुदायके मारे गये एक मीणा बचा जिसने दौड़ कर लावा हाउसमें समाचार दिये। वहाँसे ठाकुर देवीसिंह रातोंरात पैदल भाग कर लावा आये। आते ही देवलीके पोलीटिकल एजेन्टको सब समाचार लिखे। पोलीटिकल एजेन्ट देवलीने जाँच की और लावा वालोंका उसे कोई दोष दिखाई नहीं पड़ा। उसने नवाबको इस अपराधमें सजा दी और अमीरखाके पौत्रको नवाब बनाया। साथ ही सं १९२१ वि में लावा को टोंकसे अलग कर चीफशिप स्थित की। तबसे लावा भारतके स्वतंत्र होनेसे पूर्व तक सीधा ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे संबंधित रहा। देवीसिंहके पश्चात् लावाके स्वामी ठा शेरसिंह इसके बाद रावबहादुर राजा मंगलसिंह इसके पश्चात् राजा रघुवीरसिंह और आजकल चंद्रप्रतापसिंह हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि नरूसिंहके दूसरे पुत्र राव लावा थे। राव लावाके ऊदा (उदयसिंह) ऊदाके सांईसिंह सांईसिंहके फतहसिंह फतहसिंहके कल्याणसिंह और कल्याण सिंहके तीन पुत्र हुए रणसिंह आसकर्णसिंह और अजयसिंह। कल्याणसिंह मिर्जा राजा जयसिंह

(आमेर)के पुत्र कीर्तिसिंहके पास रहते थे। सम्राट औरंगजेबके समयमें कुँवर कीर्तिसिंहके साथ कई युद्धोंमें कल्याणसिंहने अपने पराक्रमका अच्छा परिचय दिया जिससे प्रसन्न हो कर सम्राट औरंगजेबने इनको राजा का पद और कुछ गाँव जागीरमें दिये। कुँवर कीर्तिसिंहके परलोकगमनके पश्चात् निःसहाय और दुर्दशाग्रस्त हो कर आमेर आये। यहाँ इनको राजकी उपाधिके साथ माचेड़ी नामक ग्राम जागीरमें मिला इसके साथ ही डेढ़ ग्राम और मिला। इस प्रकार कुल ढाई ग्रामकी जागीर मिली। कल्याणसिंहके पश्चात् इसका उत्तराधिकारी आनंदसिंह हुआ। आनंदसिंहका तेजसिंह तेजसिंहका मुहब्बतसिंह, और मुहब्बतसिंहका उत्तराधिकारी प्रतापसिंह हुआ। यह प्रतापसिंह बड़ा पराक्रमी कुशल साहसी एवं महत्वाकांक्षी था। इसने ही अलवर राज्य स्थापित किया। इसका वृत्त इस प्रकार है कि जयपुरके तत्कालीन महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथमसे इनकी किसी बातमें अनबन हो गई। यह अपनी ढाई ग्रामकी जागीर माचेड़ी छोड़ कर भरतपुरमें जवाहरसिंह जाटके पास चले गये। वहाँ कुछ समय रह पाये थे कि जयपुरकी सीमामें बिना पहिले सूचना दिये चले आनेके कारण जवाहरसिंह जाट और सवाई माधवसिंह प्रथममें मांवड़के मैदानमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें प्रतापसिंहने अपनी सेना सहित जयपुरका साथ दे कर बड़ा पराक्रम प्रदर्शित किया जिससे महाराजने प्रसन्न हो कर माचेड़ीकी जागीर वापिस दे दी। महाराज सवाई प्रतापसिंहसे फिर इनका मनमुटाव होगया। इस कारण महाराजने फिर माचेड़ीसे निकाल दिया। अब यह सीधा देहलीके बादशाह शाहआलम द्वितीयकी शरणमें गया। शाहआलमने इसका अच्छा आदर सत्कार किया। उसने सं १८२७ वि में महाराव राजाकी पदवी पंच हजारी मनसब और माहीमरातबके साथ माचेड़ीकी सनद कर दी। जिससे जयपुरसे स्वतंत्र होनेका अवसर प्राप्त हो गया। फिर इसने समय पा कर जयपुर और भरतपुरके परगने दबा लिये और सं १८३२ वि में भरतपुरसे युद्ध कर अलवरका प्रसिद्ध और परगना भी छीन लिया इसके पश्चात् अपनी राजधानी माचेड़ीसे अलवरमें बनाली। यह सं १८४० वि में निःसंतान मरे, अतः थाना ठकुरके पुत्र बख्तावरसिंह गोद आकर उत्तराधिकारी हुए। राज्यासीन होनेके पश्चात् बख्तावरसिंह तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहके पास जयपुर आए और जयपुर राजके दबाए हुए ग्रामोंको महाराजको भेंट कर दिया जिससे महाराज बहुत प्रसन्न हुए। सं १८६ में अंग्रेजोंको युद्धमें सहायता देनेके उपलक्ष्यमें अंग्रेजोंसे कई परगने राजा बख्तावरसिंहको प्राप्त हुए और इनके समयमें अंग्रेजोंसे सन् १८ ३ ई में संधि हुई थी जिसमें वार्षिक करका बन्धन नहीं रखा गया। इनके पश्चात् सं १८५१ वि में इनके पुत्र विनयसिंह सिंहासनासीन हुए, जिन्होंने ब्रिटिश [illegible] युद्धमें सहायता भेजी और सन् ५७ के गदरमें अंग्रेजोंकी अच्छी सहायता की। इनके स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र शिवदानसिंह सं १९१४ वि में सिंहासनारूढ़ हुए। इनके पश्चात् सं १९३१ वि में मंगलसिंह राजा हुए। मंगलसिंहके पश्चात् सं १९५९ में प्रसिद्ध जयसिंह गद्दी पर बैठे। ये बड़े विद्वान् प्रभावशाली एवं राजनीतिज्ञ थे। सन् १९३१ ई की गोलमेज परिषदमें इन्होंने निर्भीकता पूर्वक अपने विचार रखे जिसके कारण अंग्रेज सरकार इनसे नाराज हो गई और यह अलवर

छोड़ कर यूरोप चले गये जहाँ पेरिसमें इनका देहान्त हो गया। इनकी मृत्यु पर अंग्रेज सरकारने महाराज तेजसिंहको इनका उत्तराधिकारी नियत किया जो वर्तमान हैं।

इस पुस्तक 'कामारासा' से संबंधित नरुकावंशीयोंका परिचय उक्त पंक्तियोंमें दिया गया है। जयपुर और अलवर प्रान्तमें कई नरुके कई ठिकानेदार और भोमियाँ हैं। ये स्वभावसे ही राजपूत वीरतानुकूल शूरवीर, अप्रतिम पराक्रमी एवं उदार हुए हैं। इनकी कीर्तिपताका आज भी इनके कार्यकलापोंके कारण फहरा रही है। यहाँ तक कि नरुकोंका बच्चा बच्चा भी "पचरका बादशाह" और "तीसरे तख्तका स्वामी" कहलाता है। यह प्रसिद्धि क्यों हुई इसकी अभी खोज ठीक ठीक नहीं हो पाई है। कोई इन्हें पारथके कोई पाथरके और कोई पचरके बादशाह कहते हैं। मुझे चारणों आदि कई व्यक्तियोंसे जानकारी हुई है वह इस प्रकार है। कितने ही कहते हैं कि नरसिंहने कलावर लालाको उसकी ही कटारीसे मारा था अतः वे पारथके बादशाह कहे जाते हैं। पारथ का अर्थ डिंगलमें तरवार है पारथी छुरी कटारीको कहते हैं। निहत्थे और विजय नरसिंहने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि और कटारी चलानेकी कुशलतासे यह प्रसिद्धि प्राप्त की हो तो निःसंदेह पारथके बादशाह कहे जाने योग्य उनका यह कार्य था। कुछ यह कहते हैं कि नरसिंहने निर्वाण चौहान सौसल-देवकी पुत्रीसे—जिसका संबंध नरसिंहके साथ करनेके लिए टीका आया था और पिता राजा उदयकर्णसिंहके यह कहने पर कि यदि हम भी जवान होते तो टीका हमारे लिए भी आता उस कन्याको मन ही मन माता मान कर पितासे विवाह करा कर उस कन्याकी संतानोंके लिए राजसिंहासनका परित्याग कर अपनी पत-मर्यादाका पालन किया। इसलिए यह पचरका बादशाह कहलाने लगा। तीसरे तख्तके स्वामी के लिए यह कहा जाता है कि निर्वाण चौहान सौसल देवकी पुत्रीसे राजा उदयकर्णसिंहके दो पुत्र थे। बड़े नृसिंह और छोटे बालोजी। नृसिंह आमेरके स्वामी हुए। वे अन्धे ही थे। कलावर लालाके मारे जानेके पश्चात् आमेरराज्यके चारों बेटोंने (नरसिंहके अतिरिक्त) आमेर राज्यके तीन बराबर विभाग कर तीनों भाइयोंमें बटवा दिये। आमेरके स्वामी नृसिंह रहे बालोजी अमरसरके और तीसरे विभागके स्वामी नरसिंह हुए। तबसे तीसरे तख्तके स्वामित्वका संबंध इनके और इनकी संतानोंके साथ किया जाता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि किसी मुगल सम्राटने किसी नरुका सरदारसे प्रसन्न होकर पचरके बादशाह और तीसरे तख्त की उपाधि दी थी। एक सज्जनसे यह भी सुना कि सम्राट अकबर एक बार महाराणा प्रतापसे जंगलमें एक एकान्तमें पत्थर पर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे उस समय कोई नरुका सरदार उधरसे आ निकले। वह बड़े निर्भीक वीर और तरवार चलानेमें बहुत कुशल थे। सम्राट अकबरने उनका यह कहकर स्वागत किया आओ पारथ के पातसाह विराजो नरुका सरदारने कहा कि आप दोनों सम्राट तो अपने अपने तख्त पर विराजमान हैं मेरे लिए स्थान कहाँ है। इस पर सम्राट अकबरने उसे एक पत्थरकी ओर इशारा करते हुए कहा कि आपके लिए भी यह तख्त है। इन बातोंको देखते हुए कुछ कहा नहीं जा सकता कि सत्य क्या है? यह विषय

खोजकी अपेक्षा रखता है। अस्तु, कुछ भी हो यह प्रसिद्धि तो इन नरूकोंके साथ है ही।

नरूका वंशीय राजपूत राजपूतोंमें प्रसिद्ध वीर, पराक्रमी एवं साहसी हैं। इनके सत्साहस व शौर्यपूर्ण कार्योंके कारण कई कहावतें इनकी प्रशंसामें प्रचलित हो गई हैं। उनमेंसे ये दो अत्यन्त उच्च कोटिकी हैं—

(१) नरूकोंको नरूका मारे, और के मारे करतार।"

(२) "नरूको कटारी म्यान बांधे तखतका बखीसू तोड़ नांखें।"
वास्तवमें इन नरूकोंके यशका वर्णन कई कवियोंने कई प्रकारसे कर मां भारतीकी सेवा की है। प्रस्तुत ग्रंथ "लावारासा" में वर्णित प्रसंगोंके समय पिंडारी व पठान दस्युओंके आतंकसे राजस्थान बड़ी ही डांवाडोल स्थितिमें हो गया था। स्थान स्थान पर राजस्थानीय जनताके जानमालकी बहुत ही हानि हुई थी। इन दस्युओंका दमन करनेकी शक्ति उस समय किसी भी राजस्थानीय रियासतमें नहीं थी। ऐसे विकट अवसर पर इन नरूकाओंने स्थान स्थान पर केवल अपने बाहुबलसे इन क्रूर दस्युओंसे मुकाबला कर जो वीरत्व प्रदर्शित किया है वह प्रशंसनीय एवं गौरवयुक्त कैसे नहीं कहा जा सकता? उस वीरत्वने कवियोंकी वाणीको जनताकी ओरसे कृतज्ञता ज्ञापन करनेके लिए बाध्य कर दिया। परिणामस्वरूप नरूकोंकी प्रशंसामें स्फुट छंदों और प्रबंध ग्रंथोंका निर्माण हुआ। क्यामत (माधोराजपुराका घेरा) और द्वितीय लावा युद्ध विषयक वर्णन अन्य कवियोंके भी प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय दे देना असामयिक न होगा।

संवत १८७४ वि में (लावा युद्धकी समाप्तिका वर्ष) महाकवि भीष्म भट्टक प्रणीत महाकवि मंडनन २१५ छंदोंमें (दोहा सवैया कवित्त चौपैया भुजंगी अरिल्ल पायाकुलक और सारम) "भारतचरित"का निर्माण किया था। इसमें सर्वप्रथम चौपैया छंदमें जगदम्बाकी स्तुति की गई है। फिर रवि कुलके वंशक्रममें प्रसिद्ध प्रसिद्ध रघुवंशियोंके नाम देते हुए, इस कुलमें नरूसिंहका जन्मवर्णन देकर भारतसिंहके पूर्वजोंके नाम प्रशंसा सहित दिये गये हैं। कविके अनुसार उनका क्रम इस प्रकार है—नरूसिंह लाला करमचंद, सेमसिंह कल्याणसिंह केशवदास उग्रसिंह रघुनाथ जयसिंह मुकुंदसिंह, केसरीसिंह सांवतसिंह मदनसिंह, और भारतसिंह। भारतसिंहकी प्रशंसाके पश्चात्, लावा युद्धमें जो भारतसिंहने पराक्रम दिखाया था उसका वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् क्रमसे भारतसिंहका माधोराजपुराके किलेको महाराज व जयसिंहकी महारानीसे जो महाराज मानसिंहकी पुत्री थी छीन कर अपने अधिकारमें करना महाराज मानसिंहका अमीरखांको किला वापिस दिलानेके लिए लिखना अमीरखांका भारतसिंहको किला वापिस दे देनेके लिए लिखना भारतसिंहका अवसर पा कर अमीरखांके बीबी बच्चोंको पकड़ कर माधोराजपुरेके किलेमें ला कर

इस युद्धमें सहायताके लिए जो आये उनके नाम गिनाये और अकबरकी सहायताका और उसका युद्धवर्णन दे कर अंतमें जगतसिंहकी प्रशंसामें ग्रंथ समाप्त किया है।

अब अंतमें यह सूचित कर देना उत्तम होगा कि इस ग्रंथके पृ ९ के छन्द संख्या १४ में पृ ११ के छंद संख्या ४१ में और पृ २१ के छंद संख्या १५ में जो स्थान रिक्त दिखाये जा कर पदोंकी अप्राप्ति दिखाई गई है वह ठीक नहीं है। वास्तवमें मेरे पास जो हस्तलिखित प्रति थी उसमें दोहा सोरठा और छप्पय छंदके अतिरिक्त पद्धरि, मोतीदाम भुजंगप्रयात आदि छंदोंके दो दो पदों पर ही छंद संख्या दी गई है। यह मुझे ठीक मालूम न होनेके कारण छन्दशास्त्रानुसार छंदके चार चार चरण ले कर मैंने पदों पर छंदकी संख्या दी। इस प्रकार करनेसे इन छंदोंमें कहीं बाद एक चरण कम हो गया मैंने यह समझा कि प्रतिलिपिकारकी भूलसे यह चरण लिखनेसे रह गये हैं अतः भविष्यमें दूसरी प्रति मिलने पर ठीक कर सकने के लिए रिक्त स्थान दिखला कर पद कमीकी सूचना दी। किन्तु पुस्तक प्रेस में चले जाने और मुद्रित हो जाने पर श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी महाराजको राणारासाकी एक अन्य प्रति श्रीयुत ठा सौभाग्यसिंह जी भगतपुराके सौजन्यसे प्राप्त हुई, उसे देखने पर सब समझमें आ गया। कवित्त मोतीदाम पद्धरि, भुजंगी त्रिभंगी आदि छंदोंके १०–१२–१४ जितने भी पद बनाये उनकी एक ही छंद संख्या दी है। अतः अन्य प्रतिके अभावमें यह जो भूल हो गई उसके लिए पाठक क्षमा करेंगे।

इस ग्रंथ 'राणारासा'में शब्दार्थ व टिप्पणियोंके देनेमें मुझे स्वर्गीय श्रद्धेय हिंगलाजदानजी सेवापुरा वालों तथा श्रद्धेय ठाकुर मुरारीदानजीसे पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जाय कि यह कार्य इन्हीं दोनों महानुभावोंका है तो भी कुछ अनुचित नहीं होगी। मैं तो आप दोनों महानुभावोंकी कृपाके लिए सदा ही ऋणी रहूँगा। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की भूमिका लिखनेमें श्री हेनरी टी प्रिसेप साहबके अमीरनामेके अंग्रेजी अनुवाद, ठा नरेन्द्रसिंहजीके Thirty decisive Battles मुन्शी देवीप्रसादजीके "नामेके राजा" श्रीहनुमान शर्मा चौमूके नाथावतोंका इतिहास श्री नाथूराम खड्गावतके "इतिहास राजस्थान" और श्री अगरचन्दजी नाहटाके तवारिखे महमूदाबाद "से सहायता ली गई है। अतः इन महानुभावोंका अत्यन्त ऋणी हूँ। भूमिकाके संशोधनमें श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी महाराजका पूर्ण हाथ रहा है तथा पुस्तकके प्रूफ संशोधन और संपादन कार्यमें उचित परामर्शके लिये श्री पुरुषोत्तम लालजी मेनारिया साहित्यरत्न और श्री गोपालनारायणजी पारीक एम ए का पूर्ण आभारी हूँ।

वास्तव में प्रस्तुत ग्रन्थको इस रूपमें प्रकाशित करने-कराने का सब श्रेय श्रद्धेय मुनिजी महाराज श्री जिनविजयजी को है जिनने राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थमाला द्वारा इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर और समय समय पर कई प्रकारकी प्रेरणाएं दे-कर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं इसके लिये अन्तमें पुन मुनिजी महाराजके प्रति अपना अनन्य कृतज्ञभाव प्रकट करता हूँ।

–महताब चंद्र खारैड़

कविया गोपालदान विरचित

# कूर्म वंश यश प्रकाश

अपर नाम

## लावा रासा

—•—

**दोहा**

अलिक हनु कुंजर तुचा मुंडमाल वपु छारि।
अहि भूषन विजया भखी जय जय जय त्रिपुरारि ॥१॥
किये नरुकन किलम गिरि फिरे जुद्ध उमत्त।
प्रथम मान' 'जगतेश'की कहूं केलि कलहंत ॥२॥
जग प्रसिद्ध जयसाह' नृप तिनके 'माधव' नरेश।
माधव'के परताप' नृप पालिलके जगतेश ॥३॥
उठी मान' पति जोधपुर जैपुर-पति जगतेश।
पर्‌यो बेध नृप दुहुन उर हिय कपिय दुहु देश ॥४॥

१ अलिक = अलीक निष्कलंक। कुंजर = हाथी। तुचा = त्वचा, चमड़ा। छारि = राख। विजया = भंग। भखी = खाने वाले।

२ नरुकन = नरूके राजपूत। किलम = कलमा पढ़ने वाले मुसलमान। गिरि = गिर कर। मान = जोधपुर नरेश मानसिंह राठौड़ जिन्होंने सं० १८६० से १९०० तक राज्य किया। जगतेश = जयपुरेश जगतसिंह कछवाह जिन्होंने सं० १८५८ से १८७४ तक राज्य किया। कलहंत = युद्ध।

३ जयसाह = सवाई जयसिंह जिन्होंने जयपुर बसाया और अनेक स्थानों पर ज्योतिष यन्त्रालय बनाए। माधव = महाराजा माधवसिंह प्रथम जिन्होंने सम् १८०७ से १८२४ तक राज्य किया। पालिल = महाराजा प्रतापसिंह ब्रजनिधि कवि।

४ उठी = उस तरफ। बेध = शत्रुता।

चाँपावत पोकरण-पति, प्रबल सवाई सिज्ज ।
बदल चढ़्यो नृप मानसो बह्यो कलहको बिज्ज ॥५॥

कमह बिज्ज ता दिन बह्यो सारो धूकल साथ ।
आनि मिल्यो जगतेश सूं यम जुध करिय उपाय ॥६॥

साम दाम छल-छिद्र करि नृप हिय रुचि उपजाय ।
मनहु मेघ बसि बात मढि चढ़्यो कच्छ-कुलराय ॥७॥

चढ़्यो सुनत 'जगतेश कों कही मान' यह बत्त ।
हय फेरहि कछवाह घर जीति करहि अपदत्त ॥८॥

### छंद नाराच

चढ़्यो नरिन्द मानय उदै दिशा प्रयानय ।
मनो समुद्र ऊमले रठौर आनि के मिले ॥९॥

बजे निशान नद्दयं मनो कि घोर भद्दयं ।
उछाह जुद्धको भयो कनोज ईश यों चढ़्यो ॥१०॥

सुभट्ट सस्स सक्करं लसग लक्ख पक्खरं ।
धरा धकोल झुल्लयं गजू निशान खुल्लयं ॥११॥

---

५ पोकरणपति = पोकरण (मारवाड़) के स्वामी सवाईसिंह । सिज्ज = कोधित होकर । बद्दल = विरुद्ध होकर । बह्यो = बोया गया । बिज्ज = बीज ।

६ सारो = पीछे । धूकल = धोंकलसिंह जिनको जोधपुरकी गद्दीका हकदार बनाकर युद्ध हुआ । यम = इस प्रकार ।

७ बात = हवा ।

८ बत्त = बात । हय = घोड़ा । अपदत्त = अपदस्थ अपमानित ।

९ उदै दिशा = पूर्व दिशा । ऊमले = उमड़ना उफनना मर्यादा छोड़ना ।

१० नद्दयं = नाद शब्द । भद्दयं = भाद्रपदके मेघ । यों = इस प्रकार । कनोज ईश = राठौर पति मानसिंह ।

११ सस्स सक्करं = श्रेष्ठ शाखाके । लक्ख = देख कर । पक्खरं = पाखर । गजू = हाथियोंके ।

रजीनि भान ल्हकयो मनुऽधकार मुक्कया।
बिछोह चक्क चक्कयं, अनेक बीर बक्कय ॥१२॥
बिमान व्योमतं भुरें अनेक रंभ उत्तरें।
महेस मुंडमालको, चल्यो करीनि सालको ॥१३॥
असोम जत्र लैं मुनी, प्रलापि बीरकी धुनी।
मनूंक बालकों गुडी अनेक अद्धनी उडी ॥१४॥
सरब्बतं चमू जुरे परब्बत सर परे।
उडीक मान क पती चढ्यो न क्यों जगत्पती ॥१५॥

दोहा

यम आगम सुनि 'मान'को 'परवतसर' जुध थप्प।
अपन तुझ कछवाह-कुल, मिले आनि अप अप्प ॥१६॥
'अभयसिंह' नृप खेतडी चढे जु दलको सज्जि।
लिछमण' चढियो 'महणसर' पूर नगारे बज्जि ॥१७॥

छप्पय

'रायचंद' दीवान 'रावचंदह' गोगावत।
लख्यो फतेपुर नाथ, रावराजा सेखावत ॥
राजापति 'खंडपुर, नवल दांतां पति निडुर।

---

१२. रजीनि = रजसे। भान = भानु सूर्य। मुनऽधकार = मानो अंधकार। मुक्कयो = छूट गया हो फैल गया हो। बिछोह = वियोग। चक्क = चकवा। चक्कयं = चकवी। बक्कयं = बोलने लगे।

१३ रंभ = अप्सराएँ। करीनि = हथनियोंकी। सालका = चमड़ेके लिए।

१४ असोम = अरात मारवकी मीरणाका नाम। बाल = बालक। गुडी = पतंग।

१५ सरब्बतं = सब। चमू = फौज। परब्बतं = पर्वतसर गांव। उडीक = प्रतीक्षा, इन्तजार करना। पती = इतनी।

१६ यम = इस प्रकार। थप्प = स्थापित करके। अपन तुझ = तरपन शाखाओंके। अप अप्प = अपने आप।

१७. खेतडी = राजपूतानेमें शेखावाटी प्रांतका एक प्रसिद्ध नगर जिसके शासक राजा कहलाते हैं। महणसर = शेखावाटीमें ठिकानेका एक गांव।

पट्ठरको पति साह मीम' 'उनियारे' मड्डर ॥
धूलो' 'भिलाय' राजावता, नाथावत' सांगा मिले ।
जोधपुर कमन दिल्ली तखत, एक पहर विष उत्थले ॥१८॥
त्रेपन सुठ कछवाह साख सासारा सुभट्टां ।
हैदल पैदल मिले यवन हिन्दु गज थट्टां ॥
'बीका पति सुरतेश' आनि मिलियो मधि जैपुर ।
रहे आनि हकदार किते गजबंध नरेसुर ॥
हैदराबाद सिंधी हुलसि सबल जानि सरनो गह्यो ।
हुय दीन तदिन जगतेसके मीरखान चाकर रह्यो ॥१९॥

दोहा

मीरखान चाकर रह्यो जदन भूपके सत्थ ।
तदन बध्यो भट बीज लों कहूस आगम कत्थ ॥२०॥

छन्द त्रोटक

जगतेश फवज्ज प्रबधु करे भुव कंपित भार गिरीश डरे ।
मन मान महीपनके प्रजरे किनपै वसधा-पति कोप करे ॥२१॥

---

१८. खवो = लक्ष्मणसिंह सीकरके राव राजा । खंडुर = खण्डेलेके स्वामी । नवल = नवलगढ़के स्वामी । दांता पति = दांता नामक ठिकानेके स्वामी जो जयपुरसे पश्चिम में है । निधुर = निन्दर । पट्ठरपतिसाह = मरुके राजपूतोंको पाधरके बादशाह कहते हैं । उनियारे = जयपुरसे दक्षिणपूर्वमें है । धूलो = यह जयपुरसे पूर्वमें है । भिलाय = यह जयपुरसे दक्षिणमें है । ये सब जयपुरके ठिकानोंके नाम हैं । उत्थले = उथलना, विजय करना ।

१९. हैदल = घुड़सवार फौज । थट्टां = समूह । बीकापति सुरतेश = बीकानेरके स्वामी सुरतसिंहजी जिन्होंने सं० १८४६ से १८८५ तक राज्य किया । मीरखान = अमीर खां पठान जिसको अंग्रेजोंने इस युद्धके पश्चात् टोंक आदि इलाका निकालकर नवाब बनाया । चाकर = नौकर । हैदराबादी सिंधी = हैदराबादी रिसाला नामक सेना एक जो रुपयेके प्रलोभनसे लड़ा करता था और लूटमार करता था ।

२० जदन = जिस दिन । सत्थ = साथ । तदन = उस दिनसे । बध्यो = बढ़ा । भट बीजलों = वह दूजके बीजकी तरह ।

२१ फवज्ज = फौज सेना । मान = मन्य । प्रजरे = प्रज्वलित हुए ।

सब दानुनके उर शोक बढ्यो करि कोप कठी कछवाह चढ्यो ।
झप झप्प उकीलन खत्त लिखे, जयनम्र मढोवर ईश षखे ॥२२॥
धखि सोयन कोयन खून भरे दहुर्घा उमत्त मतंग भरे ।
करि कोप चढ्यो नृप मान उठी उमड्यो घनलो कछवाह अठी ॥२३॥
सुनि ठोर परी सदनद्दनके परि ढिल्लिय सोर रवद्दनके ।
सब सूर सनाहनि टोप सज लखि आतुर कातर प्रान तज ॥२४॥
सत पच करीगन कोर बने मनु कज्जल कूट धरागमने ।
लख तीन हय सपतासनती, रथ पंक्तिनकी न भई गिनती ॥२५॥
अयुत शर उटन मोर भरे शत षोडश तोप तयार करे ।
जकरे शत ओम जवान भुजा करि मजन धूपि नवीन धुजा ॥२६॥
द्विज आनि लिखे जय जन्त्र जिते पढ़ि के शत चंडिय जाप किते ।
मुख मढि सिंदूरनि रत्त किये अज एड महिष्यन भक्ख दिये ॥२७॥
जरदोजनि हेम ध्वजा सरफं तड़िता घन बीच मनो तरफं ।
ललकार मुखां सब जुट्टि लगी इभ भप्पनि वायनि सी उमंगी ॥२८॥

---

२२. कठी = यहां किस पर । उकीलन = वकीलोंको । खत्त = खत, पत्र । षखे = कोपित हुए ।

२३ धखि = कोप करके । मतंग = हाथी । उठी = उस तरफ । अठी = इस तरफ । दुहुर्घा = दोनों तरफ ।

२४ सदनद्दनके = युद्धके नगारे । ढिल्लिय = दिल्ली । रवद्दनके = मुसलमानोंके । सूर = शूरवीर । सनाह = बख्तर । कातर = कायर । ठोर = चोट ।

२५ सतपंच = पांच सौ । करीगन = हाथियोंकी । कोर = किनार, पंक्ति । लखतीन = तीन लाख । सपतासनती = सप्तारवोंके संबंधी ।

२६ अयुतं शर = पन्द्रह हजार । जकरे = पकड़े हुए । ओम = ओरा । धूपि = धूप खेकर सोर = बारूद ।

२७. अज = बकर । एड = मेंढा । महिष्यन = भैंसे । भक्ख दिये = बलि दी ।

२८. सरफे = सर सराते हुए, हिलें । तड़िता = बिजली । इभ = हाथी ।

मरि पेटिय सोर महोरह की, मछ धूकर बाघ मुखी मलकी ।
मग दीरघ तोप किती मचले उन्मत्त करीगन आगि टले ॥२९॥
भिरि पाहन नालन आगि झरै हय-पौरन भूमि दरार परैं ।
सर वापिय कुप्पन सुक्ख परै, थलबित्थुल नीर थलो निकरे ॥३०॥
मुनि सिधुनि तोय ततो उछरे कुमि दीरघ भद्रिन भंग भिरे ।
सिर सेस हजार मनी सरकी भर पीठ कमठ्ठुकी थरकी ॥३१॥
गजराजनि पिठ्ठि निसान खुलें बर्षा ऋतु मानहु साँझ फुले ।
मनु पाय पताक किते उरझे उडि बात समूह मतैं सुरझे ॥३२॥
भुव जन्तु मृगादि थके पकरैं नभ जन्तु परैं थकि भूमि परैं ।
उडि रज्ज धरा असमान गई मनु भूमि पुकारन भार भई ॥३३॥

पचरंग रठौरनि विठ्ठिरिय किय आनि मुकामहि मिठ्ठरियं ॥३४॥

दोहा

किये मुकामहि मिठ्ठरिय लूटन लग्गे देस ।
मानसिह जगतस' बुहूं जुध कज बढे नरेस ॥३५॥

छंद त्रोटक

कछवाह रठोरनि कोप बढे दुहु ओर तुरगन पिठ्ठि चढे ।
दुहु ओर गाजों सिर दाम खरी चहुं ओर नगारन ठोर परी ॥३६॥

---

२९ सोर = बारूद । महोरह की = आगे की । मछ धूकर बाघ मुखी = मच्छी, सुअर और बाघके मुखवाली तोपें । मग ... उछले = मार्गमें बड़ी ? कितनी ही तोप चल रही हैं जो मस्त हाथियोंके धक्कोंसे आगे बढ़ाई जाती है ।

३० पाहन = पत्थर । नालन = घोड़ोंकी टापमें लगा लोहा । पौरन = घोड़ेका खुर । वापिय = बावड़ियें । कुप्पन = कुए । सुक्ख परे = सूख गये । थल थित्थुल नीर थलो निकरे = थलके स्थान ..., और ... स्थान पर स्थल निकल आया ।

३१ मुनि = सात । उछरे = उ[illegible] ततो = तति समूह ।

३२ निसान = पताका ध्वज

३३ पर = परोंसे, पंखोंसे

३६ नगारन ठोर परी = नग[illegible]

दुहु ओर बनी चतुरग अनी दुहु ओर करीनकि कोर बनी ।
दुहु ओर पताकनि पंक्ति सुली दुहु ओर हलाहल कोर हुली ॥३७॥
दुहु ओर उदग्गनि खग्ग किय दुहु ओर तुरंगन वग्ग लिये ।
ठनन किय कुंजर घंट सुनि घनन किय पक्खर भट घनि ॥ ३८ ॥
हनन किय आतुर होय हय, भनन किय भेरि मयान भय ।
खनन किय खापन खग्ग सजी सनन किय गिद्दनि पख सजी ॥३६॥
झनन किय झाझर रम झुरे रनन किय तत्थ रठोर मुरे ।
तिहं ठोर रठोर अनी वदले जगतेश नरेशहु आंनि मिले ॥४०॥

## दोहा

मानहु कुलटा आनरत निज पति निबल निहारि ।
सकल मिले जगतेशसूं एक कुंभामनि टारि ॥४१॥

## छंद पद्धरी

जुट्टे न मान राजान जंग नच्चे न भूत बैताल संग ।
बज्जी न तेग तुट्टे न धाढ़ गज्जे न तोप मानहु अषाढ़ ॥४२॥
बक्के न बीर मारान भाय छक्के न श्रोन जोगनि अघाय ।
खांपन उसारि बाही न खग्ग झोकी न तेग ताजी न वग्ग ॥४३॥
बज्जे न जत्र मुनि मेक तार अच्छर अनेक गई निराधार ।
घायल असाद्धि डोले न घुम्मि सानीम श्रोनतें रंग भूम्मि ॥४४॥

---

३७. अनी = फौज । कोर = पंक्ति ।
३८. उदग्गनि = ऊँचे । खग्ग = खड्ग । वग्ग = बाग लगाम । घंट = घंटिये, कड़ियें ।
३६ खापन = तलवारका म्यान ।
४० तत्थ = वहाँ । मुर = मुड़ गये वापस गये ।
४१ कुंभामनि = कुंभामन वाले, कुंभामन जोधपुरमें एक ठिकाना है ।
४२ धाढ़ = तलवारकी धार ।
४३ भापन = युद्धमें । छक्के = तृप्त होना । बाही = चलाई । ताजीन = घोड़े ।
४४ मेक = एक । असाद्धि = असाध्य । सानी = सानना, भींगोना, गीला करना ।

दोहा

तत्ती तोप न मान किय किय न खग्ग जमद्दृढ्ढ ।
पूगो मुसकम जोधपुर गढ चढ पकरयो गढ्ढ ॥४५॥
लगो लैर कूरम कटक मानुह सिंधु हिलोर ।
किय धूंकल नागोरपति दियो जोधपुर ओर ॥४६॥

छप्पय

मास त्रिगुन मोरचे जग मंडोरहि मंडिय ।
करि मुरधरा विरान 'मान' भुव हुक्म उथंडिय ।
दे धूंकल नागोर थान थाना ग्रप थप्पिय ।
मानव पगां मिलाय पहुमि राठोरन अप्पिय ।
नृप मान रह्यो तप बल तवन धर्म रठोरन धारियो ।
जोधपुर हुत जगतो नृपति फिरि जयमय पधारियो ॥४७॥
तोरन कलस पताक तानि वितान धरोधर ।
राजा द्वार उद्दार इद्र आगार सरोभर ॥
हाटकमय आवास जटित मानिक मोताहल ।
दर परदे जरदोज सयन अतलस्सु मुखमल ॥
खुलि यत्र यंत्र धारा बलित मिलि कपूर केशर मलय ।
शीतल सुगंध आनंदमय मंद मंद मारुत चलय ॥४८॥
भूपति चित भामनी देह दामनि धरि दमनि ।
मानहु कामनि काम रंभ लाजि होत अधमनि ॥
मिलि समूह गायनी गमम उनमत्त करीसम ।
खरी भूप बसिकरन आनि सब इद्र परी सम ।

---

४५ तत्ती = गर्म । जमद्दढ्ढ = कटारी ।
४७ उथंडिय = हटाकर । अप = अपने ।
४८ यंत्र यंत्र = फंवारे फंवारे ।

वीणादि मधुर इत्यादि वर, सुखद लाय ध्वनि सुर्च्छना ।
पचम निपाद सगीत मिलि, ग्राम ताल सुर मुर्च्छना ।।४६।।
मक लचकि कुच उचकि नृत्य गति मग्र सरस चलि ।
डुलि कुंडल चख चलित,उरझि कुंतल हारावलि ।।
भग उलटि पट पलटि कबु ग्रीवा करि बकित ।
धृ ग धृ ग ततथेय, बजत मजीरनि सकित ।।
सुर पच अष्ट वय भेद तिय पंच भावत्रश हाव युत ।
नृपति प्रवीन रति कोक विधि दिन छिनवा सभोग रत ।।५०।।
नहिं मढ़ै दरबार रहत भूपति महलपुर ।
कूरम वल बिस्थुरिय गमन मय अप्प घरोघर ।।
मत्त आसव उनमत्त कमठ-कुलपति कामासय ।
रसकपूर' वस भयो एक रस उर अभ्यासय ।।
यम सुनिय वत्त पति जोधपुर जैपुर पति नन सज्जियो ।
नृप मान तदन अवनिय अदन, मीरखांन मत्री कियो ।।५१।।
कपट द्रोह करि किलम प्रथम मारुस्थल लुट्टिय ।
बहुरि आन नागीर दगै स्वाई' सिर कट्टिय ।
तज धुंकल' नागोर मान मय मानस भग्गो ।
भयो तदन दमजोर म्लेच्छ असमानह लग्गो ।।
नृप मान वधु हुई मानकथ किलम कुप्पि कींनो कहर ।
करि बद्ध प्रबल असुरगन फिर लुट्टिय ढुंढार घर ।।५२।।

इतिश्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल दान विरचिता मान जगतेश विरुद्ध प्रथम प्रसग समाप्त ।

---

४ सुर पंच अष्ट वय = तीन पाँच आठकी उमर वाली पाडशवर्षीय बाला ।

४१ रसकपूर = जगतसिंहकी वेश्याका नाम । अवनिय = पृथ्वी राजधानी । अदन = अदिन, बुरे दिन ।

५ कथ = बात । कहर = गजब ।

## लावा युद्ध

### दोहा

एम भान जगतेसको, बरन्यो सुगम विरुद्ध ।
लर्‌यो प्रथम लावै किलम जिहि बिधि बरनूं जुद्ध ॥१॥

### छन्द पद्धरी

जगतेश भूप रनवास रत्त दस जोरि किलम आयोऽनुमत्त ।
प्रज्जानि दयो दुख एक साथ सब लूटि लिये रिपु करि अनाथ ॥२॥
उतपात असुर किन्ने अपार सम करी भूमि प्रज्जारि छार ।
मधुपुर निवास रहवें न पाय सब दीन बसे गिरि दरिन जाय ॥३॥
द्विज संत बनिक वृत कियो छीन सुरभी समहु रिपु घेरि लीन ।
हिरनाक्ष जेम कीमी हैरान बहवे न धर्ई भू भइ बिरान ॥ ४ ॥
प्राकार ईश तब के गुमाम भर दंड मिले सब आनि भान ।
कामांध भूप किय बधिर कान सब देश भयो चल दल समान ॥ ५ ॥
निज थान थान थाना जमाय अपनाय भूमि वृढ़ करत पाय ।
यम करत उपद्रव ससकुलीक आयो निसक लावा नजीक ॥६॥

### दोहा

संग प्रबल चतुरंगनी सुपक तोप तम्माम ।
येम असुर 'लावा' निकट किनू आनि मुकाम ॥७॥

---

४ बहवे=कृषि करना जोत बोलना ।

५ चल दल=पीपलके पत्ते ।

६ सस कुलीक—शुद्ध वंशवाला । नजीक—नजदीक पास ।

## दवावैत

जिस वक्त मीरखान, महलकार दिल मालीक बुलवाये, बड़े बड़े मीरजादे, अपने डेरूसे चलि आये। कमर्दीखान जाफरीखान, मीरजहान मीर असमानखान यकतारखान तरार कनल असेर बाई दस्त बाई फिर दाहनी दस्त समसेर। उसके बीच मीर मन्नु अरज गुमराई इस किल्लेमें बहुत सी मालियत बतलाई। अपनी फौजका भय मान इन रजपूतोंको जबरदस्त जान इन गाऊंके वकास जिसके ये हाल हवाल। तमाम इस किल्लेमें आया, जिससे अपना है पाया। हुक्म हो इससे मामला ठहिरावें हुक्म होय फजर किल्ले गरदावें। जिसवक्त बोले मीर मुल्ला नवावके बच्चा बहुत सच्चा, मामले ठहिरायवेकी बात सच्ची किल्ले गदरायवेकी बात कच्ची ये हिन्दु कछवाहे कौम नरके तेग तेगके मुहेंमें सावत कहुं न चूके कत्लके रोज नारनोलके पासे द्वादस हजार सैयद* सांभरके खेत आये जिसपे आमेर वा जोधपुरके महाराज दोऊ सल्लाह करि जग करिवेको चलाये। हिन्दु मुसलमानके तीन पहर तलवार चल्ली आफतावका तेज मंद हुआ बारूदकी धूमसे रात

---

दवावैत—यह एक गद्यका प्रकार है, इसमें अन्त्यानुप्रास मध्यानुप्रासका प्रयोग किया जाता है। यह दो प्रकारकी होती हैं। प्रथममें तो मात्राका कुछ नियम नहीं होता है और दूसरीमें २४ मात्राओंका एक पद बनाया जाता है। विशेष जाननेके लिए "रघुनाथरूपक" पुस्तक देखनी चाहिए। यह पुस्तक "काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी" द्वारा प्रकाशित हुई है।

वकास—बसिये। पाया—पैर। गरदावे—घेरा देना। तेग तेग—दान देनेमें और तलवार चलानेमें। सावत—सम्पूर्ण।

*मुगल सम्राट औरंगजेबकी मृत्युके पश्चात् शाहजादा आजम और शाहजादा मोअज्जममें शाही तख्तके लिये युद्ध हुआ। इस युद्धमें शाहजादा आजम उसका पुत्र बेदारबख्त मारे गये। अतः शाहजादा मोअज्जम बहादुर शाह के नामसे शाही तख्तका अधिकारी होकर बादशाह हुआ। इस युद्धमें महाराजा आमेर जोधपुर कोटा और बरवर शाहजादा आजमकी ओर थे। इस कारण बादशाहने नाराज होकर आमेर और जोधपुरको खालसा कर लिया था। और वहाँके प्रबन्धार्थ महाबतखां फौजदार और सैयद हुसेनखां फौजदार को नियुक्त किया। दोनों नरेशों (जोधपुर और

मिल्ली। सयदकी फौज सिरजार जानी, राठौर कछवाहोंकी फौजने हार मानी। हिन्दूकी फौज सिक्स्ति लाई यह बात नव्वाब सुन पाई। उनियाराके सग्रामसिंह चोरुके हरनाथ लदानाके केसरीसिंह तीनों एक साथ। द्वादस हजार सैयदकी फौजप सात हज्जार सोक्षार पटका, मद रहमत उस सयदको एक पहर फेर भी भटका। फिर सयद तो भागे सैयदू के पीछे ये नव्वके लागे। बादशाहोंने माही मुरातब फौस मुहे निशान सिलै सारा सब। उस सैयदका असबाब छीना, आमेरके महाराज जयसाहको साथ दीना। सब हिन्दुस्तानम सराह पाया, जयसाहने कायदा वधाया। फराबीन सजर कटार फरी पिस्तोल तलवार तमाम आमुधों सुद्दे सलाम की परवानगी पाई। असेव चौक सिरे ड्योढी तक इसके नगारो पर परै घाई। ऐसे उनियारा'के राजा जिसके तौर, तैसे ही लदाना' के पाटवी सबके सिरमौर। लदाना'के 'मदनसिंह' जिसका जाया कवर 'भारथसिंह' बहुत तेज बतलाया। 'लदाना' 'लावा', 'चोरू' पचाला' महूरथों' म्हाफ सेरोंका माला। लावासे जग जुरोग, ये वेका बरबाद करोगे।

---

आमेर)ने महाराणा उदयपुरसे सहायता प्राप्त कर पहिले जोधपुरको अपने हस्तगत किया। इसके पश्चात् आमेरको हस्तगत करनेके लिये चढ़ाई की। इस युद्धमें हुसेनखां का पुत्र मारा गया और वह स्वय मारा गया। इसके पश्चात् दोनों नरेश अजमेरकी ओर बढे और सांभरके निकट मुगल फौजदारोंसे उनकी मुठभेड हुई। इस स्थान पर मेवातका फौजदार तथा हुसेनखां अपने दोनों पुत्रों सहित मेवातके फौजदार अहमद सैयदखां और नारनोलके फौजदार मुहतवखां सहित मुकाबलेके लिए आ डटे। इस युद्धमें राठौर और कछवाहोंकी सेना परास्त हो गई। और सैयदोंकी सेना खुशियाँ मनाने लगी। इधर उनियाराके राव संग्रामसिंह अपने अस्सी वन्धुओं सहित एक टीबेके पीछे दूसरे दिन युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये डेरा डाले हुए थे। रावजी शिकारके बहुत शौकीन थे। अतः इनके साथ ५० शिकारी योद्धा और ५०० सधे हुए शिकारी कुत्ते हर समय साथ रहा करते थे। इस समय भी वे साथ थे। इसके अतिरिक्त १५ [illegible] और योद्धा और थे। दूसरे दिन प्रातः काल युद्धमें सम्मिलित होनेके लिए टीबे पर चढ़कर नीचे उतरने लगे वैसे ही सैयदोंकी सेना दिखाई पड़ी। रावजीने ५ शिकारी कुत्तों और अपने वीर बन्धुओं सहित सैयदों पर आक्रमण कर दिया और एक भी शत्रुको जीवित नहीं छोड़ा। इस प्रकार राठोड़ और कछवाहोंकी प्रथम दिनकी पराजयको विजयमें परिणित कर दिया। आमेर नरेश सवाई जयसिंहने जब इस विजयके समाचार सुने तब एकाएक उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। जब रावजीकी बातें उन्हें ज्ञात हुई तब वे अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। और रावजीके निर्णयानुसार आधी सांभर पर जोधपुरका अधिकार स्वीकार कर लिया। यह युद्ध सन् १७०८ ई० ता० ३ अक्टूबरको हुआ था।

### दोहा

बरज्यो मीर मुलाह सब असुर न मानी एक।
जग जुरिवा 'लावै जदन ऊठे असुर अनेक ॥८॥

### छंद पद्धरी

यम सुनत बत्त अजरयो नबाव परि तप्त तेल जनु बूंद माव।
किय रक्त नैन भ्रकुटी करूर, कहि जुरहु जग लावा' जरूर ॥९॥
यम सुनत मात्र बोले जवान सब करहिं कोटि भूमी समान।
कहि 'गाधखान लरि करहि वाट, उन्मत्त फील तोरहि कपाट ॥१०॥
करनैलखान' यम कहिय आय, दे सुरग कोट देहुँ उडाय।
जमशेर कही चहुँ कोर रुहि फिर लाय नसैनी परहि कुहि ॥११॥
'ममरेजखान' बोल्यो रिसाय गढ़ करहु सफा तोपन लगाय।
'असमानखांन' कह सुनहु इक्क सब धसहु फोज किल्ल नजिक्क ॥१२॥
'मुलतानखांन यम कही बात ह्वा जाय सेन सब तूल पात।
भासून' कही रजपूत ठाठ बीरामि बीर गढ बहुत गाढ ॥१३॥
बहु तोप कमूरन करत केल सब रध्र रध्र जम्बूर मेल।
वारूद बहुत सीसा समेत करिहू निसक रनबीर खेत ॥१४॥
फिरि कर्‌यो गाढ़ सगर लगाय जो मर्‌यो बहुत सो निकट जाय।
उन्नत सफील परिखा अथाह, भरि भूमि देत रजपूत राह ॥१५॥

---

(९) तोखार=घोड़े। जुरे=सहित साथ। सपाह पाया=प्रशंसित हुए। करावीन=करावीन एक प्रकारकी बंदूक। फरी=ढाल पटा। ड्योढी दलग=ड्योढी तक। भाइ=कोट। महरचों मधक=मार्गोंके नाम। सेरोंका भासा=शेर(सिंहों)के स्थान। भरज्यो=मना किया।

(१३) तूल=रुई। पात=पत्ते।

(१४) जम्बूर=एक प्रकारकी छोटी तोप।

(१५) संगर=संगठन करके। सफील=कोट। परिखा=खाई।

'मासून' कही मानी न एक कोप्यो नवाब नहीं तजी टेक ।
ललकारि तोप छूटी लगाय, गढ़ घेरि लयो चहूं फर आय ॥१६॥

छप्पय

यम सुमान उच्चर्यो, येम सलसाह उचारे ।
यम अक्खो 'खलवत', यम सादूल' बकारे ॥
यम बुल्ल्यो 'हनुमंत', ईस महुकम यम बुल्ले ।
मार-मार उच्चार सार सिप्फर कर झल्ले ॥
सरमीरखान आगन्तु हम अरिगन वारन सुट्टि है ।
तुट्टे न कोट मृगराज यहि सार-धार सिर तुट्टि हैं ॥१७॥
कवन भूमि उत्थलहि कवन सर नीर मथावें ।
कवन कालमि गहीं, कवन गिरि मेरु उचावें ॥
कवन उरग मनि लेत कवन असमान उचंहें ।
कवन वात कर गहैं कवन 'माव' जुद्ध महें ॥
परलोक जाय आवै कवन कवन मीच-माले गवन ।
कठीर कठ हिम कठ लौं कर पसारि घल्लै कवन ॥१८॥

दोहा

सुनि सलसाह' 'सुमानसी' करो विलंब न काय ।
कहि ठाकुर घर अप्पनी ऊभां पगां न जाय ॥१६॥
सिर साटै घर लेत हैं ठाकुर रहो न चीत ।
फिर घर साटैं सिर दिये रजपूतों यह रीत ॥२०॥

---

(१६) टेक=जिद ।
(१७) सार=तलवार । सिप्फर=सिप्पर, बड़ी तलवार । सलसाह=नाम विशेष ।
(१८) उचावे=मस्तक पर रखना । माले=आवास स्थान । कंठीर=सिंह। हिमकंठ=सोनेका कलश ।
(१६) ऊभां पगां=यह एक मुहावरा है पैरों पर खड़े हुए ।
(२०) साटै=एवजमें । चीत=निश्चित ।

### छंद त्रोटक

इतने लुकमान झकार लय उडि धूम धरा असमान गय ।<br>
चहुँ ओर नरुकनके वलय, उलटे मनु सिंधु हिलोर लय ॥२१॥<br>
चतुरंगनि ठेलि रवद्दनकी जुद सगरची अपसद्दनकी ।<br>
जुध भार भुजानि कुमान' लय विजयी मनु भारतके समय ॥२२॥<br>
बलवत भयो बलि भद्र बली हयनापुर ज्यों सब सेन हली ।<br>
'हनुमत' बली हनुमत भये कर तोल उदग्गिनि खग्ग लये ॥२३॥<br>
अरिको दल देखि 'सदूल' उठयो, मनु केहरि सीस करीनि रुठयो ।<br>
न सहैं अरि तोप अवाज सलो' जनु बधि भयो अपु कंध किलो ॥२४॥<br>
बहु बधु बरातिय सग लये सिर सेहर केहर साज किये ।<br>
निकसे गढ़ बाहरको लरिवा अरि-सैन-कँवारियको वरिवा ॥२५॥<br>
रसवीर हुलस्य हिये उलह्यो दुलही चतुरंगनिको दुलह्यो ।<br>
कसि हुल्लय फौज किलमनकी बनि सिल्लिय टोय सिल्लंमनकी ॥२६॥<br>
किलमी चतुरंगनि येम चली कि हलाहलकी सरिता उफली ।<br>
महिके नव पानिप तुबुरय चहिके चहुँ ओरनि जबुरय ॥२७॥

---

(२१) लुकमान=ऐसा कहते हैं कि 'तोप'की ईजाद हकीम लुकमानने सर्व प्रथम की था इसलिए यहां इसका अर्थ तोप है ।

(२ ) अपसद्दनकी=नीचोंकी, अधर्मोंकी ।

(२४) सलो=सलसलित । सदूल=शार्दूलसिंह । (२५) लरिवा=लड़नेको । अरि-सैन कँवारिय=शत्रुसेना रूपी कुँवारी कन्याको । वारिवा=विवाह करनेके लिए ।

(२६) उलह्यो=उमंग ।

(२७) महिके=मथ । पानिप=प्रसंगानुसार इस शब्दका अर्थ ढोल अथवा नगाड़ा होना चाहिए । मेरी सम्मतिमें यहां 'पानिय शब्द होना उपयुक्त है जिसका अर्थ 'हाथसे मारे जाने वाला" होता है । 'महिके" शब्द नगाड़े व ढोलके बजनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है अतः यहां 'पानिप" का अर्थ भी हाथसे मारे जाने वाला बजाया जाने वाला वाद्यन्त्र-ढोल व नगाड़ा होना उपयुक्त है । यदि 'पानिप'का अर्थ 'हाथसे पिटने वाला" लें तो भी यही अर्थ निकलता है । इसी ग्रंथके पांचवें प्रसंगके छन्द सं १६० में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । 'पानिप वाज भेरि नव वीर रस पग्गो ।' यहां भी इसका यही अर्थ होगा ।

दहिके सब कातर फट्टि हिय ढहके उर मेच्छनि फट्टि जिम ।
सहिके मुख भार फनी फनय गहके नभ गिद्धनके गनम ॥२८॥
झबकी गुन चट्टिय तीरनकी, कर कट्टिय खग्ग उमीरनकी ।
खग धारनते सिर तुट्टि परैं बिनु मत्थनि सूरनि मत्थ भरैं ॥२९॥
न हलै न चलै कहु भूमि लरे बलके सम ज्यो दोऊ मल्ल अरे ।
मिलि हिन्दुव म्लेछिहि येम चले, चहुवान बनाफर ज्यो न चले ॥३०॥
कर खजर पजर पार करैं उरके पग अतनि भूमि गिरैं ।
कितने लरि घायली भूमि गिरैं, मदिरा उनमत्त मनो विहरैं ॥३१॥
लखि बावन बीर वक विकसैं मुनि जन्त्र असोम बजाय हँसैं ।
मस आमिख गिद्धनि उद्र भरैं मिलि हूर अपच्छर सूर वरैं ॥३२॥
सब जोगनि ओणित खप्र भरैं, ततथेयव भैरव नृत्य करैं ।
झननं किय पक्खर झट झरैं खननं किय खग्गन बाढ खिरैं ॥३३॥
झनन किय पायल रमननकी उपमा यक ओर अघमंनकी ।
बरसैं गलबाह किया विहरैं परभाग मनू हुरि नृत्य करैं ॥२४॥
यम जूझि सलों रन भूमि परयो बरमाल अपच्छर डारि बर्यो ।
सिर झेलि महेश सुमेर कियो रथ बैठि अपच्छर लोक गयो ॥३५॥

### दोहा

यम किलो मारे सवुव मारे किल्ले उमीर ।
जूझि सलों रन मुख परयो हल्लो कर्यो तगीर ॥३६॥

---

(२८) ढहके=धसक गये बह गये । फट्टि जिम=फटेकी तरह । सहिके=सहम गये । गहके=प्रसन्न हुए ।
(२९) झबकी तीरनकी=तीरोंके लगातार चलनेसे प्रत्यंचा चटक (वज्र) उठी ।
(३०) चहुवान=चौहान राजपूत । बनाफर=क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष ।
(३१) पंजर=शरीर । अंतनि=आंतें । (३२) मुनि=नारद । जंत्र असोम=असोम नामक नारदकी वीणा । उद्र=उदर, पेट ।
(३६) तगीर=विदा करना रवाना करना ।

'महूकम'की पिन प्रतिसषी बधी किलम उर थेंस ।
यम सरे सट मास लग धाकुय ग्रथ विर्धोस ॥३७॥

### छंद मोतियदाम

'सलो' रन झूझि परयो जुध जुट्टि लयो जस यास प्रस्थमिय मुट्टि ।
परे सत पद्वरकें पतसाह, करे जिनु प्रब्भरि लोक उछाह ॥३८॥
परे भर एक हजार किल्लम परे बिथुरे जिमि टोप झिल्लम ।
परे कमनेंत वसू बल बंध परे सर मीर नगारन बंध ॥३९॥
परे दस घायल एक हजार, कराहत भगनि घाव सुमार ।
परे गज मेंक रवहनि घूमि परे सत वोय तुरगह भूमि ॥४०॥
करें मुनि नारद येंम सराह कहै जुध जीति गयें कछवाह ।
मयें कमलास मुडानि महीस, कहैं जुध जीतिय पद्वरईस ॥४१॥
भई सब जोगनि श्रोन त्रपत्ति, गई यम अक्खि नरक्कन जित्ति ।
गयें बकि बावन बीर विसुद्ध, भई जय हिन्दुनकी यहि जुद्ध ॥४२॥

उठी पल बप्पय गिद्धनि संग, कहे जुध जीतिय मोकमसिंग ॥४३॥

### दोहा

मम जुट्टे सट मास जुध, हुए किलम हैरान ।
मनहु काम चतुरगनी करी ईस बेंरान ॥४४॥

### छप्पय

किते झूझि भर परे, किते घायल भर भुम्मिय ।
कबर थोर चहुं कोर करी कितनी खनि भूम्मिय ॥

---

३७ थेस—द्वेष ।
३९. वसू—पृथ्वी । नगारन बंध—जिनके आगे नगारे बजते हैं ।
४१. मृडानि महीस—पार्वती शिव ।
४४ बेराम—वीरान ।

कैंतें सग साबूत, किंतें मायलों मिलायति ।
किंतें करि कफनी गयें भप्पमी विलायति ।।
यम कियो जुलम हुकम प्रबल ।
पीठ किसम उर पक्खियो ।।
सिर शोंप रह्यो' लाबो' सुभट, तब मयाब यम मक्खियो ।।४५।।
करहु तुम्ह मामले कच्छु हम टेक रहावें ।
यश लावें गढ़ मरन जियत हम फेर न आवें ।।
करि बेडे बरबाद बाद बारूद उड़ावें ।
हम तुम जुट्टे तवन मदन महिमति उर छाय ।।
यम कहि बुलाय बतराय कछु कपट द्रोह उर धारियो ।
करि दगो पकरि हनुमंत'को, आसुर कटक उपारियो ।।४६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदास विरचित प्रथम लावा युद्ध द्वितीय प्रसग समाप्त ।

---

४४ गोर—गोर, कब्र । साबूत—सुर्ख रस्तनेक्ष वक्स, अर्थी ।
४६ मदन—खोट दिन । महिमति—घमंड, जोश । बाद—व्यर्थ । मदन—मदन्य तुच्छ ।

## सदाना युद्ध

### छंद बेताल

करि दम गहि हनुमंतको भय मानि सावातें भग्यो।
करि दुष्टता यहु ओरतें फिर देशको लूटन लग्यो ॥१॥
वर बीर धीर सुमानके यहु रोस अंग उमगयो।
हनुमंतको छुटवाय हू यह अप्प लड़ान गयो ॥२॥
तिह पाट थान सुमानसों मिलि कवर भारथ वुल्लयो।
हनुमंतको छुटवायके मदिरा पीवें पन झल्लियो ॥३॥
हम जियत ही हनुमंतसी पर, हत्य म्लेच्छनको पर्‌यो।
यह वत्त हुव मनरत्थ सी, सावूल सिकुलतें जर्‌यो ॥४॥
करि सीस उन्नत अप्पनो, अर जोर सावातें लर्‌यो।
हिन्दुवान ओ तुरकानके तिह ठौर पावक विस्पर्‌यो ॥५॥
सल्लाह यट्टिय वाहिरको, यह मरन लायक गड्डयं।
लय सग हैदल पैदलं तिन काल भारथ चढ्डयं ॥६॥
निधि अर्द्ध मामव नग्रतें राजाधि अमल उत्थपियो।
अनमेल कट्टिय कोटतें निजराज पद्धर थप्पियो ॥७॥
प्राकार उन्नत आमसों सामान पूरन सज्जयं।
धमधम्म तोप उछाहकी तम्बूर त्रम्बक बज्जयं ॥८॥
यम घद्द नद्दिनके सुने अरिगे रवद्दनके हिये।
यहु ओर खल्लिय वत यों लरि कोट भारथसी लिये ॥९॥
मिशि बीति भानु प्रकासियो जिह मोर धीरज नट्ठयो।
सिसि मीरखान नवाबको यह तोर कग्गल पट्ठयो ॥१०॥

---

४ सिकुल = साकल, जंजीर।
७ अनमेल = शत्रु।
८ धमधम = भयानक युद्ध। तम्बूर = एक वाद्ययन्त्र। त्रम्बक = नगारे, ढाल।
९ घद्द = शब्द। नद्दिन = शब्द करने वाले।
१० नट्ठयो = नष्ट हुआ।

### दोहा

यम सत भारथ मिक्खियो मीरखान यह मान ।
कै छोडो हनुमंतको, कै झल्लो केवान ॥११॥

### छंद पद्धरी

मार्वे निकाम तुम कियऊ जुद्ध तिह ठौर भर्यों हम तुम विरुद्ध ।
जुट्टे निसंक वे खून रार, लुट्टे न कोट तुम गये हार ॥१२॥
फिर एक बत्त बिनु उचित कीन, हनुमंत वगो करि पकरि लीन ।
तुम करिय बत्त यह ठोर ठोर करि वगो हन्यो स्वाई रठौर ॥१३॥
मामेरनाथको मून लाय लीनो हरामखोरो उठाय ।
जो करहि चेठ जगतेश राय, तब काढि खाल भूसी भराय ॥१४॥
तें लूटि लये रिपु च्यार देश में करू तोहि दरवेस भेस ।
मब मान मूड हनुमत चाकि हनुमत न छंडहि रारि मेंडि ॥१५॥

### दोहा

लिखि कग्गल कछवाह पिय मय भावन निज हत्थ ।
भातुर भावन भानि के पिय नवाबके हत्थ ॥१६॥
ले कग्गल बोले किलम किसके भारथ नाम ।
हैं उसके असमानतें कैसो उन्नत धाम ॥१७॥
पति 'रूदाना' के कंवर भारथ नाम कहाय ।
मला शहरको गढ़ लियो मर्द भरीमें आय ॥१८॥
भारथ हमसें जुध करें ऐसा क्या मकदूर ।
पाव भरीमें हम करें, उसके गढ़ चकचूर ॥१९॥

---

११ केवान = कृपाण ।
१४ मून = मस्तक ।
१६ कग्गल = कागज पत्र । भावन = दूत ।
१९ ऐसा क्या मकदूर = इतनी क्या मजाल है ।

हमसे जुध करि जीति हैं क्या उसमें है ओर।
यम अमखडू कासीद मुख है भारत किह ठोर ॥२०॥
घर पत्थरको पातस्या ढूंढाहरकी ढाल।
मान महीपतके मुकट शत्रुनको नटसाल ॥२१॥
भय बल तप बल, बाहुबल बलधनको बलराज।
भारथसे भारथ करै से नहि दीसत भाज ॥२२॥
को हिन्दु तुरकानको, को फिरंगान समाज।
भारथसे भारथ करै से नहि दीसै भाज ॥२३॥

छंद पद्धरि

कासीद मानि इम कहिय वत्त सुनि मीरखान परगह समस्त।
को करहि कालसे चाल कोपि, को जात सिंधु पर तीर लोपि ॥२४॥
को लेत पानि उर्वी उचाय को चलत पथ कर पद कटाय।
को लेत नागकी मनि हकारि को जुरत सिंह सूतो वकारि ॥२५॥
को बैठि सोर पर भागि देत भमदूत हूतको करहि जैत।
को करत सर्व भक्ष्यं भ य को लेत पार उतराद पथ ॥२६॥
गहि लेत कोन कर चमत पोन पच्चास कोटि भुव भ्रमत कोन।
जिय चहत हलाहल कवन खाय को लेत मेरु परवत उठाय ॥२७॥
को लरत मीचसे वीर बंक असमान कोन झेलै असंक।
को लेत सीस पर काल दंड को इंद्र वज्र झेलत अखंड ॥२८॥
वहनी बिछाय सुख कवन सोय फल कवन खाय विष बीज बोय।
को मस्त मागसें करहि केलि को लेत भूमि पच्छय धकेलि ॥२९॥

---

२१ नटसाल=तीरका शरीरमें फँसकर सटकना।
२२ भय बल=शस्त्र बल। दीसत=दिखाई देता है।
२४ परगह=परिकर, अनुयायी दल।
२५ उर्वी=पृथ्वी। वकारि=पुकार कर, हकाल कर।
२६ सोर=बारूद। जैत=विजय। वहनी=वन्हि अग्नि।

को मीरभद्रको करहि खूंम, मारथसे मारथ करहि कून ॥३०॥

**दोहा**

सुनिय मस्त कासीद, मुख बांच्यो सस जवाब ।
मनहु अग्निमें घृत परे प्रजरयो येम नवाब ॥३१॥

**छंद निसानी**

सुनि सस भारथसिंहको पीछा लिखवाया
हम 'लावे' दो लक्ख रुपयें बरबाद गुमाया ।
उस रुपयोमें मोल यक ये हमको पाया
इस 'लावा'की मोलसे जीऊन दाया ॥३२॥
उस लावाके ठाकरु तुमको बहकाया
के तुम किसके बादिस्याह फुरमान चलाया ।
के तुम किसके मामले चाहत सुरझाया
के तुम किसके पील हो अरजी गुजराया ॥ ३३ ॥
के तुम ऊँचे होयके हमसे बतराया
के तुम दावेदार हो कर तेग समाया ।
के तुम उसके मामलें बिच फैल मचाया
तुजे पराई क्या परी अपनी निमराया ॥ ३४ ॥
इस हम चारों वेसको लूटे करि दाया
सद रहमत तुजको सलाम मुझको फुरमाया ।

---

(२८) बहनी = बही अग्नि ।
(३ ) कूँन = कौन । मारथ = मारथसिंह, कसाने के स्वामी मदनसिंहके पुत्र युद्ध ।
(३२) मोल = गिरवीकी वस्तु । दायादी = दायेका ।
(३३) पीछो = जिसकी हिमायत (पक्ष) की जावे हिमायतदार ।
(३४) फैल मचाया = ऊधम किया दंगा किया तोफान किया । निमराया = समेटना, निपटाना है करना । दावेदार = बराबर ।

में भी सच्चा खान तो तुझ ऊपर आया

॥३५॥

दोहा

यह बिरादर खानके सुने निरादर सत्त ।
किलम एक असमानखां, उन भक्खी यह बत्त ॥३६॥

छंद निसानी

ये सत भारथसिंह बांचिके रोस भरेगा
मुझको आया ख्वाब कल्ल वो ही निमरेगा ।
मेरो सच्चो ख्वाब है टार न टरगा
जिसका आह्वय भारथा वो खून करेगा ॥३७॥
इस्त्री औरत बालदा खाला पकरेगा
ताई चच्ची आदि ले सब बद करेगा ।
गढ़के अंदर कैद करि पग लोह भरेगा
यें गल्लों सुन मीरखान अंदर अजरेगा ॥३८॥
किसका कह्या न मानि हैदल जोरि भरेगा
त्रणसे भारत होयगा गज बंधु गुरेगा ।
उस लावांसे चौगना रनखेत परेगा
मो पट्ठरका पातसाह पुष खूब करेगा ॥३९॥
वो आया मदनेसका मारया न मरेगा
ये भेजा अल्लावदा बरसाव करेगा ।
अल्ला जानें फोजमें बिरला उबरेगा
यूं भक्खे असमानखां असमाम गिरेगा ॥४०॥

---

३७ आह्वय=नाम । जिसका आह्वय भारथा=जो भारतके नामसे पुकारा (बुलाया) जाता है ।

३९ त्रणसे=तिनसे अनंत । गज बंधु गुरेगा=हाथियोंके झुंडके झुंड गिर जायेंगे ।

### छंद पद्धरी

असमानखान अक्खी अनक, तउ मीरखान मानी न एक ।
बोल्यो रिसाय निज बल बखानि करतोलि तेग कर मूंछ तानि ॥४१॥
गढ़ बैठि गर्व कीनूं गवार, सम करो ताहि प्रज्जारि छार ।
पाहन उखारि सर्मज्ञ मूल, देऊं भ्रमाय ज्यों पत्र तूल ॥४२॥
मम कोम सत्य पितु मात सद हनुमत संग गहि करों कद ।
मम रोस ज्वाल पावक प्रचंड खलहु नवाय भरबाय दंड ॥४३॥
यम कहहु वत्त कासीद जाय, तुम भरहु दंड मम परहु पाय ।
यम सुनत वत्त कासीद आनि दयसीघ्र सत्त भारत्थ पानि ॥४४॥

### दोहा

कहे दूत समझाय के, समाचार यह विद्धि ।
तदन कबीले असुरके रहत 'टोरडी मद्धि ॥४५॥
चढे सहिरतें रोस धरि लीनी पकरि सुमान ।
मानहु रावनकी त्रिया गही आनि हनुमान ॥४६॥
तदन गही रावन तिया परयो भूमि करि जग ।
बीबी जियत नवावकी पकरी भारतसिंह ॥४७॥
हाव भाव रस गुन भरी सोहत परी समान ।
किधू कामकी कामिनी को कवि करत बखान ॥४८॥

### छंद त्रोटक

यवनी तिय हूर किधों उतरी पलगी नग काम किधू पुतरी ।
कच स्याम सचिक्कन सीस लसैं ससि पूरणको मन राहु ग्रसै ॥४९॥
मृगमामदकी सरि बिन्दु दियो ससिके मनु मध्य धनी उदयो ।
उपमा यक और चुभी चितमें ससि रोहनि अंक धरी हितमें ॥५०॥

---

४५. टोरडी—एक सामान्य ग्राम है जो मालपुराके पास जयपुरसे दक्षिणकी ओर है, यहां पर एक बड़ा जलमंच है ।

मुख बक मनो युग भ्रग भरे कुसुमायुध ज्या धनु तानि धरे ।
श्रुति कुंडल हाटिक हीर जरे मुख मीन मनो मुकतानि भरे ॥५१॥
मुकता गनि बेसर नाक बनी मनुकीर चुगत अनार कली ।
श्रम स्वेद कपोलनमें झलकें अलकें दुहु नागिन सी तलकें ॥५२॥

अधरायुग बिम्ब पके फलसे
मनु लाल प्रवालन पक्ति लसे ।
अधरानि बिचै दुति दंत बनी
बिचि मानिक मानहु हीर कनी ॥५३॥

मृदुहास हुलास हिये न रूक्यो
भरिके मनु कज सुधा ढरक्यो ।
दुति कठ कपोलनकी झलकी
उन कठनते धुनि कोकिलकी ॥५४॥

मयुरी सुनिके धुनि काम बढे
मुखते मनु मंत्र मनोज पढे ।
कर चपक डार सुगध भरे
मनु कजसे नाल दुहूं पसरे ॥५५॥

चुरियां मकरावलि पानि हरी
गुरु गेह मनु बुध सज परी ।
गजरे मुकतानिके पानि लसे
मनु दामिनिमें अपि पक्ति बसे ॥५६॥

अँगुरी तिम हेम सलाकिनि सी
मुँदरी जरि मानिक मध्धि बसी ।
तिनकी उपमा कवि हेरि न्य
गुरु मोन अगार मनो उदय ॥५७॥

---

५२ तलकें—तलकना हिलना एवटके चलना ।
५६. गजरे—एक जेवर विशेष जो हाथमें पहिना जाता है । संजपरी—सज्जित हो गया ।

मेंहदी कर कोमल बूंद भरी,
मनु कंजमें इन्द्रवधू बिथुरी।
उर बीचि उरोज स्वयंभु लसे
तटनी तट मानहु कोक बसे ॥५८॥

उमगी सुरली कुच कोर कढी
मनु बृंतनि कंज कलीनि चढ़ी।
भ्रवली तन रोम तरंगनि सी,
मधु सिंधुमें नाभिय कंज लसी ॥५९॥

भर श्रोणित पीठि विभाग नयो,
कटिको वित लूटि नितंब लयो।
छबि रूप जराव जरी रसना,
मुकता हिम नीलम हीर पना ॥६०॥

बुध सुक्र बृहस्पति भोम सनी,
मनु तोरन कामके भोम तनी।
उपमा यक ओर अपंमनकी
युध अंग बनी हिम रंभनकी ॥६१॥

अरुनाई महाउरकी दरसे
तरवे मनु पावक से परसे।
घटककी पट मेचक मोखमकी
पनही मुकता अरबोमनकी ॥६२॥

सुरली बनि सूपनि मारनकी
सरकी सर स्याम यजारनकी।

---

५८. स्वयंभु—शिव, महादेव। तटनी—नदी।
५९. बृंतन—बीर बहूटी वीर बहूटी।
६०. श्रोणित—लाल। रसना—किंकिनी, करधनी कमरकसी।
६२. तरव—पैरके तलुए। पट मेचक—काला रेशम। यजारन—इजारबंद नाड़ा।

कुरती कपिया मखतूलनकी,
उर माल चमेलिय फूलनकी ॥६३॥
सिर सारिय स्याम विदशनिकी
तिनप हिम कोर सुवेशनकी ।
जिनकी उपमा यक मोर चटी
बिजरी ससि कोंर मनू लपटी ॥६४॥
झर लागि सुगंध मना झपटी
अलियावलि अगमकी लपटी ।
तनकी सुकमार बय तरनी
लखि धीरजको न धरै धरनी ॥६५॥
मुनि देवनको मनहू बिचल्यो,
चित भारयको तिनपै न चल्यो ॥६६॥

दोहा

नागरि गुन आगरि नई, सुंदरि तन सुकुमारि ।
गहि भारय निज बसकरी, सबी न द्रष्टि पसारि ॥६७॥
दान धीर रन प्रबलता जुद्ध बुद्ध तप वेश ।
क्यों बिगरै तिह नृपतिको सबै न पर तिय लेश ॥६८॥
कूक फजर कटकों परी भरी न किलमूं धीर ।
सब दिन रोजे सम गयो, चढ़ी बिषम कल पीर ॥६९॥
समाचार अनुक्रम सहित सुने गही तिय तेम ।
पनग पिटारेके परे, धरि सिर धूनत येम ॥७०॥

छंद सुभंगी

परयो भीमको पूत ज्यों सक्ति मारयो
मनु मच्छको तोयते हीन डारयो ।

६७ कूक—हल्ला ।

मनु मांच सीसी सुरा हीन नखी,
परयो पल हीनू मरा आनि पखी ॥७१॥
परयो नाग भूमी मनू भीम कुट्यो,
परयो भूमि सारो मर्मूं गैन तुट्यो ।
मनू भाव हीन पुर्‌यो कुंभ रीतो
भई भक्ष खाली पर्‌यो आनि चीतो ॥७२॥
पर्‌यो ब्याल ज्यों कीलमी बजू किल्लो
मनू भक्खि तारक्ष पीछे उगल्ल्यो ।
बटू बायक बेग मांनू उखार्‌यो
पर्‌यो छाग भूमी मनू तेग मार्‌यो ॥७३॥
पर्‌या म्लेच्छ भूमी बसू याम लोट्‌यो
जर्‌यो अंग जाको मनू आगि ओट्‌यो ।
मला पीर पैकबरोंको पुकारं
जरी देहको रोपते फेर जारें ॥७४॥
बके दीनताक किते बन टेरे
कबीले परे काफरा हुत्थ मेरे ।
परे बिल्पुरे भूमि जाके खिलूना
कहा कब आने हमारे ललूना ॥७५॥
करी कोटमें कैद बीबी हमारी
रमी भाजलो रगकी चत्रसारी ।
पर्‌यो त्रासतें जीव संताप ताके
जर्‌यो साह जंजीरकी ठोर जाके ॥७६॥
बिछूना बिना सोवना क्यों सहेगी
हवा बदके फव्वमें क्यों रहेगी ।

---

(७२) मंफ—छलांग । चीतो—चीता, सिंहकी जातिका एक शिकारी पशु विशेष ।
(७३) तारक्ष—गरुड़ । छाग—बकरा ।
(७४) म्लेच्छ—म्लेच्छाएँ, स्त्रियां ।

सुरा मांस हीनी रही मा कदे ही
बिना खान पान भई क्षीन दही ॥७७॥
सुनै हिन्दुके बैन सीना धरक्कै
चिरी पिंजरैंकी परी त्यो फरक्कै।
वह हिन्दुके वषसे वो डरेगी
निराधार बिल्लो सफीलो गिरेगी ॥७८॥
उसीको लखै वीरता ना धरेंगे
कही जाय ना हिन्दु कसी करेंग ॥७९॥

दोहा

करि साहस ऊठे किलम झिलम टाय तनु झल्लि।
पूरनागरन ठोर परि चले प्रबल दल मिल्लि ॥८०॥

छप्पय

चढ़ि चल्लिय मेछान, भान गरदावलि मिल्लिय।
हल चल्लिय हिन्दवान अलह जुग्गनि खिल खिल्लिय॥
घर डुल्लिय परिभार पहुमि वसवान उचल्लिय।
हल मिल्लिय परि जोर, शेष महि फन पर सल्लिय॥
लखि ओर सोर दिल्लिय सदन, तदन तोर दरसावियो।
कर अली अली माधव नगर येम सजी कर आवियो ॥८१॥
रचे प्रबल मारचे करि मेछन बन कट्टिय।
दीनी भूमि न्रार मोट सगर चिर चट्टिय॥
करावीन जम्बूर तुपक पिसतोल तयारिय।
ठोर ठोर नद घोर यसे लुकमान हकारिय॥
झर तुट्टि-तुट्टि अग्नी परत, लाय अवनी मनु लग्गई।
घन घोर तोप आवाज लों दुहु ओर यम दग्गई ॥८२॥
धरा धूम बिथ्थुरे तोय ऊछरे सरोवर।
गिरे शृग नग तुट्टि ताम प्रज्जरे तरोवर॥

---

८१ वसवान=बसने वाले।

नदी कूप नद सूकि, कूक कातर उर फट्टिय।
आवट्टिय जल जोर सोर वुट्टं मोर उपट्टिय॥
सर धून धून दिग्पाल डरि कसकि कमठ्ठुनि पिट्ठि भर।
घर घुज्जि सलातल तल वितल शेष सलस्सल छड्डि धर॥८३॥

मेक मास बारूद हिन्दु तुरकान हुचक्किय।
हल्लो करि फिरि हल्लि देस भुवलोक भचक्किय॥
मीरखान माराथ करत मारथ दहु निभ्रत।
दैत्य देव मिलि युद्ध करत मनु काल प्रलय कृत॥
भरि बत्थ बत्थ गलबाह करि येम असुर हिन्दुव मिलत।
मानहु अनक दिन बिच्छुरे, उर मिलाय बधव मिलत॥८४॥

घर अम्बर घन धूम सोर झर बिज्जुर चमक्किय।
तोप-सब्द घन घोर तुपक भर भसनि बरक्खिय॥
नाचत सूर मयूर सस्त्र-खद्योत झलक्किय।
डरि कातर जैवास भूमि रुहिराल ललक्किय॥
किल्ले नजीक मिल्लै किलम, जिते सोर झर पर परत।
आषाढ मनहु बरषा समय, समुख आनि सलभा गिरत॥८५॥

छंद वीरस नाराच

घटा घुमडी घोरिके आषाढ अभ्र सो घिर्‌यो,
प्रकाश भानु को रुक्यो प्रकाश धूम धू घर्‌यो।

---

८३ नदावर—जलधर, मेघ। आवट्टिय—औटना, उबलना। उपट्टिय—उत्पन्न हुआ। घर—स्याम।

८४ हुचक्किय—हो चुकी समाप्त हो गई। भचक्किय—अचंभित हो गये। माराथ—युद्ध।

८५ सोर झर—बारूदी झप। भसनि—भाले। सलभा—टिड्डी।

कमान जाल तोपके नगास कोटपै भवै
जम्भूर रघ्र रघ्रके गिरेन्द्रसे रसै सवै ॥८६॥

अनेक मेक तोरकी वुरुह तोप माहुर
उडै दुरगकी सफील फील फोकके गुरै।
हुकारि मात सामुहै मुसल्ल हुल्ल भुल्लिकै
मते मकारि हिन्दु सीस मासमान तुल्लिकै ॥८७॥

कितेक सस्त्र वस्त्र हुं मचेत भूमिपै गिरै
किते कुठार खग्ग धार सेल सजक सरै।
कितेक हाथ पावके विहीन भूमिपै लुटैं
कितेक सीसके कटे कबध ऊठिके जुटैं ॥८८॥

कितेक गिद्धनीनको मधाय गूद मप्पने
कितेक सुद्धिके विहीन मार मार जप्पने।
कितेक ईस पोय लीन सीस मुण्डकी गुनि
कितेक सप्र खोपरी बनाय जुग्गनी चुनी ॥८९॥

कितेक वीर युद्धमें प्रधीर होय वक्कही
कितेक भूत खेचरी अघाय श्रोन छक्कही।
कितेक हूर मच्छरी विमान बैठि उत्तरी
कितेक जात व्योमको मनो मरठुकी घरी ॥९०॥

---

८६ तोपके नवाब—तोपके निवाले, गोले। रस—रसने लगे, चूने लगे टपकने लगे। सवै—सो सपट।

८७ अनेक मेक तोरकी—अनेक प्रकारकी। माहुरे—माहुर रही है। दुरंग—किला। सफील—दीवार। फील—हाथी। गुरै—गले। सामुहै—सम्मुख।

८८. लुटैं—लोट रहे हैं। जुटैं—युद्ध कर रहे हैं, जुट रहे हैं।

८९. मधाय—मुग्ध करके। गूद—मांसल स्थान।

१ मरठ—रहँट, कुएसे पानी निकालनेका मालाधार यंत्र।

छप्पय

येम नवके असुर मास मुर अगुन घुमड्डिय ।
मीरखान अप्पनी जीयन आशा उर छड्डिय ॥
लोह मोह मास्व जुद्ध हल्ले करि हारे ।
पैदल हैदल परे मीर कितने रन मारे ॥
कवीले छुट्टिनिके अरथ कपट करथ केते करे ।
ननु परे हत्य किल्ले तदपि अरथ मत्थ अवनि परै ॥६१॥
येम असुर धर उद्ध पर्‌यो अनुचित अप्पन मन ।
मनहु चाप गुन तुट्टि किधू किरवान मुट्ठि बिन ॥
स्वास ताप उर कप मुख वैवरन फैन जुत ।
रोप प्रलापहु दुःख मगन सताप नारि सुत ॥
करनैलखान असमानखां दुहूं आनि धीरज दयो ।
कवीले फजर छुटवाय है तब नवाव अचल भयो ॥६२॥
घर चलाय बुल्लया मीर असमान बुद्धिवर ।
कुटिल नवके कोम बहुत हुसियार जुद्ध पर ॥
असि उन्नत आकार अरव सामान आन अत ।
मीसे सोर अपार पंच हज्जार जुद्ध रत ॥
जुट्टे अनक ग्नि आज लों अब अनेक दिन जुट्टि हैं ।
हनुमंत छड्डि पायन परो तदन कवीले छुट्टि है ॥६३॥
आनी चित मीरखा मीर असमान कही बत ।
सर्वोपम अब सिद्धि सरब श्रीजुत लिक्खे खत ॥
मिटयो बैर अप्पनो रारि हमसे मत मडहु ।
हम छंडे हनुमत मारि हमरी तुम छंडहु ॥

६१ मास मुर अगुम—नौ महीने तक । लोह—प्रहार ।
६२ धर उद्ध—पृथ्वी पर । अंजस—अभिमान ।
६३. घर—दूत ।

तुम कह्यो कवर सोही करै ज्यान माल कछु चित चही ।
यह बत्त निरतर जानियो हम तुम अतर है नही ॥६४॥
बचि खत्त मारत्थ, कत्थ पिच्छी यम लिक्खिय ।
तुम बेगम हम पकरि कैदखाना विचि नक्खिय ॥
तुम छुट्टो हनुमत्त कयखाने मत रक्खहु ।
एक लक्ख भरि दंड नारि छुट्टनकी भक्खहु ॥
नन होय बत्त मजूर यह जुध हम तुम फिर जुट्टि हैं ।
भरि दंड मानि पायन परो तवन कबीले छुट्टि हैं ॥६५॥
कै दारुन ग्रहि किल्लि कालबेलिन बसि किन्हो ।
मनहु मुसाफिर बित्त ठगन मादिक ठग दिन्हो ॥
किधू प्रेत बक्करयो ताप मत्रादिक तच्यो ।
परयो प्रपंचय हत्थ मनहु साखामृग नच्यो ॥
उच्चर्‌यो खांन सोही कर्‌यो, यों मति कीमत मानखां ।
मीरखां दारुयोपित भयो, दार गह्यो असमानखां ॥६६॥
करी एक उमत्त मस्त ईरान बिलायत ।
पाटम्बर अर तार भार मेवा सोखयत ॥
पेटी भरि भोकले एक लक्ख रुप्ये हाली ।
परसी सञ्जु कटार जूट्टि पिसतोल बुनाली ॥
सुकुमार धनुप तुन्नीर शर सार टोप पक्खर किसम ।
करि मित्र भाव हनुमतको बैर छुट्टि भेजे किसम ॥६७॥

सोरठा डिंगल

यम अक्खी असमांण पारस झूठी नहि पडी ।
तें रासी तुडसाण रजपूती हिंदवाणरी ॥६८॥

---

६४. पिच्छी—पाछी, वापिस।
६६. कालबेलिन—सांपको पाळने वाळी जाति विशेष। दारु योपित—कठपुतली।
६७. सोखायत—सौगात, उपहार, तोहफा। भोकले—भेजे बहुत। हाली—चली सम्
सम्भवतके।

हिंदुवाणो तुरकाण राह दुहू जस उच्चरै ।
पारथ ज्यू भुज पाण भारथ मह्यो भारथा ॥९९॥

हटियो मल हिंदवाण, ऊमटियो मल भासुरां ।
मिटियो वेख प्रमाण घटियो भारथ भारथे ॥१००॥

सबला पण साबूत, रहियो भारथ भारथो ।
तुरकारां तावूत, लागां मग्ग बिलायतां ॥१०१॥

कपै घाव कराहि निसि दिन चख झंपै नहीं ।
मेछारां घट माँहि भाय लगाई भारथै ॥१०२॥

ठहरै जीव न ठाहि धाहि पुकारै भोदकै ।
मेछारां घट माँहि भाय लग्गई भारथै ॥१०३॥

करडी निजर कृसाण धारी कूरम भारथा ।
मेछारे अप्रमाण लग्गी लाय बिलायता ॥१०४॥

लाय तरच्छा लान धारा भयसों भारथा ।
असुराणी आधान अवधि विहूणां ऊगसी ॥१०५॥

किलमा चाले काय के चाली लागो कंवर ।
घाली-नाहर आय भाली फेर न भारथा ॥१०६॥

---

९९. पारख—परीक्षा । तुरकाण—यहां पर 'तुरकांण' पाठ होना चाहिए, जिसका अर्थ होगा तुरक (शीघ्र वर्तमान समय) के अन्त तक अर्थात् अब तक ।

१ ऊमटियो—उन्मत्त हुआ । घटियो—किया ।

१ १ साबूत—सम्पूर्ण ।

१ ३. भोदकै—चमक कर, चौंक कर । धाहि—हाय हाय । भाय—भय ।

१ ४ करडी—कठोर । कृसाण—अग्नि । लग्गी लाय—अग्नि लग गई ।

१ ५. आधान—गर्भ । ऊगसी—उत्पन्न [illegible] अर्थात् बिना समय ही गर्भ गिर जाते हैं ।

१ ६ के चाले—क्या धंधे लगा । घाली नाहर—सिंहका स्थान माँद । भाली—देखी ।

सारो खोय सबाब, पडि फीटो पावां पकपा।
निहुरा खाय नवाब नारि खुडाई निठुसे ॥१०७॥
हुरकारे मुख होय, रती न राख्यो भारथा।
हुवो न कोई होय आलम आखे आपनै ॥१०८॥
जुटै जुद्ध दल जग आहुटे हिन्दु असुर।
रंग हो भारथ रग उण वेला दै आपनै ॥१०९॥
सूर अपच्छर सग, हूर रबहाहू मिलै।
रग हो भारथ रग उण वेला दै आपनै ॥११०॥
ईस उमा अरधग भर प्यालो ले भगरो।
रग हो भारथ रंग उण वेला दै आपनै ॥१११॥
अमलांरा उछरंग गलिया चलिया चोगणा।
रग हो भारथ रग उण वेला दै आपनै ॥११२॥
गोष्ठि बिरादर संग प्याला मद पावै अपिवै।
रग हो भारथ रंग, उण वेला दै आपनै ॥११३॥

छप्पय

चिमन सेख घर परघो परघो घर सेख यनायत।
परघो विलायत खान ल्हास पूगी विल्लायत॥
परघो खान मुलतान खाम असमान सरोभर।
जूटि जग जमसेर, वाहि समसेर परघो घर॥
इकावन मीर ठाये परे पंच हजार भरायते।
कमनेत नेत अघी अयुत असि समेत आपायते ॥११४॥

---

१०७ पडि फीटो—लज्जित होकर। निहुरा खाय—खुशामद करके, अनुरोध करके। निठुस—मुश्किल से।

१०९ आहुटै—जोरामें मरना। रंग हो भारथ रंग—हे भारतसिंह तुमको धन्य है। उण वेला—उस समय।

११० रबहाहू—म्लेच्छ।

११४ ल्हास—लाश। ठाये—मुख्य। भरायते—लड़ने वाले, सिपाही। आपायते—आप रखने वाले अपनापन रखनेवाले, निकट संबंधी।

येम नारि छुटवाय मेछ अपने मग लग्गिय।
मनु शाद्दूल सिसपास, खोय धनको खल भग्गिय॥
सकल होय बलहीन सबल भारथ लगि टक्कर।
जात मनहु अजमेर, पीर जारतिकों फक्कर॥
मद मुक्कि सुक्कि वैवरन तन जीव सरक सीना धरक।
परि काल फंद मानहु कढे, हुय तग्गा तग्गा तुरक॥११५॥

दोहा

नर हैमर वमने सकल येम असुर मग जाय।
मनहु वनिक घर अप्पनै गमने मूल गमाय॥११६॥

इति श्री कूर्मपथ म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित लवाना युद्ध तृतीय प्रसंग समाप्त।

---

११५. बाहन—बाद करने वाला ईर्ष्यालु, बाहन जाति विशेष। जारति—जियारत धार्मिक-यात्रा। वैवरन—वैवर्ण्य; रंग फीका पड़ना। हुय तग्गा तग्गा—तागे तागे हो गया छिन्न-भिन्न हो गया।

## उणियारा युद्ध

### दोहा

येम 'लदान' सुकवि नृप, वरन्यो विविध प्रकार।
अब 'उनियारय'को कछू जिहि विधि भग्गो सार ॥१॥
होय निबल बलहीन खल द्रुम पल्लव मनुहारि।
कुब्ज कुब्ज वर कुब्ज फिरि समर लई संभार ॥२॥

### छप्पय

करि मुकाम पुर घेरि, सोर बहु मोर प्रजारिय।
गहि दुरूह सिकदार हाटि पट्टन संभारिय ॥
हेरिय संभरि माल, लुट्टि समर पुर लिन्हिय ॥
निमक दरिखनि रुद्धि वाव दम्बम उर दिन्हिय।
गोसक निधान फुरमान भप, बिकल सोच भ्यारों बरन।
तुरकान तोर भग्गो महुरि खल अनीति भग्गो करन ॥३॥

### दोहा

तुरक तोर भग्गो तदिन फिर समरपुर आय।
अब आगम अंगरेजको बरनै सुकवि बनाय ॥४॥

### छंद पद्धरी

यम सुनिय वत्त अगरेज कान आमो किलीर मुक्यो कमान।
मातंग हेरि मानहु मृगीश मानहु पनग्ग लखि खगाधीश ॥५॥
असमान भ्रमत मानहु भ्रचान लखि भुव बटेर तुट्यो सिचान।
मृग हेरि मनहु चीता मसग झंप्योक बाज चंप्यो कुलग ॥६॥

---

१ भग्गो सार—छोड़ा बड़ा लश्कर चली।
२. संभर—सांभर झील।
३. दुरूह—दोनों तरफके। सिकदार—चौकीदारोंको। दरीख—छीन, मोहल्ले।
४. मातंग—हाथी। खगपतीश—गरुड़।
५. भ्रचान—भचानक। सिचान—शिकरा एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया। मसंग—पुष्ट, मोटा झंप्योक—झपट कर। चंप्यो—पकड़ लिया। कुलंग—पक्षी विशेष, एक

अंगरेज येम जरफ़ील साब आयो अचंक रुठ्यो नवाब।
लखि भयो ताहि सगराम लोप बल करी नैक लाती न तोप ॥७॥
दिय लोह कील अंगरेज आय, सब वियक तोप ठाठनि गिराय।
गिरवाय शस्त्र सब किये हीन, सुरमी समान रिपु घेरि लीन ॥८॥
करि भाव हीन बोले निसक उद्दिस नवाबके भाल अंक।
नव लाख रेख दिय 'टूंक' थान आमद समेत दुगनी अकाम ॥९॥
द्रढ़ भयो म्लेच्छ फिर टूंक आय धरि सीस छत्र चामर बनाय।
यम रच्यो थान तुरकान आन परियार द्वार नोबत निशान ॥१०॥
उन्नत अवास प्राकार धारि बाजार हाट पट्टन सवारि।
चहुँ ओर कूप आराम कीन महजीत गुमज कब्बर नवीन ॥११॥
करि येम राज फिर मरयो मीर तिहि ठोर बैठि वयसाउजीर।
उन्नत गरूर पोरष अपार सब भयो देश हय गय संभार ॥१२॥

### दोहा

मीरखान जा दिन मरे, धरे न किसमू धीर।
ता दिन कछु समता परी बैठे दरसउजीर ॥१३॥
यम कहि रोवत कित गये सब हिन्दुमके साह।
असुर घरनि सब नारि नर परे धरनि बेहाल ॥१४॥
यम बोल आसुर तनय रक्खहु मनमें धीर।
मुझको जानू मीरसा अक्खे वयसउजीर ॥१५॥

अक्करकी बतल जो काले रंगको व सफेद रंग व बोमाग्य रंगकी होतीहै जिसको कुरमा भी कहते हैं। यह पक्षी आकाशमें एक कतारमें होकर कुरबके कुरब उड़ते हैं। डिंगल कोषमें कुलंगका अर्थ 'चटक' लिखा है। मेरे विचारसे यहाँ कविका आशय चटक ही होना चाहिए। बाज—एक शिकारी पक्षी।

७ अचंक—अचानक। लाती—लात।
८ दिय लोह कील—कील ठोक दी, वशमें कर लिया।
९ उद्दिस नवाबके भाल अंक—नवाबका भाग्योदय समझ कर।
११ महजीत—मसजिद। कब्बर—कब्र।

दिन छिनदा उत्पात चित, रोप तरुनता रत्त ।
अगुन घोर भ्रकुटी त्रसर, भयो असुर उन्मत्त ॥१६॥
उनियारय भीमो नृपति वीर पराक्रम शक्र ।
ता भयतें आसुर तनय, रहत मानि उर सक्र ॥१७॥

### छप्पय

देश कोश प्राकार कूप आराम नदी नद ।
धवल धाम हिमकलश द्वार बारन मत्ते मद ॥
हय मज्जहि वरसूर सेन चतुरंगनि सज्जहि ।
वज्जहि नद निहाव मनहु भद्दव घन गज्जहि ॥
तज्जहि प्रवास गिरि वरिन गहि अरिगन भज्जहि मानि भय ।
यह घोर भीम रज्जहि अवनि, लखि सुरेश लज्जहि विभय ॥१८॥
मेघाडंबर मढि सूर सज्जें सन्नाहुनि ।
फौसों फरकि निशान गरक छाजी गज गाहुनि ॥
धुनि तोपन समरिय भरी उर होय थररथर ।
नयन रोस विस्फुरे असुर प्रज्जरे धराधर ॥
नर सूर वीर घन दल प्रबल प्रबल पराक्रम खल दमन ।
करि येम राज भीमो नृपति स्वर्ग मग्ग कीनो गमन ॥१९॥

### दोहा

भीमो सुरपुर भिस्सयो 'उनियारें' नरनाह ।
फतयसिंह बैठें तखत धर पद्धर पतस्याह ॥२०॥

---

१६ अगुन—सिगनी । घोर—सभर, त्योरी, टेढ़ी नजर । त्रसर—असल हीन सम्बत ।

१८ बारन—हाथी । निहाव—प्रतिध्वनि, नौबत निहाई । रज्जहि—राज करता है । विभय—वैभव ।

### छंद पादाकुल पराकृत भाषा

सो रीति ब्बंधं भीम गेहा, तत्थे पुत दिग्घ सनेहा।
थप्पे गढ़ा गढ़ा घोरा, थप्पे पुत्रं भूम भभोरा ॥२१॥

### दोहा

हल्ले तोपन सग्गहि सोर सुरंगन जाय।
किल्ले भूमं भभोरके, लगे न आन उपाय ॥२२॥

ते किल्लो भीमो भूपति किय्यक पूतके हत्थ।
तिहि सुरेतके पूत फिरि मिलि भीमू पर हत्थ ॥२३॥

फतयसिंहको मानि भय, मिले असुरसों आय।
किल्ले मध्य मलेच्छको दीन्हो अमल कराय ॥२४॥

इत उनियारो टूक उत मेर मिलत बहुं राज।
तदपि असुरको चित बध्यो, फिर घर दब्बन काज ॥२५॥

आये चढ़ि नृपके नगर आसुर करन अकाज।
फतयसिंह पठ्ये सुभट तिहि पुर रक्खन काज ॥२६॥

सुभट नृपतिके बीय सत, आसुरके सत चार।
कढी कुबत मुलतें किलम कर कढ्ढी तरवार ॥२७॥

कुबत तेग कढ्ढी किलम जिनों प्रथम लिय मार।
बहुरि नरक्कनि आसुरनि पुरतें दिये निकार ॥२८॥

तदपि नरक्कन आसुरन, चार घरी जुध मंडि।
बीस असुर धरनी परे, अवर गये रन छंडि ॥२९॥

---

२१ गेहा—घर। तत्थे—वहां। पुत—पुत्र। दिग्घ—दीर्घ। अप्पे—दिये। थप्पे—स्थापित किये।

२३. सुरेत—सुरतसिंह।

२४ दीन्हो अमल कराय—हुकूमत करा दी।

२५. मेर—सरहद सीमा।

फतयसिंहकी करि फतह, बहुरे सुभट समाज।
मनु गयदनि युत्थ हनि, आये थहि मृगराज ॥३०॥
मीरखान सुत सभरे जरे करेजनि सुक्क।
आसुरके अतहपुरनि परी भयानक कुक्क ॥३१॥
कूक फजर सुनि मीरखा, आसुर दवल उजीर।
करी वध चतुरगनी, धरी न उरमें धीर ॥३२॥

### छंद पद्धरी

खिजि चढ्यो खान दवलाउजीर गज वाजि तोप रथ पक्ति भीर।
धतमाम फील नोवत निशान, जगी सबाब सब सावधान ॥३३॥
कमनेत नेत बधी सिपाह सब सिलह पूर बिट्टे सनाह।
चवगान जान रनवीर सेत ताजी तमाम पक्खर समेत ॥३४॥
करि गमन अस्त रवि सधि काल कुहु काक स्वान कूके कराल।
समसान सम्मुख कीनो पयान बेताल भूत भूखे भयान ॥३५॥
दखन दिशमें बोल्यो उलूक विपरीत सम्मुख फ्योकर कूक।
विकराल सद्ध श्रगाल आन कूके कराल दक्खिन भुजान ॥३६॥
वामांग हक्कनिय पत्ति अस्व दक्खिन भुजान हूक्यो अनस्व।
जगत विडाल किय रुदन पृष्टि पशुकाल जन्तु मग परयो दृष्टि ॥३७॥
कुभहीन अंग चर्मा वितुड बबील उद्ध सिर महिष मुड।
रंडाल बाल विथुरे असुभ्र लज्जा विहीन सिर रिक्त कुभ ॥३८॥

---

३० बहुरे—वापिस लौटे। थहि—मांद।
३३. धतमाम—यह सब। सबाब—असबाब सामान।
३४. बिट्टे—वेष्ठित पहिने हुए।
३५. भयान—भयोत्पादक।
३६ फ्योकर—शृगालिनी।
३७ हक्कनिय पत्ति अस्व—शकुनीके स्वामीका घोड़ा, अर्थात् कुत्ता। अनस्व—गधा।
पशुकाल जन्तु—सर्प।
३८. अंग चर्मा वितुड—हाथीके समान चमड़ा है अंग पर जिसके। बबील—सर्प।
रंडाल—विधवा।

सर्वंगि सीस मुंडित विहाल  मग लोपि जात वामांग व्याल ।
घ्रत पात्र रोम चर्मा निहार  क्रम हीन रजक द्विज  हेमकार ॥३६॥
मग जटिल सीस लिय सग स्वान  कर श्याम पात्र वर्जित उपान।
अपशकुन भयेउ प्रारंभ एक  अपजोग  पराजयके  अनेक ॥४०॥
उद्दय प्रभात गत भई राति  आरत  नरेशकी पुर अराति ।
बहु किये अनीति बस करन अग  यह सुनिय वस्त नृप फतयसिंह ॥४१॥

दोहा

सुनत  कोपि  किरवान  लिय  फतयसिंह  महाराज ।
मनहु  इंद्र कर  कुलिस लिय, गिरि-पर  कट्टन  काज ॥४२॥

छंद त्रोटक

सुनके नृप के उर कोप बढ्यो मघवा मनु दानव सीस चढ्यो ।
ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी भरि पेटिय  समिल  सोरनकी ॥४३॥
गमने मनु सिंधुर स्याम गिर  हय पक्खर बिटि सनाह नर ।
गजराजनि घटनि घंट बजे  सुनि आतुर  कातर  प्रान तजे ॥४४॥
सब  सूर  सनाहनि भ्रट जरी  हय हींस नगारनि ठोर परी ।
झरि बिज्जुर सी कर तेग लसी  तिनको लखि ईस मुनीश हँसे ॥४५॥
लखि सेन लिये कर सप्र खिली  मिलि जुगनि एक ही संग चली ।
भुव अतुनसी मस  सेन चले   पत्रधार  पल्लचर सग हले ॥४६॥

---

३९. सर्वंगि—सब एक जाति विशेष। रोमचर्मा—सीधम ढँढके चमड़ेका बखन।
हेमकार—स्वर्णकार, सुनार।

४० मग  स्वान—रास्तेमें जटाधारी मनुष्य कुत्तेके साथ काली होंडी लिए हुए जूते रहित मिला।

४१. अराति—कोटी।

४३ ठठुरीनि—तोपका ठाठा। जुटी—बैलोंकी जोड़ी। जुरि—जुत कर, लग कर।
संमिल—साथ। सोरनि—बारूद।

४६. पत्रधार—पक्षी। पल्लच्चर—माँसाहारी।

सब सूरनके तनु रोप तचे तिनको लखि बावन वीर नचे ।
उडि खेह सुरों रवि मद भये नभ हूर विमाननि छाय लये ॥४७॥
रज हवर अम्बर मग्ग चढे भ्रम कोक विभावरि शोक वढे ।
नभ देव विमाननकी अवली उडि गिद्धनिके गन संग चली ॥४८॥
दल येम नरक्कन के उमडे धुरवा मनु भद्दवके घुमडे ॥४९॥

दोहा

अचल नरक्कनि आसुरनि, जुट सुभट दुहुँ ओर ।
मार मार मुख उच्चरे परी नगारनि ठोर ॥५०॥

छंद मोतीदाम

मिले दुहुँ ओरनि हिंदु मलिच्छ मनो शिव सेन प्रजापति दच्छ ।
पनंकिय मेछ भजो नन मूर ठनंकिय तेज हुतासन सूर ॥५१॥
हनंकिय वाजि मिले दुहुँ ओर धुनंकिय तोप धुनी उडि सोर ।
मनंकिय तोप तुपक्कनि भक्ख मनंकिय आमिख-हारन लक्ख ॥५२॥
मनंकिय तीर कमाननि ओक सनंकिय पखनि गिद्धनि सोक ।
ठनंकिय मत्त मतंगनि थट घनंकिय घूघर पक्खर घट ॥५३॥
मनंकिय अत्र असोम मलाप ववंकिय कातर सद्द कलाप ।
धनंकिय नाटिक भैरव थाप दनंकिय गिद्धनि आमिख खाप ॥५४॥

---

४७ विभावरी—रात्रि ।

४८. धुरवा—मेघ । भद्दव—भाद्रपद ।

५१. पनंकिय—भग्न किया । नन—नहीं । मूर—मूल निश्चय । ठनंकिय—मस्तका उपर ऊपर आया पक्का हुआ, दृढ हुआ, टनटन आवाज हुई ।

५२. हनंकिय हिनहिना कर । धुनंकिय—ध्वनिकी, आवाजकी चली । गनंकिय—गरधार, चवीसे आवाज फैली । तुपक्कनि भक्ख—तोपोंकी खुराक बारूद । मनंकिय—मन किया इच्छा की, आमिषहारन—मांसाहारी ।

५३. मनंकिय—मन मन शब्द किया । ओक—स्थान । सनंकिय—सन सन शब्द किया । सोक—वेगकी उड़ान । घनंकिय—बजी ।

५४. पनंकिय—किया । मनंकिय—विरकन्य मापमा । दनंकिय—चोंची गजना की ।

छनकिय सायक धार करूर मर्नंकिय झांझर रमनि झूर।
धनकिय तीर बरच्छनि छोह ननकिय बोह बिलंबनि सोह ॥५५॥
फनकिय धाष पर्‌यो सिर भार घुनकिय धोकर मुंड निहार।
किनकिय जात सराह सनम रनकिय बीर नच्कनि यम ॥५६॥

### दोहा

सिज्यो सान आयुध असी, कर कद्धी तरवार।
पढर पतिकी सेन पर आयो किलम हकारि ॥५७॥
पक्खर टाप सनाह युत पानि उदग्गन खग्ग।
सग बीर ले पच सत लई तुरग्गनि वग्ग ॥५८॥

### छन्द पद्धरी

हय सूर धूर लग्गी अकास उडि गये पलच्चर मानि त्रास।
दुहुँ ओर तोप दग्गी कराल जगी असाध्य मनु जेठ ज्वाल ॥५९॥
मिलि सोर-धूम तम अंधकार मारुत प्रचंड पंखनि प्रचार।
पर अप्प नकनन परत जान, जुध करत बोल बंधव पिछान ॥६०॥
यह तोर हिन्दु तुरकान जुट्टि किरवान पान इभ कुम तुट्टि।
उपमान प्रान कवि मति अमत घनमद्धि मनहु बिज्जुरि लिमत ॥६१॥
कछवाह मेच्छ गलबांह कीन करि दाव घाव पोरस प्रवीन।
हय पीठि हुते धर परत आय जुध करत देव दानव सुभाय ॥६२॥
खजरकटार चुकुमार मार नटसाल घाव पजर दुसार।
गिरि परत भूमि पग उरझि अत मादिक असाध्य मानहु परत ॥६३॥
कर धार सार वाहत अखंड मुख मार मार परि करत मुंड।
चंचल तुरीनि चढि प्रान जात मनु मीन फन्द परि तरफरात ॥६४॥

---

५५ मूर—मद। दनंकिय—छेद किये। बरच्छनि छोह—परछियोंकी नोक। बोह—प्रहार। मर्नंकिय—निश्चय ही किया। बिलंबनि छोह—लिपटा हुआ छोहा, कवच।
६१ इभ—हाथी। किरवान पान—तरवारकी धारसे। बिमंत—चमकती है।
६३ चुकुमार—गदा। पंजर—शरीर, देह। नटसाल—तीरकी गाँस। दुसार—आर पार छेद। मादिक असाध्य—नशा (अत्यंत) नशो बाला।

आयुष असीह हय परयों सेत, घन घाव मीर धूमत अचेत।
साहस्स धारि हय चढ्यो ओर, फिरि सार धार बजि ठौर ठौर ॥६५॥
केते कुठार बाहत करूर परिघन कितेक सिर चकनचूर।
बंके छछोह करि बोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट सेल ॥६६॥
गुपती कटार ममकार घाव नन परत भूमि पर ठाह पाव।
गिर जात भूमि तन झांफ धारि फिर उठत मार मारहु प्रकारि ॥६७॥
घायल अनेक रन खेत घूमि सनि गई ओनतें रग भूमि।
कुल भान सान जुध येम कीन धरपर्यो भूक्कि आयुध अलीन ॥६८॥

दोहा

पर्यो धरनि आयुध अली प्रजर्यो दवल उजीर।
कर तसवी रक्खी तमकि, लिए सरासन तीर ॥६९॥
मनहु देव दानव दुहुनि पानि उद्‌ग्गन खग्ग।
मुसलमान हिंदवान फिरि, लिए तुरग्न वग्ग ॥७०॥

छंद दुमिला

हय हिन्दुनि हक्किय बीर किलक्किय सोर ममक्किय घोर दहूं।
सिर शेष सचक्किय भूमि मचक्किय कोल मचक्किय दंत कहूं॥
किलमायुध हट्ठिय सायक पट्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये।
कसि बागन कट्ठिय हिन्दु इकट्ठिय बाजिन तट्ठिय घोर दये ॥७१॥
तुरकान तसक्किय हिन्दु ललक्किय हूर हलक्किय हेरिवरं।
कर सेस मलक्किय ढाल ढलक्किय खाल खलक्किय ओन भरं॥

६५ ठौर ठौर—स्थान स्थान पर।
६६ बाहत—चलाते हैं। परिघन—आगल (आयुध विशेष)। छछोह—सोत्साह। तेहरीय—तिगुनी।
६७ ममकार—गहरा। ठाह—सीधा सही ठिकाने पर। झांप धारि—झपट्टा कर।
६९ तमकि—तमक कर, कोप करके।
७१ ममक्किय—मचले घसना, एक दम जल उठना। कट्ठिय—काठी, जीन। मचक्किय—मोचक्की हो गई। चमट्ठिय—चमोठे, धनुषके ऊपर लगे हुए चमड़ेके बंध। तट्ठिय—उस दिशाकी।

खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हुर्म ।
हुम घट ठनक्किय नद्द रनक्किय भरि मनक्किय सद्द भम ॥७२॥
हृयते हय सत्थिय रत्थनि रत्थिय हत्थनि हत्थिय जुद्ध कर ।
भरि बत्थनि बत्थिय लूथप सत्थिय मत्थनि मत्थिय भूमि गिर ॥
बहनी मनु दट्टिय सोर उपट्टिय कातर फट्टिय बैन दुर्भं ।
वहु दीन महट्टिय आरन वट्टिय सारज घट्टिय भार मुख ॥७३॥
तन लेगनि तच्छिय मानु कि मच्छिय तोयनि तुच्छिय त्यों तलफै ।
कटि पायन कच्छिय धाव वरच्छिय धाव तरच्छिय ते मलफै ॥
खग धारनि खड्डिय खड बिहंडिय भारथ मंडिय भीम नच्यो ।
पिय श्रोनित चड्डिय धार प्रचंडिय रम घुमंडिय राम रच्यो ॥७४॥

दोहा

दंपति हूर मपच्छर सूर वरि, बैठि बिमाननि आस ।
मानहु तीय दिन, झुलहर बैठि झुलात ॥७५॥

छप्पय

बजि धप्पी किरवान धीन बज्जा धप्पो मुनि ।
धप्पी गिद्धनि गूद श्रोण धप्पी सब जुग्गनि ॥
हूर धप्पो सिर चुनत हेरि धप्पे नभ-थावनि ।
धर धप्पी वरहूर बीर धप्पे बकि बावनि ॥
दस मुसलमान बलवान खल लूत्थ बत्थ धप्पे परत ।
धप्पे न युद्ध पक्खरपति सूर बीर बके भिरत ॥७६॥

---

७२ छनक्किय—शीघ्र गमन किया, रपटके दौड़े । रनक्किय—प्रसन्नता हुई । प्रोथ—घोड़ेकी नाक । होफ—हाफना, जोर जोरसे सांस लेना ।
७३ बहनी—वह्नि अग्नि । दट्टिय—दपक उठी । उपट्टिय—उत्पन्न हो गयी । वहु दीन—दोनों धर्म, हिन्दु मुसलमान । आरन—युद्ध ।
७४ तच्छिय—कटना । मच्छिय—मछली । तुच्छिय—तुच्छ, कम । कच्छिय—घोड़े । धाव—दौड़ना । तरच्छिय—तिरछा, टेढ़ा होकर । मलफै—कूदे ।
७५ झुलहर—झूला जो गोलाकारमें ऊपर नीचे झूलता है ।
७६ धप्पी—धाप गया, तृप्त हो गया । नभथावनि—नभचर ।

कर थक्के तरवार म्लेच्छ कर थक्के मच्छर ।
अरि थक्के अरिहूर सुर अरि थक्के अच्छर ॥
पर थक्के पल चरनि धरनि थक्की नर भारनि ।
मार मार मुख बकत जीभ थक्की जोधारनि ॥
थक्के विमान असमान सुर नर हमर थक्के फिरत ।
थक्के न जुद्ध पद्धरपती सूरवीर बके भिरत ॥७७॥

भोन धार धर चलत चलत नभ पंक्ति पलच्चर ।
कातर बिमुहे चलत चमत समुहे नर हमर ।
चमत लोह उत्ताल सूल सरगदा परिघ्घन ।
चलत सोर सावंत मनहु डबूर बूंद घन ॥
उरचलत हँस किरवान कर चलत मुगल चलविचल चित ।
नन हिन्दु-पाय पुट्ठिन चलत चपि अँगूठनि भूमि जित ॥७८॥

लोहकार उत्ताल मनहु भैरव घन गज्जिय ।
गजर मनहु घरियार जाम पूरन प्रति बज्जिय ॥
मनहु बूंद वस बात असनि असमान विछुट्टिय ।
येक मेक भल्लेक तडित मानहुनभ तुट्टिय ॥
यम बजिय सार आतुर अनिय जुद्ध जीति फतमल प्रबल ।
बल मीरखान हुय चल विचल वे भग्गे तुरकान दल ॥७९॥

दोहा

हुय तग्गा लग्गा तुरक वे भग्गा तजि बैर ।
पानि उनग्गा खग्ग से सग्गा हिन्दू सैर ॥८०॥

---

७७. मच्छर—मत्सर, घमंड । अच्छर—अप्सरायें ।

७८. बिमुहे—उलटे विमुख । चमात—दमाके । डबूर—वर्षाकी वे बूंदें जो हवाके वेगसे छितर कर पड़ती हैं । पुट्ठिन—पीछे । चपि—चांप कर, दबा कर । जित—जितना ।

७९. उत्ताल—ऊंचो । असनि—बिजली वज्र । अनिय—फौज सेना ।

८० उनग्गा—नंगी । सैर=पीछे ।

छंद भुजंगप्रयात

सबै छांडि सम्बाब नव्वाब भग्गे, सुभट्ट फतैसिहके लैर लग्गे।
फतैसिंह राजा परे मीर खेत लुटे खानके सार सीसा समेतं ॥८१॥
लुटे मेच्छके तोप तम्बू कनातं लुटे अम्बरं कीमखाब बनातं।
फरी तेग बंदूक सिल्लेहखानं लुटे तीर तूनीर सुद्धि कबान ॥८२॥
दुहाई फिरी पद्धरी हिन्दवान लये छीनिके फील सुद्धे निसानं।
रुपे रोक पेटिनके भार फट्टे हयं पक्खर टोप सन्नाह लुट्टे ॥८३॥
गई दीनताई रहे खानजादे कहूं खा गये मेच्छ वेरे विवादे।
फतैसिंहके बोलबाला चहेंगे सदा हिन्दुगी बादस्याही रहेंगे ॥८४॥
बचै ज्यान जो हिन्दु भागे हमारी करें आरता पीरख्वाजे तुम्हारी।
फतैसिंहकी मेच्छ बोलै दुहाई, फतैराव राजा फतै जुद्ध पाई ॥८५॥

दोहा

यमजुट्टे बुह भोर जुध मीरखान फतमाल।
अपनी मति अनुसार कहि बरनै प्रथ गुपाल ॥८६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन सुकवि गोपालदान विरचित चतुर्थ प्रसंग उनियारा युद्ध समाप्त।

---

८१ सम्बाब—असबाब, सामान।
८२. सुद्धि—सहित।
८५. आरता—यात्रा जियारत।
८८. उनगग्ग—भगी। लैर—पीछे।

सुनत पुरान त्रिसध्या साधत विन प्रतिदिन द्विज देव अराधत ।
सम प्रभुता उरमें पूरन हित, एक याग भोजन नित जीमत ॥९॥
टूंक नजीक मेर जग धावो गन सिंघनि बधे गढ लावो ।
सरन मनोरथ करि उर आनत प्रबल नरुकनिको पहिचानत ॥१०॥
आसुर प्रतिदिन चित सलचानो मन ही मन गुनि भयो अयानो ।
सूल पत्र चित चक्र चढ्यो सा ज्ञान मूढ़ मति मूढ़ पढ्यो सा ॥११॥
दिन छिनदा महिमति उर आनत प्रथम गुरुकी रीति पिछानत ॥१२॥

**दोहा**

भय कर करत निरास चित लालच करत प्रवेश ।
आसुर जीव ससांक ज्यो बढ घटि होत हमेश ॥१३॥
भावनगरको तुरक यक, सब तुरकन सिरताज ।
कुसती पटो विनोट कृत सब येलम उसताज ॥१४॥
टूंक मध्य आयो तदन सवन सदन परिसोर ।
एसमगीर अधीर उर सब तुरकन पर तोर ॥१५॥
रखहु सरब पर तब हुकम ज्यान मान सब राज ।
रहुग दवलउजीर कहि तुम हमरे उसताज ॥१६॥
करी सीस घरका किलम न्ई नवाब विचारि ।
हुम पाटवर तार हिम फरि तुप्पक तरवारि ॥१७॥
रुकि नवाबपै आय रहि सब सबावनि मुक्कि ।
पथ सवारनते चढ मेछ गये मग चुक्कि ॥१८॥

---

१४　येलम = विद्या । उसताज = उस्ताद, मास्टर, गुरु ।
१५　एसमगीर = विद्या वाला । तोर = श्रेष्ठ तुर्रा ।
१७　करी सीस = विदा किया । फरि = बड़ी तरवार । तुप्पक = बंदूक ।
१८　सबावनि = असबाब सामान ।

रंगकार तेलार बिनु बिनु कलार दरवेश ।
सारवष 'लावै' असुर पुर नहि करत प्रवेश ॥१६॥
याते महि मसि धार उर तहि स्थल उतरे आन ।
कुसमनि कर उपवन सघन सर नजीक शिवथान ॥२०॥

छप्पय

करनसिंह उमराव, ईश पूजन यम आयो ।
करि परिक्रमण अनेक बील पत्रनि हर छायो ॥
धूप दीप नवेध सुरस श्रीखंड बहोरे ।
अरक सुमन आधार वारि मदाकिनि बोरे ॥
तुम चरन शरन त्रिलोक पति यम सरनागत उच्चरी ।
बदन विनोद आनंदमय करि प्रणाम अस्तुति करी ॥२१॥

अथ शिव स्तुति छंद गीतिका

त्रिगुणात्म ईश त्रिलोचन त्रपुरांत मार प्रजारन ।
अलिकेन्दु बिन्दु अदेव मर्दन वारिधी-विष जारनं ॥
गिरिजास्मित प्रतिमा सिता शिव सगुणात्मक रूपण ।
निगमागम गावत विश्व व्यापक निर्विकार निरूपण ॥२२॥
उरमाल मुंडनि छाल मृगकी खाल केशरि भूसण ।
वपुभस्म लेप स्मशान राजित व्याल पाणि विभूषण ॥

१६. रंगकार = रंगरेज, नीलगर । तेलार = तेली । रंगकार प्रवेश = रंगरेज, तेली, कलार और फकीरके सिवा और कोई हथियार बंध मुसलमान "लावै" में प्रवेश नहीं कर सकता है ।

१. सुरस श्रीखंड = लाल चन्दन । बहोरे = चढ़ाए ।

२२ त्रपुरांत = त्रिपुर नामक राक्षसको मारने वाले । मार-प्रजारनं = कामदेवको जलाने वाले । अलिकेन्दु = निरकलंक चन्द्रमा । अदेव = दैत्य, राक्षस ।

गनभूतप्रेत पिशाच कौतुक ग्रंत सतु जटा जुटी।
जय व्योम केश महेश त्रंबक भीम भूतप धूर्जटी ॥२३॥

दोहा

येम सुभट अस्तुति करी पानि जोरि परि पाँय।
करि बंदन आनदमय, विविध कपोल बजाय ॥२४॥
बाजत सुनत कपोल हँसि धरि करि कंधुर वक्र।
ईशालय गमन्यो असुर, पनही सहित निसक ॥२५॥

छप्पय

तुरक एक तिन मध्य रोप पोरुष गुन रत्तो।
मनहु छाग मुख मूत येम आसुर उन्मत्तो॥
पान सूल कब्बान सुभर तूनीर सिलीमुख।
कटि बाँधी किरवान चरम पावन आवन रुख॥
सम भात सुभट बरजे प्रथम मति आवहु यह मूढमति।
यह ठोर मेच्छ आवत नहीं ये त्रिपुरारि त्रिलोक पति ॥२६॥
सुनत बत्त प्रज्जर्‌यो मानि ईशालय अदर।
ईस सीस दिये पाव कुबुद्धिकारी मनु बंदर॥
रोस नयन मुख रत्त मूछ भूँहनि मग चढ्ढिय।
कर कड्ढिय किरवान कुवत भुजते सम कढ्ढिय॥
यहँ मार मार मुख उच्चरो होय शब्द हुंकार हर।
फिरवान पाम वाही किसम छूमी कटारी हिन्दु कर ॥२७॥

---

२३. सूखा=लगा हुआ चिपका हुआ।
२४ कंधुर=कंधर, गरदन।
२५. पनही=पगरखी, जूता।
२६ मनहु छाग मुख मूत=विषयोन्मत्त बकरा (बकरीके या अपने) पेशाबको मुँहमें ले कर मानो मत्त हो गया हो। पाम=पानि, हाथ। सुभर=खूब भरा हुआ।

भासुरके उर मध्य दंत भतक सम वैसिय ।
मानहु रंध्र मुसाल, खभ ज्वाला गनि जैसिय ।।
वसन वेधि कटाक्ष, कार कुलटा द्रग कढ़िय ।
हृदय वेधि जमदृढ येम तन पारऊ कढ़िय ।।
ऊपरी जानि मपा जलद, चुवत श्रोन रंग चढ़िया ।
मानहु कुमारि जावक सहित कर वतायन कढ़ियो ।।२८।।
ते रिपु धरनी पर्‌यो बहुरि मुरि मेच्छ हकारे ।
सुनि कोतुक पुर लोग, मानि तिनको फिर मारे ।।
यम देवालय मध्य दीम जुट्टे वहँ सम्मर ।
मासवास भरि श्रोन भई प्रतिमा रातमर ।।
छर्‌यो सुमेरु लघु वस लखि ते मग लग्गो ढूकपुर ।
दवलाउजीर दरगा तवन भवन हेतु कूके असुर ।।२९।।

दोहा

उर कपित सूकत अधर, भरत द्रुरत युग नैम ।
चित चकित बवरम तन, कहत नाम कटु बैन ।।३०।।

छंद त्रिभंगी

नव्वाब कहाँरे राज तिहारे, हिन्दुनि मारे सो करि है ।
हमि पिदरहमारे मातुल मारे वैर बिचारेको करिहैं ।।

---

२८. दंत भंतक = यमके दांत । वैसिय = वैठ गइ गइ गइ । मुसाल = मशाल, चिराग । वसन = वस्त्र । जमदृढ = कटारी । पारऊ = दूसरी ओर, आरपार । ऊपरी = प्रकट हुइ । मंपा = बिजली । श्रोन = शोणित, खून । वातायन = वातायन खिड़की झरोखा

२९. हकारे = बुलाये । दीन = धम (यहाँ धम वाले) सम्मर = समर, युद्ध । मासवास = घाँसला । रातंमर = श्याम । वैम = वयस, उमर । दरगा = दरगाह, दरबार । कूक = पुकारे ।

३०. वेवरम = वैवर्ण्य मलिन ।

अब या तुरकानीको हम जानी भई पुरानी पीगरि हैं ।
असमान गिरेगा ना उवरेगा काफर रैगा धू मरि हूं ॥३१॥
दोजिगमें जैहैं तू फल पैहैं दावन गैहैं हम तुमरे ।
ऐसी मनहूनी मसी न सूनी कबरैं भूनी कुल हमरे ॥
अब कोन हमारे देश तुम्हारे आनि पुकारे जोर महा ।
तुम सुनत न ऐसी हम परदेसी बालक भेषी आय कहां ॥३२॥

दोहा

ते लरका मुख विष सुने बायक सायक सार ।
श्रुति समग मेछदके पंजर करत प्रहार ॥३३॥
तब नवाब कथ उच्चरी रक्खहु मममें धीर ।
सकल नरकनिको हनो तब मैं ववलउजीर ॥३४॥
गढ तोपनतें करि सफा पुरतें करों तगीर ।
लावैं हिन्दु न रक्खहूं, तो मैं ववलउजीर ॥३५॥
बोले सुनत तमाम बल कर तोले किरवान ।
जो लावे जुध नहि जुरे से नहि मुस्सलमान ॥३६॥
बड़े मीरखा जुध जुरे तहां परे रन खेत ।
तुजे बिरादर समनके बच्चे पिदर समेत ॥३७॥
कर मुच्छनि मल्ले किसम यम वुल्ले उजबक्क ।
स्याम काम पितुके बयर हृदपै मरना हक्क ॥३८॥

---

३१ पिदर = पिता । रैगा = रहेगा ।
३२ दोजिग = दोजख, नर्क । दावन = दामन, पल्ला । गैहैं = पकड़े हैं ।
सूनी = सुनी । कबरैं भूनी = कबरमें भुनीं ।
३५ तगीर = तग्म्मुर परिवर्तन निकालना ।
[illegible] तोले किरवान = तलवार पकड़ कर ।
३८. उजबक्क = मूर्ख उजड्ड असभ्य, उद्दंड । स्याम = स्वामी । बयर = वैर ।

कर असील किरवान गहि बुल्ले मीर मसूर।
'लार्वे' लरना हक्क है मरना बरमा हूर ॥३६॥

नमक सरीतिन रक्खही, भक्ख अभक्ख समान।
काफर ताजगमें परे भक्खै मीर जहान ॥४०॥
अपने खावंदके हुकम, करहि ज्यान कुरबान।
हक व मरना हक्क है कहैं कृतघ्नी खान ॥४१॥
अक्ख संभ तलारखा उर सहना जमदड्ड।
मरनास करना कहा लरना लावें गड्ड ॥४२॥
यम बुल्लं इकतारखा करना गढ़ चकचूर।
काफर हैं सो बरजना जुरना जुद्ध जरूर ॥४३॥

### छन्द नीसाणी

उस विरयो मुलतानखा मूर्छां कर धल्ले।
मैंचि कवादे टंक तोलि अम्बू कहि बुल्ले॥
हम गिरत असमानको शिर केई बर झल्ले।
दक्खनके दरम्यान कल दाऊ दल मिल्ल ॥४४॥
भूरि जमी असमानद मालों मग भिल्ले।
चल्ले हुलकर सिंधिया भुज पाव न चल्ले॥
क्या किल्ल चोगानदे क्या उस पर हल्ल।
हम किल्ले असमानद कई बेर उथल्ले ॥४५॥

---

३९. असील = असील शील रहित तज।
४० सरीतिन = सरीकता हिस्सा, साथ। भक्खै = कहे।
४१ खावंद = पति स्वामी। ज्यान = जीवन। कुरबान = बलिदान।
४४. उस बिर = उस समय। धल्ले = डाले। मैंचि = खींच कर। कवाद = सींगके टुकड़ोंसे बना धनुष। टंक = ४६ सरकी शक्ति (जैसे हार्सपावरकी गणना मशीनमें होती है उसी प्रकार धनुषकी शक्ति टंकसे की जाती है बा ८, सर का होता है।) अम्बू = अबूत, अथवा बुरा। बर = बार, इस्थ समय।

सीकर ईश नवाबको खोसत कर पट्टे ।
हम किल्ले सकरायदे सोरै पख जुट्टे ॥
तोप बगी बहुँ ओरतं भर सोर उपट्टे ।
सुट्टे भाख जखीरके नर हैमर कट्टे ॥४६॥
उसदी अपनी सेन सब हुल्ले कर कट्टे ।
भाग भी हनुमत थे किल्ले नहि छुट्टे ॥
क्या अच्छे कमनैत थे तीरो सिर तुट्टे ।
फिर उसदे तूनीरतें सब तीरनि खुट्टे ॥४७॥
या तर उमत फौज करि भर पौरुष हट्टे ।
महा उपल मु जफटते सीना विधि फट्टे ॥
हम किल्ले इस तोरसै बहु बेर उलट्टे ।
यारा 'लावा' कोटपै सबके दिल घट्टे ॥४८॥

## छन्द भुजंगी

बडे मीरसाके बचा एक जुल्ला, कहावै सबोमें बड़ मीर मुल्ला ।
बडे मोलवी नेक पढ़के कुरान यलल्ला यलल्लाह यलल्लाह जान ॥४९॥
इनो खून कीना उनो बात अक्खे उनाके इमों वेवप पाव रक्खे ।
सब आपने दीमकी छीनताई जिनोपै मरे मारना हक्क भाई ॥५०॥
बदी जो करै तो खुदाकी सजा है सदा नेक रहना इमोंमें मजा है ।
मियां एक मस्सूरखां नाम जाके बड तेजखाम सबामें कजाके ॥५१॥

४६ जखीर = भण्डार । सोरै पख = सोरे गाँव वालोंकी पक्ष लेकर, या सोलह पक्ष ।
४७ खुट्टे = समाप्त हो गये ।
४८ हट्ट = हटे कटे, मोट ताजे । महा फट्टे = जिस प्रकार हाथी सूडमें पत्थर लेकर अपने सीनेसे टकरा कर तोड़ देते हैं ।
४९ यलल्ला = या अल्लाह, ईश्वर ।
५१ बदी = बुराई । कजाके = कज्जाक, बदनाम, लुटेरा ।

मही मीरखांके वजीर कहावें, वडे मीरजादे नवाव नवाब ।
वडे फारसी पोस कुव्वान चल्ली, मरव्वी पढ़े मुल्लके कल्ल बल्ली ॥५२॥

वड़े मीर मुल्ला कहा यास कीनी, खुदा मीरखांको नई भूमि दीनी ।
मसे मीर मुल्ला कहा एक मानूं, धर्मू जोरिके मूल "लावे न जानूं ॥५३॥

उनोंके वनेंसिंह राजा सहाई, जिनोंकी फिरै देश देशों दुहाई ।
ववाजान याके जुरे जग 'लाव', उनोंके रहेगा तुमारे न भाव ॥५४॥

सवे कूंममें यह नस्के वुरे हैं जुरे जगमें यह कहूं ना मुरे हैं ।
जिते ये नस्के जुदे नाहि जानो, सबै वेशके 'उन्नियारो 'लवानो' ॥५५॥

वडे मीरखांके रहे पीर पक्खें, उनोंके कवीले इनो कैद रक्खै ।
कहा जो हमारा उनों भी न माना सब यार जानो रह्या नाहि छांना ॥५६॥

सबै सोर सीसा सवाव लुटाये क्या लाम देके कवीला छुटाये ।
तुम्ही कल्ल याप गये उन्नयारे कला खोयके रोय पीछे पधारे ॥५७॥

हमें आज लौं बात ऐसी निहारी मबै जो न मानू रजा है तिहारी ।
मवै मीर मस्सूरखां बस बोले, किये नैन "रत्ते करों तेग तोले ॥५८॥

उमीरी फकीरी बड़ एक मांटे खुदाने दई है किसीके न बांटे ।
किनू कायरी सूरताई वई है जिनो अप्पनी अप्पनी ही लई हैं ॥५९॥

दरग्गाह जावो फकीरों पढ़ावो तसव्वी फिरावो खुदाको लडावो ।
तुम्हें बात ऐसीनसे काम क्या है बडे जो कहाये खुदाकी रजा है ॥६०॥

---

५२. फारसी पोस = फारसीदां, फारसी भाषा जानने वाले । मुल्लके कल्ल बल्ली = कल बल करके बोले ।
५६ छांना = छुपा हुआ । पक्खें = पक्ष पर, मदद पर ।
५९. उमीरी = अमीरी, ठकुराई । मांटे = फर्क है, अंतर है । बांटे = हिस्समें ।
६० खुदाको लडावो = ईश्वरका लाड (प्यार) करो; ईश्वरका भजन करो ।

रहे पीर दोला मन्ति तिहारी यलल्लाहके हाथ ह्व जीति हारी।
करि प्राज हिन्दूनि ऐसी अनैसी, तिहारे रही राजके पाज कैसी ॥६१॥

## दोहा

फरिय मीर भृकुटी कुटील बोले येह जुवाव।
किय रजपूतहि रज्ज बिन किय नवाब बिन प्राव ॥६२॥
करहु अब चतुरगनी सीसा सोर सवाब।
कल बनास उतरहि कटक यम दिय हुकम नवाब ॥६३॥

## छंद मोतियदाम

भरो सत मस्त गयदनि सोर भरो फिर पीठ मदतिय प्रोर।
हकी सब तोपन जुट्टि लगाय धुनी लबवान पताकनि छाय ॥६४॥
बढे गजराजनि रग चढ़ाय करे उनमत्त घनू मद पाय।
चढै छलतें हुजदार कजाक मनो हनुमंत चढ्यौ मयनाक ॥६५॥
सिरी असिता सिर फुल्ल समेत मनो तम राहु पत्रा रहि केत।
किते गजराजनि पीठ निसान किते गज पीठनि नोबत खान ॥६६॥
किते चवदंडिय होदनि छाय दयं अगबेरनितें झुलवाय।
चले मिलि दंतिय पक्ति समग्र मनो बग पक्ति उठी घन अग्र ॥६७॥

---

६१ अनैसी = खोटी बात बुरी बात, असत्य। पाज = सीमा, मर्यादा।
६२ किय = कियों, अथवा संदेह सूचक शब्द है।
६४ जुट्टि = जोड़ी, बैलोंकी जोड़ी। धुनी = धूँणी धूँम धूआ। लबवान = लोबान, एक प्रकारका सुगंधित द्रव्य जिसको 'धूप' के स्थान पर मुसलमान लोग जलाते हैं।
६५ घनू = घणों, अधिक। हुजदार = महावत हाथीको चलाने वाला।
६६ सिरी = श्री हाथीके मस्तक पर किये जाने वाले रंग आदिको कहते हैं असीता = काली। राहु = राहु। केत = केतु।
६७ चवदंडिय = चार डंडे वाले, अम्बाबाड़ी छतरीदार हौदा। अगबेरनि = जंजीरोंसे।

लसै उपमा यक ग्रोर ग्रथम किधा शनि भोन शशी प्रतिवव ।
ठनकत घँट घमैं तनु मोर मनू कुलटा चलि चित्तहि चोर ॥६८॥
भ्ननकित झल्लिय कठनि सोर मनो वरसागम बुल्लिय मोर ।
घमाघत अकुंधतें धुजवार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार ॥६६॥
चले इम भंदुक भंचत पाय जरे पग लोह मनो जम जाय ।
चवै मद पूर छमठ्ठिय राह मनो वरष घन भद्दव स्याह ॥७०॥
किते विरच्व गज मस्त करूर करें गुज गीरनके चकचूर ।
उखारत मूल पिचू वदु तार वजारनि हाक परी हटनार ॥७१॥
ग्रनी चख भालनि भेरिय भग्र, धुवा चरखीनि मची घम जग्र ।
तरायल हत्थनि दे वहुतारि लये पुर वाहिर निठ्ठि निकारि ॥७२॥

## दोहा

उर ग्रहिमति सिर भिरि उरस हय पैदलनि समुच्च ।
यम उजीरदवला चल्यो कुच्च कुच्च ग्ररु कुच्च ॥७३॥

## छंद मुखंगी

चढ्यो मीरखा सग जंगी सवाव चढ्या मालवी जावरेका नवाव ।
चढ़े वाजी ह्लेके सवै सैद सगी हय पक्खर टोप सन्नाह जगी ॥७४॥

६६. झल्लिय = झालर, हाथीके गलेमें पहिनाई जाने वाली घूघरोंकी माला ।
७० भंदुक = हाथीके बांधनेकी जंजीर । छमठ्ठिय = गडस्थल की स्थानोंस ।
जम = यमराज ।
७१ विरच्चे = कोपित । गज गीरन = मजबूत दीवार । पिचू = कैरका वृक्ष नीमका वृक्ष ।
हाक = हल्ला । हट्टनार = हटनाल ।
७२ भेरिय = सटा कर, भिड़ा कर । तरायल = चचल । वहुतारि = बहुत सी ।
७३ उरस = आकाश ।

चढे सिघके भायनग्री मुसल्ले, फरीं से कमट्ठे वय केक भुल्ले ।
चढे कुन्च दब्बे सिसा हीन मत्थे, इरानी भरक्खी सुरक्की चिगत्थे ॥७५॥
दिलीवाल सगी चढे पुद्ध काज, जिनों सीसपै मक मत्ती विराज ।
चढे यंगसी रूप सींवीं गिलज्ज, मत मत्तनि कत्त कांता विलज्ज ॥७६॥
चढ्यो मीर मस्सूरखां तेज ताजी जिनों वेख मारुत्तकी गत्ति लाजी ।
चढ्यो खान दोरा बरक्खी घुमावे फुलै मग ये तो जरद्द न मावै ॥७७॥
चढ्यो जावदीखा सुरा मध कंध, लगाए दुसालो जिनो जेर वंधं ।
चढ्यो जाफरीखां नचै वाजि ग्रैसे जिनूके मगे मृग्गके पाव कैसे ॥७८॥
हुरेई चढ्यो वाजि साहावदीन भये कथ केकीनक मान हीन ।
चढ्यो दावदीखा हय वाग खच्चै मनो पातुरी चातुरी भूमि नच्चै ॥७९॥
चढ्यो मीर कालू हयं वे विरच्चे मनो मेक मूंगा चत पाल मच्चै ।
चढ्यो पीरखान यतै वाज भक्खी जिनोंके रहे पीर चोवीस पक्खी ॥८०॥
चढ्यो गोसखान उड्यो हय हुरेई मनो आसमान विमानं परेई ।
चढ्यो मोजदार दिवामा रवद्द हय पाव मंडै करीके हवद्द ॥८१॥

---

७५ कुन्च दब्बे = कूँचीके समान दाढीवाले, (कुन्च = एक प्रकारका औजार जिससे बुनकर लोग सूतको सुलझाते हैं ) चिगत्थे = चगताई। कमट्ठे = कमान। केक = कई। भुल्ले = भूले।

७६ दिलीवाल = दहली वाले। यंकस्सी = टोपीके ऊपरकी कलंगी। मत मत्तनि = भाँति भांतिके। कंत कान्ता विलज्ज = दूसरोंको भी लज्जित करने वाले गंभे बने ठने।

७७ जरद = कवचमें।

७८ बंधबंध = मस्त हुआ।

७९ हुरेई = नीला, वाजिका विशेषण।

८१ परेई = परी, अप्सरा।

चढ़्यो सेख सत्तारखाँ बाजि तत्ते उडै आसमान मनो पौन पत्ते।
चढ़े खान जादे किते बाजि फेर उलट्टे सुलट्टे पटे दाव मेरैं ॥८२॥
चढे मीरजादे सबे एक सत्थं, लखै आफताब जिनो बामि रत्थ ॥८३॥

**दोहा**

पच अयुत लय संग दल, होय किलम हमगीर।
कियो मुकाम उलंघि जल लख वासिष्टी तीर ॥८४॥
करनसिंघ प्राकार प्रति सजि पूरन सामान।
कग्गल बंधुनको दये आसुर आवत जान ॥८५॥

**छप्पय**

उनिमारे पति प्रबल मदत फतै नृप भेजी।
चोरू महरूर्यो मिले तोर उत्थल अगरेजी ॥
स्योरापति हनुमत मिले बघव पचालय।
पाट थान लद्दान सदा असुरां उर सालय ॥
भारत्थ करन मारथ तनय संग सुभट लाय सबल।
'लावै उबेल आये वहूं पातिल गोबरधन प्रबल ॥८६॥
नग मारन मघवान दक्ष मारन शभूगन।
मृग मारन मृगराज पनग मारन पनगासन ॥
कन्हर मारन कंस हरी हिरनाक्ष विदारण।
हर मारन मनमत्थ पार्थ खांडीव प्रजारन ॥

---

८४ हमगीर = साथ। वासिष्टी = बनास नदी।
८५ कग्गल = कागज, पत्र, चिट्ठी।
८६ चोरू, महरूर्या = गाँवोंके नाम हैं, यहां उनके स्वामियोंसे मतलब है। तोर = तेवर, त्यौरी। तोर उत्थल अंगरेजी = अंगरेजोंकी परवाह न करके। उर सालय = हृदयमें खटकने वाले। उबेल = मदद। पंचालय = पंचाल्या एक ठिकानेका नाम। पाट = पाटन। थान = थाना एक ठिकानेका नाम। लदान = लदाना, एक ठिकानेका नाम।

तुरकान सेन मारन तदन, इसो रूप बरसावियो ।
'लावै उमेल बधू प्रबल यम गोवरधन भ्रामियो ॥८७॥
मार छोर कर गह्यो धनुप कामासुर मारन ।
ईश छोर ऊघरयो नयन तीजो प्रज्जारन ॥
धनिस छोर व्रत परयो बहुरि मारुत झकझोर्‌यो ।
सार छोर दुद्धार बहुरि वाको विप बोर्‌या ॥
रन पत्थ छोर सारथ हरी सिंघ छोर पक्खर धल्यो ।
करनेश छोर कल्लह करन बहुरि भ्रामि पातिल मिल्या ॥८८॥

## दोहा

बखतावर गोविन्दवर वीर पराक्रम सूर ।
आये लावै बंधि लत जैपुर हूंत जरूर ॥८९॥
निसि वासर उनमत्त रहि भ्रासुर जुत्थ उपाल ।
भ्रो बखतो नव्वाब उर सालत ज्यों नटसाल ॥९०॥
लावा-पति बधू प्रबल भ्रलवर रहत भ्रसथ ।
तिनको धावन पठ्ठये लिखे बुलावन भंक ॥९१॥

८७ नग = पर्वत । मघवान = इंद्र । पनगाभ्मन = गरुड़ । कन्हर = कृष्ण ।

८८ छोर = छोड़ा नहीं, और । ऊघर्‌यो = प्रकट किया खोला । दुद्धार = दोधारा, दोनों तरफ धार (धार) वाला । बोर्‌यो = डुबाया । पत्थ = पार्थ, अर्जुन । घल्यो = डाला गया । कल्लह = कलह, युद्ध । पातिल = प्रतापसिंह ।

८९ बंधि = बांध कर, पकड़ कर । हूंत = से ।

९० जुत्थ = यूथ, मौज । उपाल = उछल कर । बखतो = बखतावरसिंह । सालन = खटकना है । नटसाल = काँस गाँस, काँटेका वह भाग जो टूट कर शरीरमें रह जाता है ।

९१ धावन = दूत । भंक = भांक अक्षर, पत्र ।

किल्ल रक्खनहार नहिं आज 'सलो' अनभग ।
'रैनालय'में थट्टियो तुज्जि भरोसे जग ॥६२॥

जुध 'महुकम' थट्टो अदन थो 'सादूल' सहाय ।
आज 'पना' ! तू सीस पर भो असमान उचाय ॥६३॥

पहिले जुद्ध खुमानसी असुरा दिया उत्थल्लि ।
आज सुआन भुजानप सरम समूची झल्लि ॥६४॥

छप्पय

येम पत्र करलग्ग लिखे अलवर पुग्गाये ।
पति पति प्रति पति सकल बधुनि सुनि पाये ॥
अंक येम उप्परे लोभ लग्गो पुर लुट्टन ।
आयो सरित उलंघि जुद्ध अपने गढ़ जुट्टन ॥
छुट्ट न दान किरवान बिनु कछु दल ओर उमंगिया ।
लग्गियो केत वासर किरन ज्यों आसुर लाग लग्गियो ॥६५॥

मत्तो मत्ति उर मद्धि पत्र भूपति कर दिन्हिय ।
बचि सत्त वनराय नयन रायाक्त किन्हिय ॥
बयन येम उच्चर गमन पल अज न कीजे ।
सिलह तोप बारूद जुद्ध समत सब सीजे ॥

६२. सलो = सलहसिंह । रैणालय = रणधीरका घर ।

६३. महुकम = महुकमसिंह । थट्टो = स्थापित किया । सादूल = शार्दूलसिंह । पना = पनेसिंह । उचाय = रैंणो सर पर रखो ।

६४ सरम = शर्म, लज्जा । समूची = सम्पूर्ण ।

६५ पुग्गाय = पहुँचाये । उप्परे = प्रकट हुए । केत = केतुमह । वासर किरन = सूर्य ।

अब सूम जुद्ध करिबो उचित पूरन मदति पठाय हैं।
जो रहत किलम सिर जोर तब बहुरि सबलता भाय हैं ॥६६॥

लखनेऊ पति कवन कवन पचास परसिय।
पल्हनपुर पठ्ठान कवन भागलपुर पसिय॥
खस भावलपुर कवन कवन सिंधी जिल्लामत।
को नपुरो नव्वाब, टूक जावर मिल्लामत॥

अनयास होत मवासपति तुरक तोर तुट्टे तदन।
बनराव यम कथ उच्चरत, सोर परत दिल्लय सदन ॥६७॥

सत मत्ते मातंग द्वार खमारनि गज्जहि।
अयुत पच रजपूत सकल आयूध तन सज्जहि॥
प्रबल तोप रथ पक्ति याम प्रति नोबत बज्जत।
सूर सुभट तोखार सार पक्खर जुत सज्जत॥

बावन दुरग थके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति।
बखतेस तनय बनराव नृप करत राज अमवर नृपति ॥६८॥

## छंद मोतीदाम

चढे बनराव सहल्लनि भोर परै सब सत्रुनके घर सोर।
जुरे नर हैमर गैमर जुत्थ मनो चतुरगनि राघव सत्थ ॥६९॥

६६ केस = देर, विलम्ब। मत्तो भति तर मद्धि = मनमें अपने आप ही मनसबा करके अपने आप ही खूब सोच विचार कर।
६७ अनयास = अन आस, आशा रहित।
६८. तोखार = घोड़े। छोगो = शिरोमणि।

परे बहु ठोर दमीसनि धव नच मनु लंक्प काल फुटव ।
निषासनि घप्पिय सेत इकार किसे सव सोपनि फट्टि पहार ॥१००॥
करी समकौर करीनकी पंति उठी बरखा मनु ग्रीषम भंति ।
इस रद इंदव देह दुनाय जुटे मनु राह सनम्मुख आय ॥१०१॥
जर सब पीवरसं सम दंत बसी हिमके मनु मोन वसंत ।
मल्लकत मूल हवद्दनि पास किधों भ्रर मध्य रच्यो कयलास ॥१०२॥
हय सफ सारनकी सुरसार खनकित पाखन अग्गि उपार ।
सजै हिम साजति भूखन गात ग्रस्या मनु आतप भान प्रभात ॥१०३॥
सस पति पक्खर पिट्ठ निसंक कस कर वग्गनि कधुर वक ।
गुहे कच बालनके भरि बस्थ सितासित पीत कनाविक सत्थ ॥१०४॥
मिलै जरदोजनितै मखतूल सरासनप मनु आतस फूल ।
वरक्खत पच ततं तनु अच्छ, तलप्फत मीन मनोजल तुच्छ ॥१०५॥

१०० ठोर = थोर । दमीसनि = नगारे, भक्कार । धव = रणनाद । लंक्प = लंकापति रावणके । निषासनि = मासोंसे ।

१०१ समकोर = बराबर, एकसार । इंदव = बहुवमें चन्द्रमा । राह = राहु । देह दुनाय = शरीरको दोहरा करके । (बंक चंद्रमहि ग्रसै न राहू, तुलसी)

१०२. पीवर = पीवस, धातु विशेष । मोन = घर । हवद्दनि = हौदा ।

१०३ सफ = पंक्ति, कतार । साजति = घोड़का साज सामान ।

१०४ १०५. गुहे सत्थ = घोड़ेकी अयाल (गरदनके) बाल कनोतीके साथ सफेद काले और पीले डोरोंसे गुथे हुए थे ।

पक्खरपति जिस घोड़े पर बैठे थे वह 'पचकल्याण (पांच सफेद धब्बे वाला) था । सजै पति मनोजल तुच्छ—पक्खरपति उस पंच कल्याण घोड़की पीठ पर धाव निशंक हाथमें लगाम कसे कंधेको तिरछा कर बैठे हुए थे उसकी गर्दनके बाल कनोतीके साथ कफेद काले और पीले डोरोंमे गुंथे हुए थे ऐसा मालूम होता था कि मानो रेशम पर जरदोजीका काम हो रहा है अथवा धनुष पर सूर्यमुखी फूल लगा हो । उसके तेज और स्वच्छ शरीर पर थे पांचों चिन्हसे जब वह उछलता था तो मालूम होते थे मानो थोड़े जलमें मछली तड़पती हो ।

उडे नभ रागनि सग्ग उछोह, मलप्फत पंच वरच्छनि वोह।
सजे तिनपै असवार कजाक, छके उमत दुवारनि छाक ॥१०६॥
'लखा हनुमंत जिसे उमराव जिनूं जुध मद्ध न डुल्लत पाव।
चढ्यो मनु सिंधु उलंघत पाज जुरे जुध कौन वनेंसर्ते आज ॥१०७॥

### दोहा

यम अलखी बनराव नृप हारि जीति हरि हत्थ।
लरना मरना मारना येहु तिहारे सत्थ ॥१०८॥
कर मुच्छनि चल्ले रवत बुल्ले वनो' सुजान।
जो सम अग्गल भग्गि हैं उग्गि हैं पच्छिम भान ॥१०९॥
सकल जुद्ध सामान दिय विदा किये बनराज।
मनु जग बोरनको उदधि लगे उलंघन पाज ॥११०॥
थाना' पति हनुमंतसी' कँवर गढी पति कान'।
बीजवार गढपति 'लख कर झल्लीं किरवान ॥१११॥

### छंद मोतीदाम

गढीपतिके रनजीत कुमार सुनी यह बत्त गह्यो कर सार।
किते वसके सस टूक नवाब हरौं गज वाजि करौं विन आब ॥११२॥

---

१०६ उछोह = उत्साह सहित। मलप्फत = उछलते हैं। रागनि = रानोंके (जंघाके) इशारेसे ही। दुवारनि छाक = दूसरी बार निकाली हुई शराब। पंच वरच्छनि वोह = पांच बरछियों जितनी लम्बाई तक।
१०९ रवत = रावत वीर। अग्गल = आगे सम्मुख।
११० बोरन = डुबोनेके लिए।
१११ बीजवार = अलवर रियासतका एक प्रसिद्ध 'ठिकाना'। थाना, गढी = ये भी अलवरके ठिकानोंके नाम हैं।

यतै हनुमत कहि यह भत्त भवै मन मेच्छ भये उन्मत्त ।
गह्यो कर बान उदग्गनि हत्थ, महिख्य समान उनत्थहि नत्थ ॥११३॥
'मखै' यम अक्खिय मत्त निसक करो खल जुद्ध निकारहु बंक ।
सबों दल पूर मर्दसिय संग करो न विलंब जुरो यम जंग ॥११४॥
हनूं खलके दल खग्गनि जोर हाकिते मग ग्गहि छाँडि मरोर ।
यतो बलहीन करो खल जुद्ध जुरै नन जाय कहूं फिर युद्ध ॥११५॥

**दोहा**

बिटि सनाहनि भट उर सकल जुद्ध तन सज्जि ।
चढ़े बीर पखरपती पूर नगारनि बज्जि ॥११६॥

**छंद भुजगी**

घन घोर बंबील बज्जे निघात उडे गैन पक्षी मनो तूल पात ।
रणों सूर बीर चढ्यो बाजि तत्ते, भये रोसकी ज्वालतें नैन रत्ते ॥११७॥
महासूर बीर चढ्यो येम सूजो मनो मालके बाजिपै भान द्रूजो ।
पनू पक्खरादी हय पीठि ओपै मनू कामकी सेनप ईश कोपै ॥११८॥
'पना'को तनू येम 'गोपाल' सज्ज धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै ।
चढ्यो रेवत पूत 'सुज्जान' केरो भयो जेठके भान जसो उजेरो ॥११९॥
'हरन्नाथ' कुम्मेरको मद चढ्यो भने आसुरोंक घरो सोक बढ्यो ।
दरोगा चढ्यो हाजरयों तेज ताजी करै लून राई भई रम राजी ॥१२०॥

---

११३　महिख्य = भैंसे । उनत्थहि नत्थ = बिना रस्सी वालोंके नाकमें रस्सी डाल दू गया ।
११५　जोर = बल, ताकत । मरोर = मरोड़, ऐंठ, गर्व ।
११६　बिटि = वेष्ठित करके । भट = भाटियें कड़ियें ।
११७　बंबील = नगारे । निघात = चोट । गैन = गगनमें, आकाशमें ।
११९.　धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै = वह भाला लिए हुए था और उसका घोडा अपने खुरसे जमीनको खोदता था । तनू = पुत्र । रेवत = हाथी । केरो = का ।
१२०　करै लून राई = लोन राईको ले कर और वार कर अग्निमें डाल दिया जाता है । ऐसा करनेसे 'नजर' दृष्टि-दोष नहीं होता ।

कपाली चढ़्यो बैलपै लैर लग्गो चढ़ी सिंघ काली मसे मैंस भग्यो ।
गिरि मादिके मेखली रुड माला गिरे भग्ग ततावली मृग्गछाला ॥१२१॥
गिर्‌यो कालकूट परी भंग तुम्बी, परे बिरपुरे भूमिपै नाग बिच्छी ।
जटी भूत प्रेत लिये लैर लग्गो छुठी बीरभद्र तमासैं उमग्ग्यो ॥१२२॥
चली जुग्गनी चोसठी पत्र झल्ले, बसूहीन सट्ठी महाबीर चल्ले ।
मुनि जत्र पाणी प्रसोम बजायो ललक्कारि भैरू किलक्कारि भ्रामो ॥१२३॥
गुडी लों उडी गिद्धनी व्योम छायो नहीं हूर रंभा रचो पथ पायो ।
भिरी पक्खरा पक्खरो भीरि पूर हय गज्ज गाहं भय चूरमूर ॥१२४॥
भरा धूसरी धूरि भ्राकास लग्गी हय खूरतें सीस धूनै पनग्गी ।
सबै सूरवीर चढ़्यो सिंघ भेस कर्‌यो पद्धरि सेन 'लावै प्रवेस ॥१२५॥

### दोहा

अब भरजन राठोरको, भावन कहू बखानि ।
जुद्ध भयो लावै' अदन जिहि बिध जुट्टे ग्रानि ॥१२६॥
बनर्यासिंघ मातुल तनय जिनो भरज्जुन नाम ।
मेरतियो कुल राठवर पुर'मारोठ सुधाम ॥१२७॥
हैदल पैदल संग दय बिदा किये बनराज ।
यम कहि 'लावै गढ़ की तुज्ज भुजों पर लाज ॥१२८॥

### छंद मोतीदाम

चढ़्यो हय पक्खर बिट्टि रठोर पर्‌यो सिर खेप समस्तनि जोर ।
झुकी मनि मत्थ फनी फन चपि उरब्बिय ताम परस्पर कंपि ॥१२९॥

---

१२१ कपाली = शिव । लैर लग्गो = पीछे २ चला । मादिके = मादक द्रव्य ।
१२२. जटी = जटा वाले, शिव । लैर = साथ ।
१२३. बसूहीन सट्ठी = आठ कम साठ अर्थात ५२ भैरव ।
१२९. उरब्बिय = उर्वि पृथ्वी । ताम = उस समय ।

चले चक पत्र चलद्दलभाति छलासम ज्यों असला बिचलाति ।
सस्त्रनि तेज हुतासन धुक्ख प्रल रविकी मनु तुट्टि मयुक्ख ॥१३०॥
हय सफ वख्य हरग्गिर खिज्ज खिवैं खुरतार मनो घन खिज्ज ।
उठी रज डंवर अंवर गोम विहगमकी पर वज्जिय व्योम ॥१३१॥
कियो मनु वाडव सिंधु प्रकोप कियो मनु कसपें कन्हर कोप ।
भरी मनु मिंच करीनिपैं डग्ग अरज्जन येम लग्यो जुध मग्ग ॥१३२॥

छप्पय

जिमि जैमल राठोर मरन चित्रागढ़ पायउ ।
पिरथुर अमरि ईस येम अरबुद्दनि आयउ ॥
घर छुट्टत चवेल भानि अन्हरू सिर तुट्टिय ।
कन्हर पन कर हल्ल जग फत्तेपुर जुट्टिय ॥
मह सोर नवन राठोर सन वीर नूर बरसावियो ।
पन भल्ल पूर मारन मरन येम अरज्जन भावियो ॥१३३॥
लख बटेर सिच्चान मनहु चीतो मृग मारन ।
हेरि पत्थ अमद्रम बाघ हेर्‌यो मनु वारन ॥
हर हेर्‌यो मनु मार सोर हेर्‌यो हुतासन ।
सर हेर्‌यो आगस्त पनग हेर्‌यो पनगासन ॥
पायो कुलग कुल बाज मनु, भीम दुसासन पावियो ।
भासुरा सीस 'भावें' मलफि येम अरज्जुन भावियो ॥१३४॥

१३० यहां 'पत्र' के स्थान पर 'पत्त' पाठ होना चाहिए। चक पत्त = दिशाओंके मालिक। बिचलाति = विचलित हो गये।
१३१ सफ = पंक्ति, कतार। खिज्ज = खिजना, टूटना। खिवैं = चिनगारी निकलती है चमकती है। डंबर = समूह। गोम = घुपता गया।
१३३. चित्रागढ़ = चित्तोड़। पिरथुर = पृथ्वीराज। अरबुद्दनि = अर्बुदाचल, आबू पहाड़।
१३४ पत्थ = पार्थ अर्जुन। वारन = हाथी। मोर = चान्द्र। मलफि = कूद कर।

जिमि आलधर सक्कि जुद्ध जुट्टन हर धायो ।
हैहय नै हुकार मनहु फरसाधर धायो ॥
पडव पत्थ सहाय कृस्न धायो जिमि जद्दव ।
कृपि सुकेतें मेध मनहु धायो धुर भद्दव ॥
हय हक्कि बीर मातुर यतै ग्ज ब्वर नम छाबियो ।
लावै उवेस असुरां करन येम अरज्जन भवियो ॥१३५॥

## दोहा

यम अरज्जुन आविया भावा' मधि राठोर ।
तदन रवद्दनके हिये पर्‌यो भचानक सोर ॥१३६॥
तुरकनके भागम तदन कर गहि ऐंचें काल ।
आये जुत्थपै जुत्थ मनु सिंहालय भगाल ॥१३७॥
के मरना के मारना यम नवाब पन कल्लि ।
हम ब्वारि हैं फीलतें 'लावो कोट उत्थल्लि ॥१३८॥
फिरी प्रबल चतुरगनी पुर दुरग चहुं ओर ।
इत हिन्दुनि उत भासुरनि दगी तोप बहु ओर ॥१३९॥

## छन्द मोतीदाम

यतै दुहु ओरनि दग्गिय तोप किधे मनु काल प्रलै कृत कोप ।
मिले सव मध्य जमूर जुगाल किलक्कत जुग्गनि आनि कराल ॥१४०॥
भयो दुहु ओर भयानक सद्द पर्‌यो उन्मत्त मतग्गनि मद्द ।
भयो उर सूरनके उमरग थरत्थर कपिय कातर अंग ॥१४१॥

१३९ फिरी = घूमी घूम गई, घेरा डाल लिया । दुरंग = किला ।
१४० सद्द = शब्द । सवमध्य = तोपोंके शब्दोंके बीचमें । जुगाल = दोनों ओरके ।
१४१ उमरग = उत्साह ।

धुमी उठि सार उपट्टिय ज्वाल किधों घन सुट्टिय विज्जु करास।
सुपक्कनि तोप जमूरनि जुट्टिट पर नर हवर प्रान विछुट्टिट ॥१४२॥
उठी झर सोर वियोरत बाय लगी मनु ग्रीषमकी अलु लाय।
तलत्तलि तोय तते मनु तेल लग दुहु ओरमिते यहु खेल ॥१४३॥

छप्पय

मुख्य तनय सादूल सुभट सगी रोपारुन।
सजि आयुध सन्नाह बीटि पक्खर तोपारुन॥
बल खग्गनि खडिहु, येम बायक मुख बुल्लै।
पाहन रेख प्रमाण पनै पूरन पन झुल्लै॥
हय हक्कि समुख चतुरगनी बहुरि मुगल दल मारिहु।
करि जुद्ध येम चवग्गनि फिरि आमुर देख प्रजारिहु ॥१४४॥

दोहा

पतयसिंह पद्धरपती सूरवार गहि सार।
तदन मुगल दलपै प्रबल यम हक्के तापार ॥१४५॥

छंद मोतीदाम

चढ़े मनु सिंधु उलथन पाज करी मनु सिंह करीनिप गाज।
किधों बडवानल कोप समुद्र किधों हथनापुरप बलिभद्र ॥१४६॥

१४२. धुनी = धूनी धुआँ धूम्र।
१४३ झर = लपट ज्वाला। सार = बारूद। वियोरत = फैलाना। बाय = वायु।
लाय = अग्नि। तलत्तलि = तलातल तड़का। तते = गरम हो गया।
१४४ रोपारुन = गुस्सेसे लाल। तोपारुन = घोड़ोंको। चवग्गनि = चौगान, मैदान।
१४५. तोपार = घोड़े।

किधों कुल अद्रनि इंद्र हकारी किधों कुल कद्रुनिप पनगारि ।
किधों सर सोखन कोप अगस्त किधो द्रुम डारिनपै गज मस्त ॥१४७॥
किधों कुल रावनपै रघुराय किधो कुल कंज हिमालय-धाय ।
किधों सहिस्राभुजपै भृगुराम, किधो हनमत असोक अराम ॥१४८॥
किधों इभकुंभ वकोदर हत्थ किधो जमदूत्थहिपै पन पत्थ ।
किधों त्रिपुरासरपै त्रिपुरारि किधों मुरदानव सीस मुरारि ॥१४९॥
किधों मृग जुत्थनप मृगराज किधों लखि चग कुलगनि बाज ।
किधों दसके मखपै हर ताप किधो कुल आवखपै ऋषि थाप ॥१५०॥
किधों घननादपै लक्ष्मन बीर जिही कुल मेच्छ पनू हमगीर ॥१५१॥

## दोहा

तेज बाजि इनके तदन पनयसिंह यह विद्धि ।
मुख्ख चढ्ढे जेते किलम मरे परे धर मद्धि ॥१५२॥
किते बोह कीने किलम लग्गे लोहन काय ।
प्रबल नरुकनके तदन सकर भयो सहाय ॥१५३॥
येम जोरि चतुरगनी पद्धरपति पन्नेस ।
किलम सहारनको भयो बीरभद्र गनमंध ॥१५४॥

## छंद भुजंगी

करो तेज ताजीनकी बाग झल्ले धरा भूटिबेका महासूर चल्ले ।
मतो मत्ति ले सग जगीन सल्ले पर मेच्छ किल्लोंनपै जाग घल्ले ॥१५५॥

१४७ अद्रनि = पहाड़ । कद्रुनि = सर्प ।
१४९ वकोदर = पांडुपुत्र भीम । पत्थ = पार्थ, अर्जुन ।
१५० चग = चंगी, मोटे ताजा । कुलग = एक बतलकी जाति ।
१५१ हमगीर = समान स्वामी । जिही = ज्यूँही वैसे ही ।
१५२ यह विद्धि = इस प्रकार । मुख्ख चढ्ढे = सम्मुख आया ।

हरी दस्त मालीत भूमी प्रजारी परे आसुरोंके घरो सोक भारी।
पुरी प्रज्जरी मेच्छकी धूम धायो धरा व्योम धप्पे मनूं अभ्र छायो ॥१५६॥
मिले नग्र मेच्छववारे गरद्द भयो दूक भारी हहकार सद्द।
धके धोचके तारुनी वृद्ध छोना, किती आसुरी गर्भ थांवत ऊना ॥१५७॥
मृगाक्सीपी त्यों पुरी चक्र फूटी किधौं धीर पुक्षीर लाहार चूटी।
हरे कोपि कुट्टी पुरी त्यों अनगी विधूसे पनै मेच्छकी भूमि वंगी ॥१५८॥

दोहा

बूडी सोक समुद्र बिच जीव निसासनि जात।
बीबी ववलउजीरकी यम लिखि भजी बात ॥१५९॥
'पना' एक रघर सुना जिना दिया फुरमाया
पकरेंगे हमको वहै आजकालमें आय ॥१६०॥
सकल 'दूक' वसवान खल सरस भये तजि वंक।
सधि करहु 'करनेश'तें यम लिखि भजे अंक ॥१६१॥

छंद नीसानी

यम लिखि वोलउजीरन पुरजा पहुँचाया।
खान बिरादर नोकरा सबको बुलवाया ॥

१५५. मस्ले—पकड़ी। मतो मति—अपने आप। सभ—सभा, फौज। घने—बहुत।
१५६ मालीत—दौलत। हरी—छीन ली। घाया—फैल गया, दौड़ा। धप्पे—व्याप्त हो गये, भर गये।
१५७ अभ्र=बादल। नग्र—नगर। गरद्द—गारत हो गये, बरबाद हो गये। धके धोचके—घबड़ा गये। छोना—लड़के, बच्चे। ऊना—अधूरा।
१५८. मृगाक्सीपी—हिरण्यकश्यप। वंगी—ताजा।
१६ रंघर—प्रजाके पक्के राजपूत। जिना—जिसने।
१६१ वसवान—बसने वाले।

सबके बीच मसूरखाँ पुरजा बचवाया ।
फिर कासीद जवानदा समंचार सुनाया ॥१६२॥
उस पखैं सादूलदे सब देश जराया ।
जारी सब जरातिको मघ छार मिलाया ॥
सेहाडवर घूमते घर अम्बर छाया ।
हुल्ला बोलि हकारिके किल्ला गिरदाया ॥१६३॥
'टूक' समेती भूमि गढ़ लूटनका दाया ।
करि समझासि नवाबका सबनै समझाया ॥
उस बरि यो दोसें नवाब पुरजा सुनि पाया ।
जहर भरे जिह्माग जिम चन रोपण छाया ॥१६४॥
रोप मुसल्ले आनि उर हुल्ले सिर लग्गो ।
उस बिरियों सुम्मान'वा 'हनुमत' उमग्गो ॥
सिवरा'के हनुमत' भी बांई भुज लग्गो ।
केसर सन्ने कापरे कर तेग उनग्गो ॥१६५॥
पानिप तासे भेरि नद सीरा रस वग्गो ।
केते सिंधू राग सुनि कातर गन भग्गो ।
तोपन दिध्य धवाजतें धरमी धग धग्गो ।
कोल कमठ्ठ जार परि शिर भूनि पनग्गो ॥१६६॥

---

१६२. मै=को । पुरजा=पत्र ।
१६३. दे=के । छार मिलाया=मिट्टीमें मिलाया, बरबाद किया । गिरदाया=घेर लिया ।
१६४ समेती=सहित । दाया=हक । जिह्माग=टेढ़ा चलने वाला सर्प ।
१६५ हुल्ले सिर लग्गो=हमला कर दिया । सन्ने=सने हुए, रंगे हुए । कापरे=कपड़े ।
१६६ धग धग्गो=कंपित हो गई ।

कारतूस घन युट्ठ कर सुम्मा लग थग्ग।
एक पलीती कालिका दट्ठ भोरनि दग्गे ॥
रिंजक प्याला सोरही झाला अगमग्गे।
यारो परसै कालवी ज्वालानल जग्गे ॥१६७॥

### छन्द मोतीदाम

मिलक्किय दीन दहूजुय पूर, हलक्किय बैठि बिमाननि हूर।
किलक्किय जुग्गनि शब्द कराल सलक्किय भूमि किते रुहिराल ॥१६८॥

तुपक्कनि तोप जमूर जुजाल परघ्घन सूल गदा भिंदिपाल।
गुपत्तिय खज्जर धूप कटार करत्तिय चक्क चलै चुकमार ॥१६९॥

फरी पिसतोल गुसेल कुठार, चके नन हृत्य चके मुख मार।
घुरै कहूं सीस बिहीन कबंध परै कहु काल कला कृत फंध ॥१७०॥

किते बिन पाय परे तरफात किते कढि प्रान पयाननि जात।
किते कर पांय परे मनमेल रचे मनु भूमि प्रपंचिय भेल ॥१७१॥

१६७ घन—ज्यादा। युट्ठ कर—युक्त कर, लगा कर, ठास कर। सुम्मा—तोपको साफ करनेका डंडा, जिसके सिरे पर एक गुच्छा लगा हुआ होता है। लग थग्गे—कंपित हो गए। पलीती—बत्ती। रिंजक—तोपके प्यालेमें रखी जानी वाली बारूद। प्याला—तोपका काम। झाला—ज्वाला।

१६८ मिलक्किय—मिले। दीन दहूं—दोनों धर्म वाले, हिन्दू, मुसलमान। सलक्किय—बहे। रुहिराल—खूनके नाले।

१६९. जमूर—छोटी तोपें। जुजाल—बड़ी बन्दूक। परघ्घन—भागल। सूल—त्रिशूल। भिंदिपाल—गोफन, गोफणा, एक अस्त्र विशेष। धूप—तलवार, खांडा। करत्तिय—कतरनी। चुक—गदा।

१७० फरी—शस्त्र विशेष। गुसेल—एक प्रकारका अस्त्र मूल प्रतिमें "गुसाल" पाठ है। घुरै—घुरै, भिड़े।

१७१ तरफात—तरफड़ाना, तड़फड़ाना।

लई पद चंपि अगूठनि भूमि सरव्वसु वव्व लई मनो सूमि ।
सरे हनुमत्त युद्ध तिहें ठौर लये मनु हिंदव सिंधु हिलोर ॥१७२॥
लये तहँ मीर मसूरहि मारि हने मनु सिंध तनै त्रिपुरारि ।
पर्‌या रन खेत मसूर मलेच्छ मचक्किय सेन किलमनि पच्छ ॥१७३॥

### दोहा

वज्जहि पूरन जाम प्रति मनहु धरी घरियार ।
यह प्रकार दुहुँ मोरते बज्जे सार अपार ॥१७४॥
खान पान सुध बीसरी धरी न उरमें धीर ।
मरन मसूर मलेच्छको समर दवलतउजीर ॥१७५॥

### छन्द मोतीदाम

करे तहि दोलतवीर बिलाप भयो सुरभंग महिक्ख प्रलाप ।
लख्यो तन तेगनतें चकचूर पुकारत मेक मसूर मसूर ॥१७६॥
बढ्यो उर सोक असाधि प्रलाप तच्यो वडवानलकी मनु ताप ।
पर्‌यो भुव प्रान दुखी मुख फैन तलफ्फत व्याधि हन्यो मनु मैन ॥१७७॥
यते बहु वीर्य बिरादर आय दयो उर धीर किते समुझाय ।
सुनी रजपूतनकी कुल रीत परी हमको यह सच्च प्रतीत ॥१७८॥
मरैं तिनके घर मंगल होय, करें नृप मृत्यु बिलाप न कोय ।
करो तन सोम दवल्लतउजीर, करा ग्रह पांव धरो उर धीर ॥१७९॥

---

१७२ चपि = दाबना । दव्व लई = दावकी अधिकारसे कर ली । सूमि = घोड़ोंके सुरोंस ।
१७३ तनै = तनय, पुत्र । मचक्किय = सरकी हिली, हटी ।
१७६ महिक्ख प्रलाप = भैंसेकी तरह चिल्लाया ।
१७७ तच्यो = तपा हुआ । मैन = हारया ।
१७८. बिरादर = भाई ।

### छंद निसानी

मरा मीर मसूरकों युध धारा तब्बी ।
ज्यों घ्रत धारा आगिमें हिय पावक हुब्बी ॥
जानिक तले तेलमें बूंदें परि अब्बी ।
जानि बिरूतें सेरदी पग सांकल दब्बी ॥१८०॥

कायमखा रूपतानसे करि वातें चब्बी ।
सेख इनायत खानके मुज पलटण दब्बी ॥
टेरि कुतबीखानसे खुद कहा मुरब्बी ।
हल्ले पूठे ना फिरें फन उसकी फब्बी ॥१८१॥

के तुम किल्ले छोरियो के मरियो सब्बी ।
देखो नब्बी क्या करें कर नास तसब्बी ॥
उस बिर यो वज्जीरवौलकू कह कुतब्बी ।
जानिक मुर्गे लेनको हिरनाख्य मुरब्बी ॥१८२॥

### दोहा

रहो नवाब निसक उर सोक न करहु सयान ।
मारा मीर मसूर तहु सरूयो कुतब्बी खान ॥१८३॥
प्रलय सिंधु सम खिजि असुर गवने तोपन दग्गि ।
मही काल वासर समय यहि विधि बले उमग्गि ॥१८४॥
स्याम बसन सायुध सिली मिली भयानक भेस ।
मनहु हलाहलकी सरित पुर मधि कियहु प्रवेश ॥१८५॥

---

१८० तब्बी = तप । हुब्बी = चढी, । अब्बी = आब पानी । बिरूते = कोपित ।
१८१ चब्बी = टरी, चिढानेको । दब्बी = संभवतः अधिकारमें दी । पूठे = पीछे ।
फब्बी = शोभा लागी । मुरब्बी = मालिक स्वामी ।
१८४ मही काल वासर = प्रलयका दिन ।

छप्पय

सेन समुख तिहू समय आनि 'हाजरियो जुट्टे ।
हुय कोलाहल शब्द किलम हलवान कुट्टे ॥
खजर सेल कटार तेग सुरकायन तच्छे ।
स्याम काज सिर दयो पाव धर दिये न पिच्छे ॥
सिर माल काज सकर लयो सिर विहीन धर फिर लर्‌यो ।
वरि रंभ गयो सुरलोक मग एम दरोगो हाजर्‌यो ॥१८६॥

दोहा

सुनत वत्त रनजीत मम आगम असुर समाज ।
मनहुं जुत्थ मातग पर लखि गमन्यो मृगराज ॥१८७॥
उठे कुतब्बीखान अरु यत रणजीत सजोर ।
तदन पत्थ जयद्रथ लौं पर्‌यो दहुनि पर जोर ॥१८८॥

छंद भुजंगी

रणो' खांकुतब्बी तणें सीस चल्यो ।
मनो मत्त मातग खूनी मचल्यो ॥
खिज्यो खांकुतब्बी मनूं सिंघू कोप्यो ।
किधों पत्थके रत्थपे द्रोण कोप्यो ॥१८९॥
जरासिंध लौं जगमें जोर पायो ।
पनग्गी मनू पाँय पुच्छी दबायो ॥
दहूकी अनी मोसरों मुह चढ़ी ।
दहूके करों ज्वालसी धूप कढ़ी ॥१९०॥

---

१८६. जुट्टे = जुटे, मारे । तच्छे = छील दिये । स्याम = स्वामी ।
१९० अनी = फौज । मोसरों — मूँछें, होठोंके पास ।

दुहूँके जुरे छोहते नैन छक्के ।
खरी लाट लग्गी मनू लोह पक्के ॥
दहूँ मेरसों भूमिपै मंडि पाँव ।
वहू बीर बक्के करं दाव घाव ॥१६१॥
न्हू प्रान वाजी रची मोह छडु ।
दुहूँ जै पराजै मुर्यो भार मड्डे ॥
दहूँ जेम जुट्टे मधु कीट दानू ।
मनी हेत श्रीकृस्न आमूत मानू ॥१६२॥
किये मेच्छ वोह किते पूर घायं ।
भयो भीम कैलास पत्ती सहाय ॥
वही मक रनाल्लय हत्थ रुक ।
तुपक्क फरी मुट्ठि मर्च्छ बिटूक ॥१६३॥
पर्यो साकुतम्मी सबै सेन भग्गी ।
लगे लर हिन्दू लिये तेग नग्गी ॥
भई जीत हिन्दूनकी मेच्छ हारे ।
किले मध्धितें कूट पीछे निकारे ॥१६४॥

दोहा

एक सहस अरु एक सत एकावस जुम जुद्दि ।
"रैनालय" कट्टे रवद किल्ले बाहिर कुट्टि ॥१६५॥
किल्ले भिरि भग्गो किसम ज नहि जुट्टन जोग ।
मरे डरे घायल परे भये प्रजीरन रोग ॥१६६॥

---

१६१ छोह = क्रोध । मेर = मेरु पर्वत ।
१६२ आमूत = आमवम्व । वोह = वार । घायं = घाव ।
१६३ मर्क = तरवार । मेक = एक । रनालयं = रणजीतसिंहका स्थान लावाकी युद्ध भूमि ।
वही = चली । बिटूर्क = दो टुकड़े हो गये ।
१६४ रवद = म्लेच्छ, मुसलमान ।

अहुटे दवलउजीर पैंह जियत रहं जे आय।
अपनी अपनी बुद्धि बल, कहत सकल समुझाय ॥१६७॥

## वचनिका

नवाबके सामने आया, हल्लेका जिकर चलाया। किस तौरसे आजका दग्गा कोन गिरा कोन भग्गा। उस वखत बोले कालू मीर, फुरतके फरिस्ता अकलके उजीर। इस किल्लेमें सुजानसिंघ ठाकर, जिसके 'हाजर्या' चाकर। 'हाजर्या'ने आपा दिखलाया गल्लेके साथ बाहरको आया। 'हाजर्या'ने जान झोका आफताबने विमान रोका। निमककी सरोसीप सिर दिया हूरके विमान बैठि आसमानको गया। आजके हल्लेमें नवाबकी दुहाई, सीनासे सीना मिला कर तरवार चलाई। सब जवान वहां गया था, किल्ला लेनामें कसूर ना रहा था। उस सुन्नें रनि मूठ वालेने जुल्म किया तमाम मुसलमानोंको घींचि किल्लेकी रनीमें दिया। क्या अच्छी तरवार चलाई जिस वखत बोले खान दुर्जन काल-पीके सैयद ईलाहीबकसके फरजन। हिन्दु जाति कामके काल बाडबके

---

१६७　अहुटे = वापस लौटे।
वचनिकामें-जिकर = चर्चा, प्रसंग। गल्लेके साथ = हल्लेके साथ। जान झोका = तन-मनसे मेहनत करना तन मनसे लगा। सरोसीपै = एवजमें। घींचि = खींच कर। रनी = खाई। विद्युत = छायी। कपाट्या = दरवाजेके बीचमें लगा हुआ पत्थर जो किवाड़ोंको रोकता है। (यहां कपाट्याकी तरहका अर्थ है अग्नि) बरस = आकाश। झपट = फेंट, झोका चपेट।

वचनिका = यह भी दवावैतकी तरह होती है। अर्थात् यह भी गद्यका एक रूप है। इसका भी 'रघुनाथ रूपक" में इस प्रकार लक्षण लिखा है—

वचनिका दो प्रकारकी होती है पद्यबंध और गद्यबंध। पद्यबंधके दो भेद हैं। प्रथम भेदमें तो केवल 'वारता' ही रखना चाहिए, दूसरे भेदमें वारतामें मोहरा (अनुप्रास) रखना चाहिए। और दो ही भेद गद्यबंध वचनिकाके होते हैं। प्रथम

स्वाम । सेरोंके मुंड, घलके मिसुंड । तूरोंके तार विभके उदार । काशीके चक्र, बलाल्याकी टक्कर । उरसकी तेग मारूका वेग । पोरसका भीम उदरकी सीम । बीरोंके वीर सागरके धीर । नाहरके थाहर लोहकी झाट, जगूके आलम जमकी सी झाट । लावाके किल्लेमें ऐसे रजपूत सारके सगर बलके मजबूत ।

दोहा

यम बुल्ले इकसारखां सुनि नवाब यह बात ।
सकल बिरादर बीगरे भव प्रानन पर घात ॥१९८॥
कर कफनी कोपीन कर कर करवा मर भाव ।
अब मक्का जबो उचित नवणों नहीं नवाब ॥१९९॥
प्रायुषखान भजीमखां यम भक्खी दहुं भाय ।
त श्रुति संमर सवनके लगी करेजनि लाय ॥२००॥
कही मीर मारततां सुनहु दवलउजीर ।
क मरिहैं कै मारिहैं नहि फिर होंय फकीर ॥२०१॥

छंद भुजंगी

चढ्यो कोपि उज्जीरवोला नवाब ।
लिये जुद्धके सग अगी सबाब ॥

---

मेदमें तो आठ मात्राका पद होता है और दूसरे मेदमें मात्राका पद होता है । उक्त मधमिका पद्मय मधमिकाका दूसरा मेद है । इन सब बातोंको जाननेके लिए 'रघुनाथ रूपक' जो एक उत्तम ग्रंथ है देखना चाहिए ।

१९९. करवा = शिकोरा, मटकाना मिट्टीका छोटा गिलासनुमा पात्र । नवणो = नम्र होना ।
२०० भय = अग्नि । श्रुति = कान । संमर = सुन कर ।
२०१. सबाब = असबाब सामान ।

करी मग्र तोप किये नद् थई ।
सदा मादिक पाम मत्ते वुरई ॥२०२॥
किये भूत कप्पाटकी फेट कज्ज ।
परि त्रास सोई भई प्रान तज्ज ॥
सिले टोप सन्नाहके बान सज्जे ।
भयो कोह् भेरी भयानक बज्जे ॥२०३॥
मते लागया नै बडे राग सिंधू ।
मिले साजि हल्ल महावीर हिन्दू ॥
तरकूनि से सस्त्र हत्थो उकढ्ढे ।
किधों कोटतें सावठे सेर कढ्ढे ॥२०४॥
दहू दीन मारानमें प्रान झोंके ।
लगे खेल विम्मानकों भान रोके ॥
मुनि बीर क्रमाहि ले सभू आयो ।
तजे लोक वृन्दारकू वेत छायो ॥२०५॥
घरी चार लौं सांवठी सोर दग्गी ।
तप्यो लोक तेगूनकी रीठ बग्गी ॥
भिरे बीर बके गर्जो घाव भडे ।
परे पाव हीन हर्य प्रान छंडे ॥२०६॥

---

२ ३. फेटकज्ज = टक्कर देनेके लिए । कप्पाट = किवाड़ । किये भूत = पागल किये । त्रास = डर ।

४ सांवठे = इकट्ठे । कढ्ढे = निकले, बाहर आये । मते सिंधु = इधर सिंधुरा (वीर रसकी राग में) 'धूहे' कहे जाने लगे ।

५ ५. मारान = युद्ध । वेत = मेंतकी तरह ।

६ ६ रीठ = युद्ध ।

किते अग हीने मुसल्ल कजाकी ।
लरै मुत्थ वत्ये रहे प्रान बाकी ॥
कित भूत वैताल भैंरु किलक्कै ।
किती जुग्गनी गिद्धनी योन चक्कै ॥२०७॥

धनी जावरेको अनी जोर गिस्यो ।
पनै घाय धारानके घान घस्यो ॥
उतै जावरे टूंक पत्ती मुसल्ले ।
यतै रूक हुल्यो करन्नेश भल्लै ॥२०८॥

## छन्द दुर्मिला

उतसें तुरकान यते हिन्दवान दहूं पुर बाहर जुद्ध किये ।
तिह ठोर रठोर 'भरज्जन' से 'रनजीत' उदग्गनि खग्ग लिये ॥
बहु राम रु स्याम' हनू' तनये हुरनाथ' 'कुमेर क पूत हुसे ।
बहु रेवतसिंह गुपाल सुजान' 'पनै' सुतनै किरवान झले ॥२०९॥

'बखतेश' सुजान'गोविन्दरु''पातिस 'गोबरधनरु' अवान'पती ।
करनेश'के पुत्र 'उदैकनवेत' दहू उमगे मृगराज मती ॥
उगली किरवान मियाननतें मुगली मद कट्टि परें बिथुरे ।
घर पेस पिनाकनि बाननकी अवली अनहद सबद् करे ॥२१०॥

अरिवृद्ध बिसब्द कराल किते करि कोप कुलाहल यब्द कढे ।
करनेश उजीरवल्लभकी दहुँ ओर लुहाई मनुष्य चढे ॥

---

२०८ ओर गिस्यो—बलसे भरा हुआ । घनै—अधिक,अनेक । घाय—प्रहारोंसे, वारोंसे । घान—समूहमें । घस्यो— सम्मिलित हुआ । रूक—तलवार ।

२१ मती—भाँति तरह । उगली—निकली । मद—गिरनेकी हल्की आवाज, जैसे पट, धप, धम वैसे ही मद है । बिथुरे—बिखर गए, फैल गई ।

बजि सार कुठारन वारनि लै, नर हैमर गैमर वेह फटे।
खिर बाढ़ परे खग धारनतें मनु धारनतें चिनगी उछटें ॥२११॥

कछवाह अकटक भूमि रमै तुरकान हने खग धारनतें।
मनु सम्र तन सिनि काटि पचास, तलातल भूमि कुदारनतें ॥
हिंदुवान विमान अपच्छरकी गलबाँह मनो दमनी घनकी।
तुरकान लिए परलोक परी गमनी मनु जुटिटी जुराफनकी ॥२१२॥

हूर मुंडनि हार बनाय हँसे विहसी सब जुग्गनि श्रोनछकी।
पल खाय अघाय पलच्चर नाचत भूत पिसाचनकी किलकी ॥
बजि भैरव डैरव जत्र मुनी धुनि गिद्धनि गुद्द अघाय उडी।
लखि आतुर सार प्रहारयतें किलमी गति सोक समुद्र बड़ी ॥२१३॥

ढरके मन कुंभ मजीठनके रनभूमि तलातल रक्त भई।
करनेश हनी खग धारनतें खल सेन चलहल भूमि भई ॥
कमनैत चिनोट पटै कुसती उछगी सब सिद्धि किलमनकी।
फिरि तोप न दग्गिय खग्ग न बग्गिय भग्गिय सेन किलममकी ॥२१४॥

~

२११ खिर=गिरना टूटना। बाढ़=धार, पाँणा। धारन=लुहारकी भट्टी। उछटें=उ[illegible]
सकी है। धारनि=प्रहारोंसे। अरिखत=शत्रुसे घायल हुए मनुष्य।

२१ तनै=तनय पुत्र। कुदारनतें=कुदालस। दमनी=दामनि बिजली। जुराफनकी=
जिराफोंकी जुराफ, अफ्रीकाका एक पशु विशेष जिसकी गरदन बहुत लम[illegible]
होती है।

१३. डैरव=डमरू।
गुद्द=गृद्ध। अघाय=तृप्त हो कर।

२१४ ढरके=पड़े हुए, गिरे हुए।

दोहा

यम जुट्टे हिन्दू असुर जुट्टे माल जसीर।
हुय लग्गो लग्गो लखन भग्गो दवल्उजार ॥२१५॥

छप्पय

जुध जीत्यो करनेश येम मुनि जत्र बजायो।
जुध जीत्यो करनेश ईश चुनि शीश प्रयायो ॥
जुध जीत्यो करनेश बीर बावन मम बक्के।
जुध जीत्यो करनेश श्रोन जुग्गनि सब छक्के ॥
पलचार हूर अप्छर सकल भूत प्रेत जगम जती।
नर नाग देव यम उच्चरत जुध जीत्यो पद्धरपती ॥२१६॥
जुध हारयो नब्बाव जुध पद्धरपति जीत्यो।
सर छिल्लर सुकि गयो येम आसुर दल बीत्यो ॥
तिमिर घोर तुरकान भान कूरम लखि भज्ज्यो।
कुंजरकुल संहारि मनहु मृगराज गरज्यो ॥
जुध जीति मेक 'महुकम' जदन 'फतयसिंह' घर आमरन।
भारथ' समान भारत्थ करि किलम हूंत जीत्यो 'करन' ॥२१७॥

दोहा

'दांतोपुर' दक्खिन दिसा 'सीकर' उत्तर कान।
'कूहर' पच्छिम जानिए पूर्व ऑणका भान ॥२१८॥

२१७. छिल्लर—छिछला, कम गहरा। बीत्यो—समाप्त हो गया। भारत्थ करि—युद्ध कर।

ताक मद्धि 'उदपुरो', बसत सुकविको ग्राम।
उन्नत परवत हरसको तहँ भैरवको धाम ॥२१६॥
कवि अन कवियो विध्य कुल, धारन चढी धाम।
'प्रभू भक्तके वंशमें यह मम नाम गुपाल ॥२२०॥
सूर वीर रजपूत कुल कवि चारन कुल जानि।
जो न वहत निज धर्म जुत दहु कुल गौरव हानि ॥२२१॥
ग्रादि धर्म छिति छत्र कुल पूरन पज प्रतीत।
दान करन मारन मरन, रजपूतों यह रीत ॥२२२॥
सँग रहनो सपति विपति सुख दुख सहनो सत्य।
कीरति कहनो दान जुध, कुल चारन यह कत्य ॥२२३॥
याते हम यह ग्रन्थमें परिश्रम कियो अपार।
सुजस कच्छ कुलको कियो अपनी मति अनुसार ॥२२४॥

इति श्री कूर्म यश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलह केलि बरणन कवि गोपालदान विरचित द्वितीय लावा जुद्ध समाप्त समाप्तोयं पंचम प्रसंग

इति ग्रन्थ समाप्त।

---

२२२. पैज=प्रतिज्ञा।